पाञ्चजन्य

नई दिल्ली वर्ष ५८, अंक २१ • आश्विन शुक्ल ११, २०६१ वि. (युगाब्द ५१०६) • २४ अक्तूबर, २००४ • रु. ७.०० अन्तरताना संस्करण www.panchjanya.com

दत्तोपंत ठेंगडी

१० नवम्बर, १९२०- १४ अक्तूबर, २००४

नमन !

हे राष्ट्र-ऋषि

पुणे में हुआ स्व. ठेंगडी का अंतिम संस्कार

अविश्रांत पथिक की अन्तिम यात्रा

■ पुणे से पाञ्चजन्य प्रतिनिधि

दत्तोपंत ठेंगडी के निधन का समाचार उनके लाखों शुभचिंतकों एवं स्नेहीजन के हृदयों पर मानो वज्रपात कर गया। देश के कोने-कोने से श्रमिक, किसान, बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी पुणे पहुंचने लगे। १५ अक्तूबर की प्रातः वे सब एक अविश्रांत कर्मयोगी के अंतिम दर्शन हेतु उमड़ पड़े थे। स्वर्गीय दत्तोपंत की पार्थिव देह को अंतिम दर्शन हेतु नवीन मराठी शाला के सभागार में रखा गया था।

दत्तोपंत प्रचारक थे, बालपन से ही ब्रह्मचर्य के अखण्ड साधक। उनका अपना कोई व्यक्तिगत परिवार नहीं था। पर यहां का वातावरण देखकर लगता था जैसे वे एक बहुत बड़े परिवार के मुखिया थे। उनके अनगिनत भाई-बहन थे, उन्हें पितातुल्य मानने वाले पुत्र भी थे और उनसे मार्गदर्शन की इच्छा रखने वाले हजारों कार्यकर्ता भी। वे सब एक-दूसरे को ढाढस बंधा रहे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री कुप्.सी. सुदर्शन तथा सरकार्यवाह श्री मोहनराव भागवत दिनभर वहां उपस्थित रहे। विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल, रा.स्व.संघ के सहसरकार्यवाह श्री मदनदास, भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हसुभाई दवे, स्वदेशी जागरण मंच के संयोजक श्री मुरलीधर राव व बाबासाहब तकवाले भी वहां उपस्थित थे। दिल्ली से पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी अंतिम संस्कार में सम्मलित होने पहुंचे। समाचार पाते ही अमदाबाद में कार्यक्रम के लिए आए पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ पुणे पहुंचे थे।

दत्तोपंत को नियति ने ऐसी शांत गति देकर जैसे उनकी मानवंदना ही की है।

दत्तोपंत ८४ के हो चले थे, फिर भी उनके निधन को आकस्मिक ही कहा जा रहा है। आखिर उनके जाने का कुछ तो कारण होना चाहिए था। इतनी आयु होने पर भी वे निरोगी व सक्रिय थे। ६० वर्ष के कठोर प्रचारक जीवन के बावजूद मधुमेह, रक्तचाप अथवा हृदय रोग जैसी कोई भी बीमारी उनको छू भी नहीं गई थी। हालांकि शरीर अब कुछ-कुछ थकने लगा था। पहले जितना और पहले जैसा प्रवास अब कष्टकारी होता था। पर उत्साह तो अब भी अदम्य था, चिन्तन अखण्ड था। उत्साह और प्रेरणा के वे कभी न खत्म होने वाले स्रोत थे। फिर भला उनके जाने की कल्पना कौन कर सकता था। पुणे में दत्तोपंत हमेशा श्री एस.एन. देशपांडे के घर पर ही ठहरते थे। अपने अंतिम समय में भी वे वहीं थे। श्री देशपांडे ने बताया, 'दत्तोपंत अंतिम श्वास तक पूर्ण कार्यक्षम थे। बुद्धि, विवेक तथा वाणी पर उनका पूर्ण नियंत्रण था। स्मरण शक्ति भी उत्तम थी। हाल ही में उन्होंने डा. अम्बेडकर की जीवनी पर एक विस्तृत ग्रंथ की रचना की थी, इस ग्रंथ का अभी विमोचन होना है। कुछ दिन पूर्व डा. मुरली मनोहर जोशी एवं प्रसिद्ध लेखक व चिंतक श्री च.प. भिशीकर उनसे भेंट के लिए आए थे। सामाजिक समरसता मंच के कार्यकर्ताओं को उन्होंने १५ अक्तूबर की प्रातः चर्चा के लिए बुलाया था। इतने कार्यमग्न दत्तोपंत अचानक चल देंगे, किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

१४ अक्तूबर को अपनी नियमित दिनचर्या के अनुसार दत्तोपंत स्नान के लिए गए थे। स्नान कर जब वे अंग पोंछने लगे तो अचानक नीचे बैठ गए, जैसे ध्यान लगा रहे हों। उन्हें न कोई चक्कर आया और न ही वे गिरे। बस... सदा के लिए ध्यानस्थ हो गए। चिकित्सालय ले जाया गया, परंतु... वे सबको छोड़कर चल दिए थे। स्थानीय दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सा केन्द्र के चिकित्सक डा. पराग मुले, जो उन्हें अपना दादा मानते हैं, का कहना था कि जीवनभर समाज के लिए कष्ट उठाने वाले दत्तोपंत को नियति ने ऐसी शांत गति देकर जैसे उनकी मानवंदना ही की है।

नवीन मराठी शाला में दिनभर स्वर्गीय ठेंगडी की पार्थिव देह पर पुष्पांजलि अर्पित करने का क्रम चलता रहा। पुणेवासियों ने मजदूर नेता के रूप में ख्यातनाम स्वर्गीय ठेंगडी को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके पश्चात शाम चार बजे एक पुष्पसज्जित वाहन में स्वर्गीय ठेंगडी की अंतिम यात्रा प्रारंभ हुई। पुणे के मुख्य मार्गों पर हजारों-हजार लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की। पुणे के वैकुण्ठ धाम में स्वर्गीय ठेंगडी का अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित शोक सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री कुप्.सी. सुदर्शन, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल ने स्वर्गीय ठेंगडी को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वर्गीय ठेंगडी के भतीजे श्री सतीश ठेंगडी ने उन्हें मुखाग्नि दी। ■

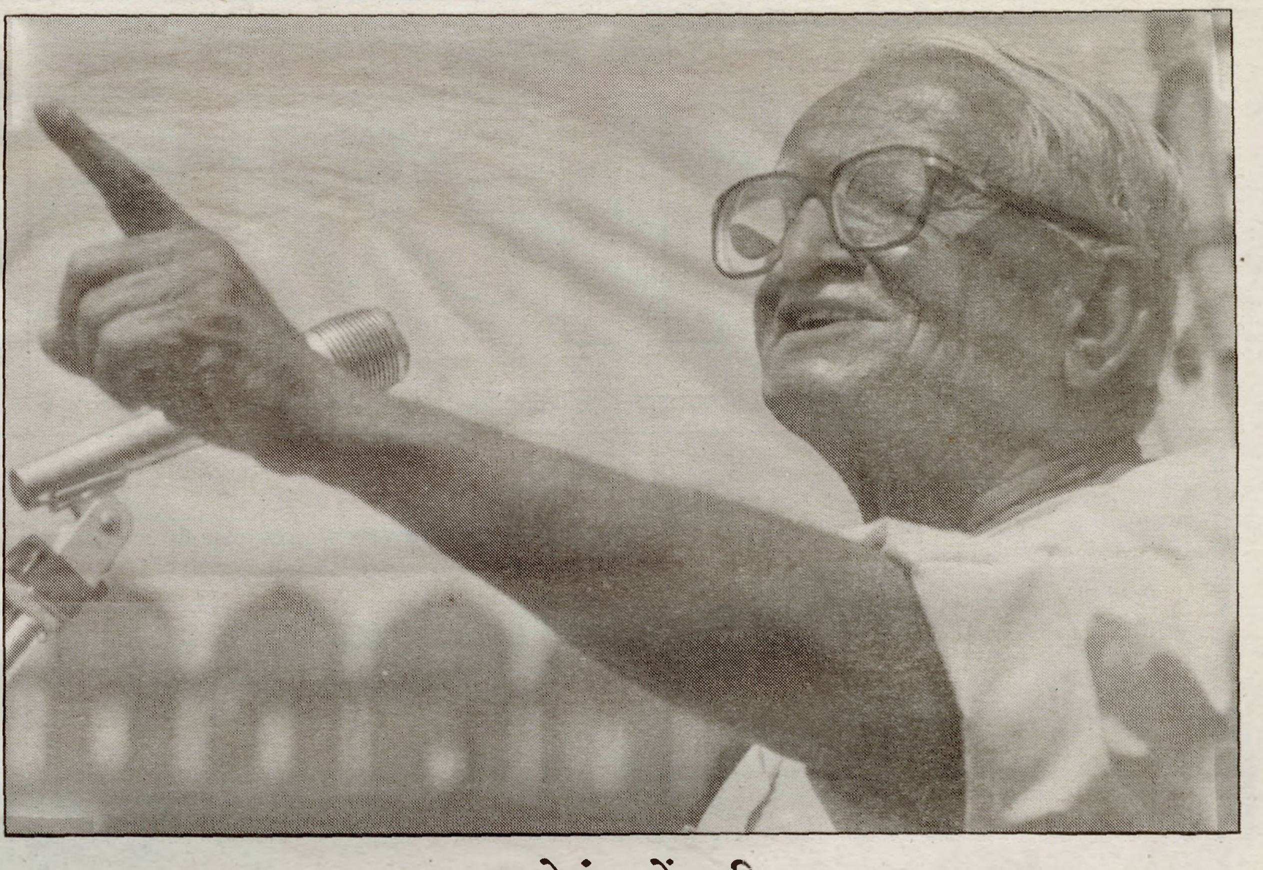

दत्तोपंत ठेंगडी

पथ चुना, और बढ़ते गए...

सन् २००३ में केन्द्र सरकार ने दत्तोपंत जी को पद्म भूषण सम्मान देने की घोषणा की तो उन्होंने बड़ी विनम्रता से यह कहते हुए सम्मान लेने से इनकार कर दिया कि 'जब तक पूज्य डाक्टर हेडगेवार और पूज्य श्रीगुरुजी को 'भारत रत्न' नहीं दिया जाता, मेरे लिए यह सम्मान स्वीकार करना अनुचित होगा।' ये और ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे अपने दत्तात्रेय बापूराव ठेंगडी उपाख्य दत्तोपंत ठेंगडी के जीवन में। १० नवम्बर, १९२० को महाराष्ट्र के वर्धा जिले के आर्वी गांव में जन्मे श्री ठेंगडी सन् १९४२ में रा.स्व.संघ के प्रचारक बने और प्रचारक के रूप में ही अंतिम श्वास ली। ६२ वर्ष तक अनथक समाज की सेवा करते रहे। हालांकि उनके सार्वजनिक जीवन की यात्रा मात्र १५ साल की आयु में (१९३५ में) कांग्रेस समिति, आर्वी की वानर सेना के अध्यक्ष के रूप में हो गई थी। विलक्षण प्रतिभा के धनी ठेंगडी जी की मातृभाषा मराठी थी, पर वे हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, बंगला, मलयालम और अंग्रेजी भाषा पर भी समान अधिकार रखते थे। सादगी व सरलता की प्रतिमूर्ति, राष्ट्र समर्पित तपस्वी जीवन और कार्य की सफलता में अडिग विश्वास रखने वाले दत्तोपंत एक कुशल संगठक थे। उन्होंने समाज क्षेत्र में अनेक संगठनों की नींव रखी, उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक संगठनों का जन्म हुआ। वामपंथी मजदूर संगठनों की स्थापना के वर्षों बाद गठित भारतीय मजदूर संघ यदि भारत का पहले क्रमांक का मजदूर संगठन बन पाया तो वह ठेंगडी जी के ही कारण। रा.स्व.संघ के प्रचारक के नाते केरल में कार्य प्रारंभ करने के पश्चात उन्होंने असम एवं बंगाल में भी अपने कार्यों की छाप छोड़ी। राजनीतिक क्षेत्र में भी उन्होंने एक आदर्श स्थापित किया। १९५१-५३ में भारतीय जनसंघ (म.प्र.) और १९५६-५७ में दक्षिणांचल के संगठन मंत्री के रूप में उन्होंने जनसंघ को विस्तार देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। १९६४ से '७६ तक (१२ वर्ष) श्री ठेंगडी राज्यसभा के सदस्य रहे। अपनी प्रतिभा से उन्होंने न केवल देशवासियों को प्रभावित किया बल्कि अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन के लोग भी उनके मौलिक विचारों के कायल थे। उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की, अमरीका तथा चीन के मजदूर संगठनों ने उन्हें आमंत्रित किया। व्यस्त दिनचर्या और निरन्तर प्रवास के बावजूद उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी व मराठी में ३० से अधिक पुस्तकें लिखीं। अनेक पुस्तकों की प्रस्तावना भी लिखी। उनकी सभी पुस्तकें गहन चिंतन एवं मंथन का प्रतिफल हैं। ये समाज को दिशा देने वाली और कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने वाली पुस्तकें हैं। ठेंगडी जी नायक थे- मजदूरों के, किसानों के, राष्ट्र के हितचिंतकों के। एक ओर उन्होंने प्रचार से दूर रहकर संगठन को मजबूत किया तो आवश्यकता पड़ने पर सड़क पर आकर आंदोलनों का नेतृत्व भी। इस पर भी उनके सहज, सरल व्यवहार का ही अधिक स्मरण किया जाएगा।

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं...

संस्थापक- *१. भारतीय मजदूर संघ (२३ जुलाई, १९५५) २. भारतीय किसान संघ (४ मार्च, १९७९) ३. सामाजिक समरसता मंच (१४ अप्रैल, १९८३) ४. सर्वपंथ समादर मंच ५. स्वदेशी जागरण मंच (२२ नवम्बर, १९९१)*

संस्थापक सदस्य- *१.अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् २. सहकार भारती*

उद्घाटनकर्ता- *१. अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद् २. भारतीय विचार केन्द्रम ३. अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत*

वे संगठन, जिनसे ठेंगडी जी जुड़े रहे थे-

श्रम क्षेत्र में- *संगठन सचिव, आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इंटक, म.प्र. राज्य, १९५०-५१) २. अध्यक्ष, केन्द्रीय श्रम संगठन समिति ३. संयोजक, राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन ४. श्रम संगठनों की राष्ट्रीय अभियान समिति का गठन*

राजनीतिक क्षेत्र में- *१. संगठन मंत्री-भारतीय जनसंघ- (मध्य प्रदेश १९५१-५३) २. संगठन मंत्री- दक्षिणाञ्चल (१९५६-५७) सचिव-लोक संघर्ष समिति, दिसम्बर-१९७५ से मार्च १९७७ (आपातकाल के समय) ४. राज्यसभा सदस्य-१९६४ से १९७६*

अन्य गतिविधियां- *१. अध्यक्ष, भाषा प्रचार समिति-केरल, २. उपाध्यक्ष-श्री मां जन्मशताब्दी समिति (पाण्डिचेरी), ३. अध्यक्ष-केरल राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन-कोझीकोड (अगस्त-१९४२) ४. उपाध्यक्ष-अखिल भारतीय विमुक्त जाति सेवक संघ*

सदस्य- *(१) भारतीय बुद्ध महासभा (२) भारतीय शिक्षण मण्डल (३) वनवासी कल्याण परिषद् (४) भारतीय साहित्य परिषद् (५) कर्मवीर हरिदास जी स्मारक समिति (६) प्रज्ञा भारती (७) डा. हेडगेवार जन्मशताब्दी समारोह समिति (८) स्वास्थ्य भारती (९) होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर (९) रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी, मुम्बई (१०) भारतीय कुष्ठ निवारक सेवक संघ (११) महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान (१२) भारतीय घुमन्तु जन सेवक संघ (१३) डा. बाबा साहब अम्बेडकर शताब्दी समारोह समिति (१४) पानीपत युद्धवीर स्मृति समिति*

संगठन कार्य हेतु विदेश प्रवास-अफ्रीकी देश- *इथोपिया, केन्या, यूगाण्डा, तंजानिया, मारिशस, दक्षिण अफ्रीका* ● ***यूरोपीय देश-*** *सोवियत संघ, हंगरी, यूगोस्लाविया, फ्रांस, इटली, इंग्लैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम तथा लक्जमबर्ग* ● ***उत्तरी अमरीकी देश-*** *कनाडा, संयुक्त राज्य अमरीका, मैक्सिको* ● ***एशियाई देश-*** *चीन, ब्रह्मदेश (म्यांमार), इस्रायल, इण्डोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, बंगलादेश तथा नेपाल*

पुस्तकें (हिन्दी)- *१. एकात्म मानव दर्शन २. विचार सूत्र ३. कम्युनिज्म-अपनी ही कसौटी पर ४. पुरानी नींव- नया निर्माण ५. प्रचार तंत्र ६. कम्प्यूटरीकरण ७. पश्चिमीकरण के बिना आधुनिकीकरण ८. हमारी विशेषताएं ९. राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार १०. डा. बाबा साहब अम्बेडकर ११. ध्येय पथ पर किसान १२. सप्त कर्म १३. लक्ष्य और कार्य १४. संकेत रेखा १५. अपनी राष्ट्रीयता १६. दलित समस्या पर एक विचार १७. शिक्षा में भारतीयता १८. डा. बाबा साहब अम्बेडकर-एक प्रेरक व्यक्तित्व १९. जाग्रत किसान २०. प्रस्तावना २१. हमारा अधिष्ठान २२. लोकतंत्र २३. चिरन्तन राष्ट्रजीवन २४. श्रमिक क्षेत्र के उपेक्षित पहलू २५. राष्ट्रीय पुरुष छत्रपति शिवाजी।*

पुस्तकें (अंग्रेजी)- *१. नेशनलाइजेशन आर गवर्नमेन्टलाइजेशन २. फोकस आन सोशियो-इकोनोमिक प्रोब्लम्स ३. पर्सपेक्टिव ४. द ग्रेट सेन्टीनल ५. हिज लीगेसी आवर मिशन ६.कम्प्युटराइजेशन*

शेष पृष्ठ ३ पर

निश्चयाचा महामेरु

■ तरुण विजय

ठेंगडी जी भी चल दिए। इतना सब किया पर जब गए तो आहट तक न होने दी। उनको देखकर कई बार लगता था सारी दुनिया को परखने की ताकत है उन आंखों में। और उनकी बांहों में दुनिया को समेटने की शक्ति। जहां कुछ भी नहीं था वहां उन्होंने अनेक हिमालय खड़े कर दिए। ऐसा अप्रतिम दृढ़ निश्चयी मन था उनका। खुरदुरे पांव में वही मोटी सख्त चमड़े से बनी चप्पल, धोती कुर्त्ता और कंधे पर अंगोछा। जो भी साथ हुआ, उसके कंधे पर हाथ रखकर वे मीलों-मील चले चलते। कुछ साल पहले की बात है, कुछ साल यानी काफी साल पहले। पाञ्चजन्य में आए थे। उनका स्वभाव था सीधे सम्पादक के कमरे में नहीं आते थे। सम्पादकीय विभाग में जाते। सबको नमस्कार करते तो हमारे साथी हड़बड़ाकर खड़े हो जाते, 'अरे ठेंगडी जी!!' कभी उन्होंने किसी को अपने पांव छूने की अनुमति नहीं दी। जो उनसे जितना छोटा होता उतना ही उससे मित्रवत व्यवहार करते। सबसे परिचय हुआ, गपशप हुई। कौन क्या करता है, क्या लिखता है। और हमेशा की तरह अपनी बात किसी न किसी रोचक कहानी या दृष्टांत से खत्म करते। प्लेट में डालकर चाय पीना उन्हें बहुत भाता। सबके नाम याद रखना तो उनका स्वभाव था। छोटी-छोटी बात में भी सब कुछ ठीक-ठाक हो, सही हो, इसका बेहद ध्यान रखते। अपनी पुस्तकों के प्रति वे निर्मम परख के साथ काम करते थे। रामदास जी पाण्डे हर पुस्तक के हर पृष्ठ का इतिहास बता सकते हैं। उनसे अनेक बार साक्षात्कार लेने का भी मौका मिला। पर उनकी पहली शर्त होती थी- राजनीतिक बातें नहीं और जितना मैं कहूंगा उसमें कुछ जोड़ना, घटाना नहीं। पैदल चलने का बहुत शौक। घूमते-घूमते ही उन्होंने बहुत-सी बातें तय कर डालीं। मुझे याद है जब एक बार झण्डेवाला आए तो कंधे पर हाथ रखकर सिर्फ यही कहा- चलो चलते हैं। मुझे लगा यहीं आसपास तक जा रहे होंगे, पर जब एक-दो-तीन-चार सड़कें पार हो गईं तो मैंने हैरान होकर पूछा 'क्या साउथ ब्लाक तक पैदल ही जाएंगे?' तो हंसकर बोले, 'क्यों थक जाओगे? अरे कभी हमारे जैसे बूढ़े आदमी का भी साथ दिया करो।' और हम बातें करते-करते साउथ ब्लाक कब पहुंच गए, सच में पता ही नहीं चला।

राजनीति और उसके आडंबरों से उन्हें बेहद चिढ़ थी। वे प्रायः दूसरे दर्जे में ही सफर करना पसंद करते थे। उन्होंने एक बार किस्सा सुनाया। उन्हें नागपुर से दिल्ली आना था और प्लेटफार्म पर एक परिचित राजनीतिक से भेंट हो गई। ज्येष्ठ नेता। उनसे नमस्ते हुई तो पता चला कि वे भी दिल्ली जा रहे हैं। एक ही विचारधारा, एक ही पथ के पथिक, केवल क्षेत्र ही तो अलग था। उन नेता महाशय ने पूछा- आपका कौन-सा डिब्बा है तो ठेंगडी जी ने बताया- एस १ या एस २। वे नेता चौंक गए, 'अरे आप अब भी स्लीपर क्लास में सफर करते हैं? इतनी भीड़ में तरह-तरह के लोग मिलते हैं। कम से कम सफर तो आराम से करना चाहिए। मैं तो कभी फर्स्ट एसी से कम में सफर नहीं करता। वरना इतने लोग मिलते हैं कि बैठना मुश्किल हो जाता है।' ठेंगडी जी कुछ नहीं बोले, सिर्फ हंसे। उन्हें नमस्कार किया और अपने डिब्बे की ओर चल दिए। बाद में ठेंगडी जी ने यह किस्सा सुनाते हुए कहा- राजनीतिक ऐसा व्यक्ति होता है। उसे लोगों के सिर्फ वोट चाहिए होते हैं, लोग नहीं। बाद में वह लोगों के बीच में बैठने से भी तब तक कतराता है जब तक ऐसा करने में कोई मतलब न सधता हो।

जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र, संगठन शास्त्र का ऐसा कोई पहलू और राज्य तथा अर्थशास्त्र का ऐसा कोई बिन्दु नहीं था जो उनकी पैनी चिंतन धारा से अछूता रहा। अद्भुत स्मरण शक्ति और लगातार पढ़ी हुई पुस्तकों के पृष्ठ दर पृष्ठ उद्धत किए जाने की महामेधा उन्होंने पाई थी। जब वे देश और आर्थिक व्यवस्था के बारे में बोलना शुरू करते तो लोग अवाक् होकर उनको सुनते चले जाते। इतना अधिक प्रवास, सुबह से शाम तक निरंतर मिलने-जुलने वालों का तांता, इसके बावजूद वे पढ़ने का समय कब निकालते थे, कभी किसी को पता नहीं चलने दिया। इसके साथ ही सबसे बड़ी बात जो उनसे मिलने वालों को महसूस होती थी, वह यह थी कि उन्होंने कभी भी निस्सीम विद्वता का लेष मात्र भी बोझ दूसरे पर नहीं डाला। साधारण मजदूर, संगठन के काम में लगे कार्यकर्ता, बढ़ई, बिजली वाले या हम जैसे अपठित भी उनके साथ बैठते तो वे उतनी ही गंभीरता से अपनी बात सुनाते जितनी गंभीरता से वे किसी बड़े बुद्धिजीवी या लेखक के सामने। उनके पास कोई अच्छी पुस्तक आती तो बताते, इसे जरूर पढ़ना। पर उनसे मिलकर छोटे से छोटा व्यक्ति भी अपना कद बढ़ा हुआ महसूस करके निकलता था। उन्होंने देश की स्थिति, खासकर संगठन के विभिन्न पहलुओं को देखकर प्रसन्नतापूर्वक या संतोष के साथ देह छोड़ी होगी, ऐसा लगता नहीं। उनके स्वभाव में था कि गलत बात सहन नहीं करनी इसलिए स्वदेशी, स्वभाषा और स्वधर्म के विषय में वे चुप न रह सके। वृद्धावस्था और अशक्तता के बावजूद सड़क पर उतरकर उन्होंने स्वदेशी आंदोलन को नई राह दी। वे सब कुछ छोड़ सकते थे, ९९ के सामने एक हिमालय बनकर अड़ सकते थे। लेकिन विचार छोड़ना स्वीकार नहीं था। उन्होंने समस्त संघ विचार परिवार को बौद्धिक अधिष्ठान दिया। और यह बताया कि नितांत प्रसिद्धि पराङ्मुख होकर भी प्रथम पंक्ति और प्रथम श्रेणी का संचालन किया जा सकता है। उनकी जीवन कथा, उनके प्रसंग और उपलब्धियां आश्चर्यजनक हैं। पूरा वृत्त पढ़ें तो विश्वास नहीं होता कि अभी कुछ ही दिन पहले यह निश्चय का महामेरु हम सबके साथ था। बहुत से लोग उनके बारे में बहुत-सी बातें बहुत लम्बे समय तक कहेंगे और लिखेंगे। उस सबके बाद भी बहुत कुछ अनकहा शेष रह जाएगा।■

स्व. दत्तोपंत ठेंगडी के प्रति श्रद्धांजलियां पृष्ठ ४-५ पर तथा स्मृति शेष एवं अंतिम यात्रा के चित्र पृष्ठ १०-११ पर

श्रद्धाञ्जलि

न्यायमूर्ति तुलजापुरकर नहीं रहे

गत १ अक्तूबर को भारतीय न्याय जगत के एक स्वर्णिम हस्ताक्षर न्यायमूर्ति वी.डी.तुलजापुरकर का मुम्बई अस्पताल में निधन हो गया। वे ८३ वर्ष के थे। उनका स्थानीय विद्युत शवदाह गृह में अंतिम संस्कार हुआ। श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के समय सार्वजनिक सभा आयोजन पर पाबंदी के खिलाफ न्यायमूर्ति तुलजापुरकर ने फैसला लिया था। उस समय वे मुम्बई उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे। उन्होंने मराठी साप्ताहिक साधना पर लगे प्रतिबंध को भी गैरकानूनी घोषित किया था। उल्लेखनीय है कि यह वह समय था जब कहीं भी, किसी कोने में आपातकालीन प्रतिबंधों के विरुद्ध आवाज नहीं उठ रही थी और न्यायाधीश हों या पत्रकार, सभी सत्ता के सामने डरे हुए जी-हुजूरी में लगे थे।

न्यायमूर्ति तुलजापुरकर १९७७ में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने और १९८६ में सेवानिवृत्त हुए। पुणे में रहने वाले उनके एक मित्र न्यायाधीश यू.आर. ललित का कहना है कि संकट के सामने हिम्मत का रुख अपनाने वाले लोग बहुत कम होते हैं, उन्हीं लोगों में से एक थे न्यायमूर्ति तुलजापुरकर। आजादी के इस प्रहरी को शत-शत प्रणाम। ■

पृष्ठ २ का शेषांश

७.माडर्नाइजेशन विदाउट वेस्टर्नाइजेशन ८. व्हाई भारतीय मजदूर संघ ९. कंजूमरः ए सोवरेन विदाउट सोविरन्टी १०. स्पेक्ट्रम ११. थर्ड वे १२.अवर नेशनल रेनीसां

मराठी- १. चिंतन पाथेय २. व्यक्तियाची पूर्व तैयारी

अग्रलेख (प्रस्तावना)- १. कल्पवृक्ष २. राष्ट्र ३. बड़े भाई- स्मृति ग्रंथ ४. पं. दीनदयाल उपाध्याय विचारदर्शन ५. राजकीय नेतृत्व ६. हिन्दू इकनामिक्स ७. स्वदेशी व्यूज आफ ग्लोबलाइजेशन

अन्य- राष्ट्रीय श्रम नीति बनाने में योगदान ● भारतीय मजदूरों के राष्ट्रीय मांगपत्र का प्रारूप ● बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा गंगोत्री से श्रीराम शिलापूजन प्रारंभ किया ● कानपुर में श्रीराम कारसेवा हेतु सत्याग्रह ● डा. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान (कोलकाता) द्वारा सम्मानित ● २८ जून, १९८५ को बीजिंग रेडियो पर भारतीय मजदूर नेता के रूप में उद्बोधन।

हमारा उद्देश्य है हिन्दुस्थान के मजदूर आन्दोलन में जो त्रुटि है, उसे ठीक करना। लोग अभी तक यही समझते रहे कि 'मजदूर' और 'मालिक' दो ही पक्ष हैं। वे यह भूल गये कि एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष 'राष्ट्र' भी है।

-दत्तोपंत ठेंगडी

पाञ्चजन्य

महाराष्ट्र का संदेश

महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों, साथ ही अन्यत्र हुए उपचुनावों के नतीजे भाजपा के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। उधर अरुणाचल में जहां भाजपा का आनंददायी खाता खुला और ६ सीटें मिलीं वहीं कल तक के केसरिया गेगांग अपांग ने कांग्रेसी मुख्यमंत्री के नाते शपथ लेकर मुंह कसैला कर दिया। यह कहना अलग बात है कि लोकतंत्र में हार-जीत होती ही रहती है और हम इन परिणामों के संबंध में चिंतन करेंगे। क्योंकि बहुत-सी बातें जो सबको सामने दिख रही हैं, अच्छा होगा यदि भाजपा भी उन्हें स्वीकार करने का साहस दिखाए और फिर से एक नये स्वरूप और मुद्दों के प्रति ईमानदार निष्ठा के साथ उन लोगों के पास जाए, जिन्होंने अपने कंधे छिलवा कर भाजपा को बार-बार सत्तासीन किया। महाराष्ट्र में सब कुछ भाजपा के पक्ष में कहा जा सकता था। किसान परेशान थे, सूखे की मार, कर्ज का बोझ और आत्महत्याएं, केन्द्र सरकार में कोई भी चमकदार नेतृत्व नहीं था। महाराष्ट्र में ले- देकर कांग्रेस का कोई नेता सुर्खियां पा सका तो वे थीं श्रीमती सोनिया गांधी। उधर भाजपा थी, जिसके पास पहली और दूसरी पंक्ति के ऐसे तेज-तर्रार प्रभावशाली और वक्तृत्व कला में निपुण नेताओं की आकाश गंगा है। मुद्दे भाजपा के पक्ष में। सब कुछ किया, फिर भी कुछ कम रह गए। इसका स्पष्टीकरण अनेक रूपों में दिया जाएगा। पर जो भी कहा जाएगा, उसे कार्यकर्त्ता कितना मानेंगे या उन पर जनता कितना भरोसा करेगी, कह नहीं सकते। यह स्थिति भाजपा को झकझोरने वाली साबित होनी चाहिए। हमारा विचार ठीक, हमारी विचारधारा श्रेष्ठ, हमारे कार्यकर्त्ता मेहनती, लगनशील और लक्ष्य के लिए जान तक लड़ा देने वाले तो फिर कमी कहां रही, यह भी बताने की जरूरत है? जैसे कांग्रेस जीतती है, वे भी जीत जाएंगे- ऐसा हो नहीं सकता। कांग्रेस और भाजपा दोनों के जैव-सूत्र (डीएनए) अलग-अलग हैं। दोनों अपनी प्रकृति के अनुसार ही बढ़ सकते हैं, उसे बदल नहीं सकते। इसमें संशय नहीं कि महाराष्ट्र में श्री शरद पवार की पार्टी ने कमाल किया है। १२३ सीटों पर चुनाव लड़कर ७० पर जीत गए। क्या यह सब इसलिए हुआ कि शरद पवार 'चुक चुके' नेता हैं और उनको वोट देने वाली जनता मूर्ख है?और सुशील कुमार शिंदे की संभवतः देश में सबसे अच्छे मुख्यमंत्रियों में छवि है। इस बात को स्वीकार किए बिना कोई पारदर्शी विश्लेषण नहीं हो सकता।

सोनिया-सुरजीत राज में

गृह मंत्रालय ने पीपुल्स वार ग्रुप पर से प्रतिबंध क्या हटाया कि हथियारबंद कम्युनिस्ट आतंकवादी हैदराबाद की सड़कों पर घूमने लगे। अब राजकीय अतिथि गृहों में सरकारी आतिथ्य का लुफ्त भी उठा रहे हैं। हैदराबाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए पीपुल्स वार ग्रुप के राज्य सचिव रामकृष्ण ने कहा कि हिन्दू धर्म को खत्म करने से ही तमाम बुराइयों को जड़ से उखाड़ा जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म सामन्तों द्वारा पाला-पोसा जा रहा है और जमींदारी को हटाने से हिन्दू धर्म अपने आप खत्म हो जाएगा। उल्लेखनीय है कि भारत में सक्रिय विभिन्न आतंकवादी संगठन एक हो गए हैं तथा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी), पीपुल्स वार ग्रुप तथा भारत का माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर अब एक होकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नाम से काम करने लगा है। एक होते ही भाकपा (माओवादी) ने नेपाल के माओवादियों के साथ सहयोग की घोषणा की है। कम्युनिस्ट आतंकवादी संगठन इससे पहले कभी भी इतने शक्तिशाली नहीं हुए और न ही इतना खुलकर सामने आए थे, जितना श्रीमती सोनिया गांधी के राज में आए हैं। श्रीमती सोनिया गांधी और कामरेड सुरजीत के विश्वस्त और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी ने पहले मुसलमानों को आरक्षण देने की घोषणा की और उसके बाद कम्युनिस्ट आतंकवादी संगठनों को अभयदान दिया। राजशेखर रेड्डी ईसाई हैं यह बात गौण है, पर उन्होंने मुख्यमंत्री का पद संभालने के बाद जो दो कदम उठाए वे हिन्दुओं पर सीधे-सीधे आघात करने वाले हैं। उन्होंने कम्युनिस्ट आतंकवादी संगठनों के एक होने पर चिंता व्यक्त करने की बजाय कहा, 'मीडा नम्मकामुन चंडी'- यानी कृपया मुझ पर भरोसा करो। आखिर कम्युनिस्ट आतंकवादी रेड्डी पर भरोसा नहीं करेंगे तो किस पर करेंगे!

जब से श्रीमती सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाला गठबंधन सत्तासीन हुआ है, हिन्दुओं की आस्थाओं और विश्वासों का अपमान और उन पर हमले बढ़ते ही जा रहे हैं। कुछ समय पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री टी.आर. बालू ने चेन्नै में ईसाई मत प्रचारक दिनकरन की सभा में कहा था कि उन्हें हिन्दू होने में शर्म आती है। लेकिन हिन्दू बहुल देश की सरकार में केन्द्रीय मंत्री के इस बयान पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई!

दत्तोपंत ठेंगडी-

हिन्दुत्व के सर्वसमावेशक चिंतक

- कुप्.सी.सुदर्शन, *सरसंघचालक, रा.स्व.संघ*

पुणे से श्री दत्तोपंत ठेंगडी के देहावसान का समाचार सुनकर अवसन्न हो गया। पिछले लगभग छह दशकों से संघ के गगनांचल में चमकने वाला देदीप्यमान नक्षत्र आज तिरोहित हो गया। यौवन में ही राष्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा हुआ ताजा पुष्प अब निर्माल्य बन गया। दत्तोपंत जी ने संघ के प्रचारक जीवन का श्रेष्ठ आदर्श तो प्रस्तुत किया ही, अपने प्रगाढ़ अध्ययन एवं तल-स्पर्शी चिंतन के द्वारा समाज जीवन के अनेक क्षेत्रों को न केवल समृद्ध बनाया बल्कि अपने अप्रतिम संगठन कौशल्य से विद्यार्थी परिषद्, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, सामाजिक समरसता मंच, स्वदेशी जागरण मंच आदि अनेक संगठनों को हिन्दुत्व के आधार पर प्रखर वैचारिक अधिष्ठान प्रदान किया, उन सब संगठनों को शीर्ष स्थान पर पहुंचाया। राज्यसभा के सदस्य के नाते कम्युनिस्ट समेत अनेक विचारधाराओं के शीर्ष नेताओं से उन्होंने आत्मीयतापूर्ण संबंध स्थापित किए। भण्डारा से जब माननीय बाबासाहेब अम्बेडकर लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे तब उनके चुनाव प्रभारी के नाते उन्होंने कार्यभार संभाला था। मेरे सतत आग्रह पर उन्होंने अपने अंतिम दिनों में श्री बाबासाहेब अम्बेडकर पर पुस्तक लिखी। अनेक विषयों पर लिखीं अनेक पुस्तक-पुस्तिकाओं के पश्चात् यह उनकी अन्तिम पुस्तक होगी, जो बाबासाहेब के अंतरंग की एक अनोखी झांकी प्रस्तुत करेगी।

अनेक देशों का भ्रमण कर उस-उस देश के जीवन का सूक्ष्म निरीक्षण, अनेक अन्तरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों में भारत का प्रभावी प्रतिनिधित्व तथा हिन्दुत्व के सर्वसमावेशक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में भारत व विश्व की समस्याओं का निदान एवं समाधान प्रस्तुत कर इस सर्वमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति ने अपनी जीवन लीला संवरण की। उनकी स्मृति को मेरी शोकसंतप्त विनम्र श्रद्धाञ्जलि। ■

वे डा. हेडगेवार से जोड़ने वाली प्रेरक कड़ी थे

- हो.वे. शेषाद्रि

अ.भा. प्रचारक प्रमुख, रा.स्व. संघ

परम आदरणीय दत्तोपंत ठेंगडी जी अब नहीं रहे। केवल भारत के ही नहीं, अपितु विश्व के क्षितिज से भी एक महान चिंतक का तारा अस्त हुआ। मजदूर क्षेत्र में ही नहीं, किसान-स्वदेशी आदि क्षेत्रों में भी उनका मौलिक चिन्तन अब सर्वत्र स्वीकार हो रहा है। वे प्रमुख रूप से संघ तथा विविध संगठनों में कार्यरत स्वयंसेवकों, विशेष रूप से प्रचारकों के लिए-एक जीते-जागते आदर्श-रूप में रहे। छोटों से लेकर बड़ों तक उनका अकृत्रिम मित्रवत् व्यवहार रहा है। उसी प्रकार साम्यवाद से लेकर डा. अम्बेडकर आदि की विचारधाराओं से जुड़े हुए नेताओं के साथ भी उनका सहज व्यवहार था। डा. हेडगेवार के समय से लेकर अब तक वे लगातार एक प्रेरणादायी कड़ी के रूप में वे रहे हैं। मेरे सरकार्यवाह कार्यकाल में उनके मार्गदर्शक शब्द मेरे लिए बहुमूल्य पाथेय रहे हैं। किसी नन्दादीप की ज्योति का तेज आखिरी बूंद तक जिस तरह जलता रहता है, उसी प्रकार शारीरिक दृष्टि से पूरा थकने पर भी बौद्धिक दृष्टि से अपनी अन्तिम श्वास तक उनका चिन्तन चलता रहा। वैसे देखा जाए तो ठेंगडी जी जैसे महान चिन्तक के पार्थिव रूप में रहने पर भी चिन्तन और आचरण रूपी उनका तेज सर्वत्र फैलता रहेगा। आज हजारों स्वयंसेवकों के साथ मैं भी उस परमस्नेही मार्गदर्शक की पुण्य-स्मृति में अश्रुपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। ■

प्रखर विचारक, असाधारण संगठक

-पी. परमेश्वरन

अध्यक्ष-विवेकानंद केन्द्र (कन्याकुमारी), एवं निदेशक-भारतीय विचार केन्द्रम्

दत्तोपंत जी संघ के वरिष्ठतम प्रचारकों में से एक थे। उन्होंने पं. दीनदयाल उपाध्याय, नानाजी देशमुख, एकनाथ रानडे आदि की भांति एक उच्च स्थान प्राप्त किया था। वे एक महान विचारक और विद्वान तो थे ही, एक महान कार्यकर्ता भी थे। स्पष्ट तथ्यात्मकता के साथ वे एक ऐसे सिद्धान्तवादी थे जो कभी समझौता नहीं करते। भारत का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन भारतीय मजदूर संघ उनके व्यावहारिक आदर्शवाद का जीता जागता उदाहरण है। ऐसे समय में जब प्रत्येक राजनीतिक दल का एक श्रम प्रकोष्ठ था, ठेंगडी जी ने बड़े साहस के साथ किसी राजनीतिक दल से बिल्कुल असम्बद्ध रहने वाला, भारतीय मूल्यों के आधार पर श्रमिक संगठन खड़ा किया था। भारतीय मजदूर संघ की सफलता सिद्ध करती है कि भारत को एक राष्ट्रवादी आंदोलन खड़ा करने के लिए किसी विदेशी विचारधारा की जरूरत नहीं है। केरल के साथ ठेंगडी जी का बहुत आत्मीय रिश्ता रहा। उनका मार्गदर्शन केवल भा.म.संघ के कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे संघ विचार परिवार के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत था। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भारतीय विचार केन्द्रम की प्रेरणा भी ठेंगडी जी ने ही दी। विचारों की स्पष्टता, अभिव्यक्ति की तीक्ष्णता और समझ की गहनता उनको अपने समय की एक महानतम विभूति बनाती है। प्रसिद्धि-पराङ्गमुखता उन्हें अन्य नेताओं, विभूतियों से बिल्कुल अलग एक देदीप्यमान व्यक्तित्व प्रदान करती थी। यही कारण है कि उनके व्यक्तिगत संपर्क में जो नहीं आया, वह उनकी महानता को ज़ान नहीं सकता। केवल संघ विचार परिवार में ही नहीं, उनके मित्र और प्रशंसक दुनिया भर में हैं।

हमारे मार्गदर्शक

-हसुभाई दवे, *अध्यक्ष, भारतीय मजदूर संघ*

दत्तोपंत जी के अवसान से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक अपूरणीय क्षति हुई है। वे भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ और स्वदेशी जागरण मंच के संस्थापक ही नहीं, अपितु मार्गदर्शक भी थे। उनके निधन से न केवल संगठन की बल्कि मेरी भी व्यक्तिगत हानि हुई है। अब हम उनके मार्गदर्शन, उनकी सलाह से वंचित रह जाएंगे। ठेंगडी जी सदा ही स्वदेशी के आग्रही रहे, उनका पूरा जीवन इसकी एक जीवंत मिसाल था। उनका स्वभाव, रहन-सहन, व्यवहार अत्यंत सादगीपूर्ण रहा। उनके आचार-व्यवहार पर पं. दीनदयाल उपाध्याय का बड़ा प्रभाव था। एकात्म मानववाद दर्शन को उन्होंने आत्मसात् किया था। स्वदेशी अर्थचिंतन में उन्होंने विशेष भूमिका निभाई थी। वैश्वीकरण के विरुद्ध १९८४ में ही उन्होंने अपने विचार रखे थे यानी वे आने वाले समय को पहचानने की दृष्टि रखते थे। आज भारतीय मजदूर संघ भारत का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन बना, इसके पीछे दत्तोपंत जी की तपस्या ही है।

सबको स्नेह, अपनापन मिला

-सी.के. शाजी नारायणन, *उपाध्यक्ष, भा.म. संघ*

श्री गुरुजी के बाद श्री ठेंगडी ने संघ विचारधारा को सींचा था। वे बड़े सहज भाव से हर एक के साथ घुल-मिल जाते थे। सभी को उनका स्नेह समान रूप से प्राप्त होता था। उनकी योग्यता और निष्ठा के कारण अन्य विचारधाराओं के श्रमिक संगठन भी उनका आदर करते थे।

केरल में संघ-कार्य

बीज से वटवृक्ष तक

रा.स्व. संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक श्री दत्तात्रेय बापूराव ठेंगडी के अवसान से केरल के सामाजिक-राजनीतिक जीवन से जुड़े अधिकांश जन आज एक खालीपन महसूस कर रहे हैं। '४० के दशक के आरम्भ में श्री गुरुजी ने श्री ठेंगडी को संघ कार्य आरम्भ करने के लिए केरल भेजा था। १९४२ में कोझीकोड पहुंचे श्री ठेंगडी १९४४ तक राज्य में शाखाओं के विस्तार में संलग्न रहे। उनके द्वारा उस समय केरल की धरती पर रोपा गया संघ-बीज आज विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है, जिसकी शाखाएं प्रदेश के प्रत्येक कोने में फैली हुई हैं।

वकालत की उपाधि प्राप्त करने के बाद श्री ठेंगडी केरल पहुंचे थे और वहां कोझीकोड में उस समय के प्रख्यात वकील से पहला परिचय हुआ। हालांकि उन वकील महोदय ने श्री ठेंगडी को कहा था कि यहां वे अपना समय व्यर्थ गंवाने आए हैं। लेकिन वही वकील आगे चलकर युवा प्रचारक ठेंगडी जी के प्रशंसक बन गए थे। केरल में शुरुआत से ही श्री ठेंगडी को कम्युनिस्टों का घोर विरोध सहना पड़ा था। लेकिन उन्होंने अपने तीक्ष्ण और स्पष्ट तर्कों से कम्युनिस्ट विचारधारा का डटकर मुकाबला किया। 'साम्प्रदायिकता' के विरुद्ध मार्क्सवादी नेता नम्बूदिरिपाद के अभियान का उचित उत्तर देते हुए श्री ठेंगडी ने मार्क्सवादी नेताओं के पाखंड और केरल में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के सामने घुटने टेक देने की उनकी मानसिकता को उजागर किया। 'नम्बूदिरिपाद्स एंटी-कम्युनलिज्म एक्स-रेड' पुस्तक में ठेंगडी जी ने लिखा, 'भारत में मार्क्सवादी पार्टी के लिए यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि इसके प्रेरणा-पुंज, मार्गदर्शक और विचारक धुर हिन्दू विरोधी हैं। अन्यथा यह कल्पना करना संभव नहीं था कि पार्टी इतनी उग्रता के साथ मुस्लिम पक्षधर और हिन्दू विरोधी क्यों है।'

केरल में शुरुआत से ही श्री ठेंगडी को कम्युनिस्टों का घोर विरोध सहना पड़ा था। लेकिन उन्होंने अपने तीक्ष्ण और स्पष्ट तर्कों से कम्युनिस्ट विचारधारा का डटकर मुकाबला किया।

श्री ठेंगडी ने राज्य के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य की पूरी तरह पहचान करके जाति, पाति और रंग की परवाह न करते हुए हिन्दुओं को संगठित करना शुरू किया। वे पूंजीवाद और कम्युनिज्म की खामियों को पहले ही जान चुके थे और इसीलिए उन्होंने 'तीसरे मार्ग' यानी विकास की भारतीय अवधारणा का आह्वान किया। हिन्दुत्व की उनकी स्पष्ट, सुविचारित और प्रखर व्याख्या के कारण राज्य के अनेक बुद्धिजीवी संघ के निकट आए। आज श्री ठेंगडी के ही अनथक प्रयासों के कारण राज्य की हर पंचायत में शाखा चल रही है। ■ **तिरुअनंतपुरम से प्रदीप कुमार**

संघ भावना को जीवन में उतारा

-एम.ए. कृष्णन

वरिष्ठ संघ प्रचारक, संस्थापक-बालगोकुलम

डा. हेडगेवार और श्री गुरुजी से मिलने का विरला सौभाग्य श्री ठेंगडी को प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में संघ भावना को पूरी तरह आत्मसात किया था। उन्होंने पूंजीवाद और कम्युनिज्म के विरुद्ध भारतीय मूल्यों पर आधारित विकास का एक समानान्तर प्रारूप रखा था। प्रदेश के विभिन्न सामाजिक संगठनों का उन्होंने बारीकी से अध्ययन किया था।

सभी वर्गों को संघ से जोड़ा

-ए.आर. मोहनन, *प्रांत कार्यवाह, रा.स्व.संघ, केरल*

ठेंगडी जी ने केरल में संघ कार्य की नींव डाली थी। वे समाज के सभी वर्गों को संघ से जोड़ पाए थे। उन्होंने बहुत पहले यानी १९८० में ही कम्युनिज्म के पतन की भविष्यवाणी कर दी थी।

संघ और माकपा में वार्ता की पहल

-पी.पी. मुकुन्दन, *महासचिव, केरल भाजपा*

एक ऐतिहासिक विभूति थे ठेंगडी जी। '४० के दशक में जब वे केरल आए थे तो संघ कार्य विस्तार के लिए उन्होंने पहले यहां की भाषा और संस्कृति का अध्ययन किया था। '६० के दशक में जब संघ और माकपा में संघर्ष हुआ था तब ठेंगडी जी ने ही दोनों संगठनों के बीच वार्ता की पहल की थी। उन्होंने लोगों में सामाजिक-सांस्कृतिक एकजुटता के लिए अनथक प्रयास किया था।

गहन विषय की स्पष्ट व्याख्या

-आर. वेणुगोपाल, *संगठन मंत्री, भा.म. संघ*

१९४२ की बात है। ठेंगडी जी प्रत्येक रविवार को किसी न किसी विषय पर बौद्धिक देते थे। कहने की जरूरत नहीं कि कई विषय तो इतने कठिन होते थे कि हमारी समझ में ही नहीं आते थे। एक दिन वे मुझे अपने साथ एक होटल में ले गए और नाश्ते के लिए आदेश देने के बाद हिन्दू राष्ट्र के बारे में बताने लगे। हिन्दुत्व की उनकी वह स्पष्ट व्याख्या आज भी मेरे मन में गहरे पैठी हुई है।

वे महात्मा थे

-डा. डी. बाबू पाल

पूर्व मुख्य सचिव एवं पूर्व लोकपाल, केरल

स्व. ठेंगडी ने हमेशा ही ज्ञान का सम्मान किया। उनका दृष्टिकोण अत्यन्त मानवीय था। तिरुअनंतपुरम में भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में मैं उपाध्यक्ष था और तभी उनसे मेरी भेंट हुई थी। उस समय मुझे विभिन्न विषयों पर उनके प्रखर विचारों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उनके ज्ञान की गहनता ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था। सच में वे महात्मा थे।

विरले महापुरुष

-पी.नारायणन, *पूर्व संपादक, जन्मभूमि, मलयालम दैनिक*

केरल में संघ का संदेश गुंजाने वाले वे असाधारण व्यक्ति एक पूर्ण पुरुष थे। श्री गुरुजी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के साथ श्री ठेंगडी ने हमारी विचारधारा को पुष्ट किया। श्रमिक आंदोलन में उनकी भूमिका भुलायी नहीं जा सकती। उन्होंने राज्यसभा की शोभा बढ़ाई, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अधिवेशनों और चीन के कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व पर अपनी छाप छोड़ी। ऐसे महापुरुष विरले ही होते हैं।

नमन! हे राष्ट्र-ऋषि

उनका लिखा हमारा मार्गदर्शन करेगा

-अटल बिहारी वाजपेयी, *पूर्व प्रधानमंत्री*

दत्तोपंत जी के साथ मेरा काफी पुराना परिचय था। भोपाल की जिस बैठक में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना का निर्णय हुआ था, उस बैठक में दत्तोपंत जी के साथ मैं भी उपस्थित था। नये संगठन के नाम पर सोच-विचार चल रहा था। उनके मन में 'श्रमजीवी संगठन' नाम था। पर संगठन का नाम सरल तथा अर्थपूर्ण होना चाहिए, ऐसा विचार किया गया और अंततः भारतीय मजदूर संघ नाम निश्चित हुआ। मुझे याद है, दत्तोपंत जी ने तुरंत यह सुझाव मान लिया था। दत्तोपंत अखंड चिंतन में रत रहते थे। वे तीसरे रास्ते की खोज में लगे थे। आज सारी दुनिया तीसरे रास्ते की खोज में लगी है। दत्तोपंत जी ने समय-समय पर जो लिखा है, उसको हम सभी को फिर से पढ़ना चाहिए। उससे हमें मार्गदर्शन मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

अद्वितीय संगठनकर्ता थे दत्तोपंत

-प्रमिला ताई मेढ़े, *सह संचालिका, राष्ट्र सेविका समिति*

दत्तोपंत जी के साथ बचपन से ही व्यक्तिगत सम्बंध रहा। संघ कार्य की दृष्टि से उनका जीवन एक ऋषि की भांति था। वे संगठन का महत्व जानते थे। श्रमिक संगठन का काम जब उन्हें सौंपा गया, उस समय परिस्थिति बहुत अनुकूल नहीं थी। परन्तु उन्होंने उस क्षेत्र में बड़ा संगठन खड़ा किया। उस समय वे जब भी मिलते यही कहते थे कि मैं तो संघ के गटनायक की तरह काम कर रहा हूं। डा. बोकरे जैसे साम्यवादी व्यक्ति, जो हमेशा संघ की भर्त्सना ही करते थे, को अपने अनुकूल बनाना और हिन्दू अर्थशास्त्र जैसा विषय उनके माध्यम से प्रस्तुत करना, यह दत्तोपंत के ही वश की बात थी।

आज ऐसा लगता है कि हमारे बड़े भैया हमसे बिछड़ गए। राष्ट्र सेविका समिति के स्थापना काल से ही इसके कार्य के साथ उनका बड़ा आत्मीय भाव रहा था। जब भी मन करता उसी वक्त अहिल्या मंदिर आते थे। एक बार कहीं जा रहे थे, विमान जाने में देरी थी, तो अहिल्या मंदिर आ गए। मैंने पूछा कि क्या कार्यक्रम है? बोले, कुछ नहीं, तुमसे बात करने आया हूं, बस। हिन्दू तत्वज्ञान के बारे में उनके भविष्यदर्शी विचार थे। व्यक्तिगत हानि की बात छोड़ दें, संगठन की दृष्टि से भी हमें उनके विचार न मिल पाना, एक बड़ी कमी की तरह रहेगा।

जून में मेरी उनसे भेंट हुई थी, मैं दो-तीन घंटे उनके पास बैठी। आज की असमंजसपूर्ण स्थिति के बारे में वे चिंतित थे। कैसी शक्ति खड़ी करें कि हम अपने अन्दर और बाहर की उलझनों का सामना कर पाएं, इस पर लम्बी चर्चा हुई। दिल्ली में उस अंतिम भेंट के समय भी परिस्थितियों में सुधार की चिंता में रत थे। स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था। शुद्ध सोने की जिस प्रकार बार-बार अग्निपरीक्षा होती है, उसी तरह हमें भी इस कठिन परीक्षा में खरा उतरना ही है। कैसे उतरेंगे? वह शक्ति कैसे आएगी। इसकी उन्हें बराबर चिंता थी।

वे दूर-दृष्टा थे

-रमणभाई शाह, *संगठन मंत्री, भा.म.संघ*

दत्तोपंत जी भारतीय मजदूर संघ के जन्मदाता मात्र नहीं थे, अपितु सर्वेसर्वा थे। एक तिहाई दुनिया जब लाल रंग से रंगी थी और 'लाल किले पर लाल निशान' की घोषणा बड़े उत्साह से की जा रही थी तब उन्होंने कम्युनिज्म के पतन की भविष्यवाणी की थी। वे सही अर्थों में दूरदृष्टा थे।

समर्पित राष्ट्रसेवक

-लालकृष्ण आडवाणी, *पूर्व उपप्रधानमंत्री*

दत्तोपंत जी के साथ मेरे गत ५० वर्षों से घनिष्ठ सम्बंध रहे। दत्तोपंत जी का एक वाक्य में वर्णन करना हो तो कह सकते हैं कि वे समर्पित राष्ट्रसेवक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन कर्मयोगी के रूप में बिताया। कोई भी काम उन्होंने हाथ में लिया तो वह यशस्वी कर दिखाया। अपने विचारों से समझौता किए बगैर उन्होंने व्यापक सम्पर्क स्थापित किया। उनका चिंतन केवल श्रमिक या आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्रजीवन का और दुनिया का उन्होंने मार्गदर्शन किया। उनके जाने से मेरी व्यक्तिगत क्षति हुई है। हमारे कार्य का एक प्रमुख स्तंभ अब नहीं रहा। पूरी दुनिया जब आर्थिक क्षेत्र में केवल दो पर्यायों का जिक्र कर रही थी तब दत्तोपंत जी ने भारतीय चिंतन से उपजे तीसरे समर्थ विकल्प का आग्रहपूर्वक प्रतिपादन किया था। उनके जाने से केवल संघ विचार परिवार ही नहीं, समूचे राष्ट्र की हानि हुई है।

श्रमिक आंदोलन के प्रेरणापुंज

-मुरलीधर राव, *संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच*

ठेंगडी जी की मृत्यु से राष्ट्रवादी संगठनों को एक बड़ा आघात पहुंचा है। वे अंतिम समय तक पिछड़ों और गरीबों के लिए कार्यरत रहे। ठेंगडी जी पूंजीवादी विश्व व्यापार सत्ता और वैश्वीकरण की ताकतों के विरुद्ध एक विशाल आंदोलन के प्रेरणापुंज रहे। उन्होंने न केवल भारत के बल्कि दुनिया के हित में आवाज गुंजाई थी। श्रमिक आंदोलन में उनका योगदान लम्बे समय तक याद रखा जाएगा।

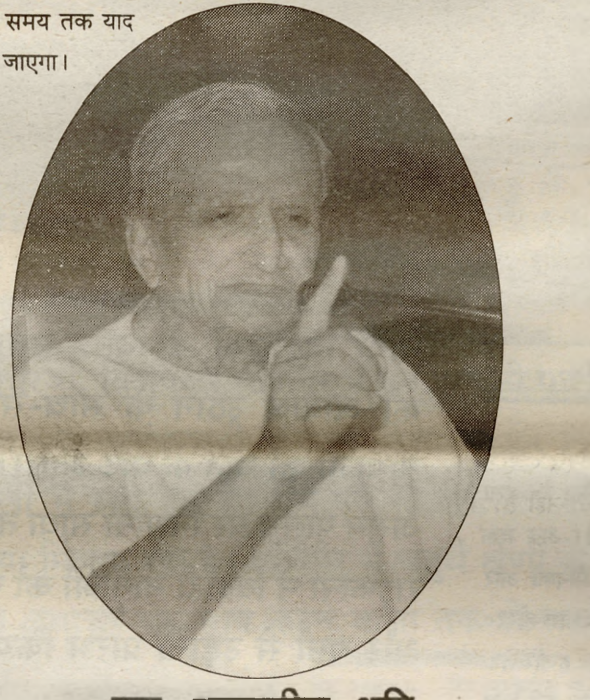

एक अपूरणीय क्षति

-नित्यानंद स्वामी, *पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराञ्चल*

प्रख्यात चिन्तक और विभिन्न श्रम संगठनों के माध्यम से देश की सेवा करने वाले दत्तोपन्त ठेंगडी जी का निधन हम सबके लिए एक अपूरणीय क्षति है। मृदुभाषी ठेंगडी जी ने अत्यन्त सामान्य जीवन जीकर भारतीय मजदूर संगठन की स्थापना की और श्रमिक वर्ग के कल्याण के लिए नई आशा का संचार किया। मैंने श्री ठेंगडी के साथ तीन दशकों से भी अधिक समय तक श्रमिक संगठनों तथा अन्य संस्थाओं में काम किया। वे त्याग और समर्पण की मिसाल थे।

श्रमिक तथा किसानों के मसीहा

-अशोक सिंहल, *अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद*

दत्तोपंत जी के जाने से आज हम अनाथ हो गए हैं। दत्तोपंत श्रमिक तथा किसानों के मसीहा थे। कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जिनका अभाव कभी पूरा नहीं हो सकता है। वे ऐसे ही महापुरुष थे। दत्तोपंत का मौलिक मार्गदर्शन जीवन के हर क्षेत्र में मिलता था। उनकी माता जी और स्वयं श्रीगुरुजी उनके मार्गदर्शक थे। आज देश, खासकर हिन्दू समाज सभी दिशाओं में संकट से घिरा है। ऐसी स्थिति में दत्तोपंत जी के न रहने का अभाव बहुत खटकेगा।

आधारशिला का कार्य किया

- सुरेशराव केतकर, *अ.भा. सहप्रचारक प्रमुख, रा.स्व.संघ*

संघ-संस्थापक डा. हेडगेवार के सान्निध्य में रहे, संघ की पुरानी पीढ़ी के प्रचारक ठेंगडी जी के निधन से हम सब अत्यंत दुःखी हैं। ठेंगडी जी ने भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, स्वदेशी जागरण मंच आदि को प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में आधारशिला का कार्य किया।

श्रमिक संगठनों की श्रद्धाञ्जलि

श्रमिक वर्ग को समर्पित जीवन

● श्री दत्तोपंत ठेंगडी के अवसान का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने भारतीय मजदूर संघ नामक श्रमिक आंदोलन का गठन किया था। पहले वे 'इंटक' से जुड़े हुए थे। वे देश और श्रमिक वर्ग के प्रति अत्यंत समर्पित व्यक्तियों में से एक थे। वे सिद्धान्तवादी एवं महान व्यक्तित्व के धनी थे। जब वे इंटक के साथ कार्यरत थे तो विशुद्ध गांधीवादी सिद्धान्तों पर चलते हुए उन्होंने अत्यन्त सकारात्मक भूमिका निभाई थी। शुरूआत से ही वे श्रमिक वर्ग के प्रति बड़े समर्पित रहे थे और यह वर्ग हमेशा उन्हें प्रिय रहा। मैं जब 'इंटक' का अध्यक्ष बना तो उनकी बड़ी इच्छा थी कि 'इंटक' और बी.एम.एस. साथ मिलकर श्रमिक वर्ग के लिए काम करें। बी.एम.एस. के वडोदरा अधिवेशन के समय मैं उनसे मिला था तो उन्होंने अपनी यह इच्छा मेरे सामने रखी थी। उन्होंने मुझसे कहा, 'आप कोशिश कीजिए, हम आपको सहयोग देने को तैयार हैं।' वे सच में महान थे।

-संजीव रेड्डी, *अध्यक्ष,* इंटक *(आई.एन.टी.यू.सी.)*

● दत्तोपंत ठेंगडी के निधन से श्रमिक संघ आंदोलन को एक आघात लगा है। कुछ क्षेत्रों में हमारे संगठनों ने एक साथ काम किया तो कुछ में हमारे रास्ते अलग थे। उदाहरण के लिए, वैश्वीकरण की नीतियों के विरुद्ध बी.एम.एस. ने आंदोलन किया था, 'सीटू' भी आंदोलनरत था। मेरी उनके साथ कभी साक्षात भेंट नहीं हुई थी लेकिन मुझसे पहले जो हमारे वरिष्ठ कामरेड हमारे अध्यक्ष, महासचिव थे, उनके साथ ठेंगडी जी की बात जरूर होती थी। एक वरिष्ठ श्रमिक नेता श्री ठेंगडी के निधन पर हम 'सीटू' की ओर से अपना दुःख व्यक्त करते हैं।

-चित्तव्रत मजूमदार

महासचिव, 'सीटू' (सी.आई.टी.यू.)

● भारत के श्रमिक वर्ग के हित में लड़ने वाले एक व्यक्ति के रूप में हम श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का सम्मान करते हैं। वे एक निष्ठावान श्रमिक नेता थे।

-गुरुदास दासगुप्ता

महासचिव, 'एटक' (ए.आई.टी.यू.सी.)

पुण्य स्मरण!

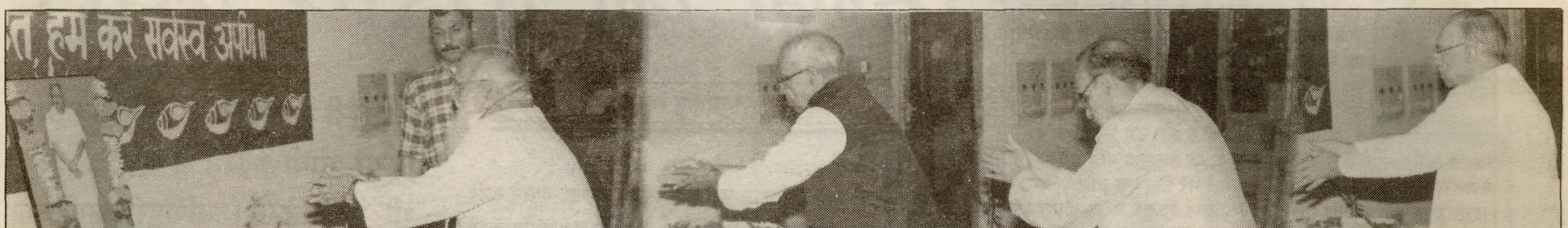

केशव कुञ्ज, झण्डेवाला में स्व. दत्तोपंत ठेंगडी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए (बाएं से) आचार्य गिरिराज किशोर, श्री कैलाशपति मिश्र, श्री जगदीश प्रसाद माथुर एवं श्री केदार नाथ साहनी

दत्तोपंत ठेंगडी के निधन का समाचार सुनकर देशभर में शोक की लहर दौड़ गई। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक देश के अनेक भागों में श्रद्धाञ्जलि सभाओं के आयोजन हुए हैं।

दिल्ली

दिल्ली में संघ विचार परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता और पदाधिकारी १५ अक्तूबर की सायंकाल संघ मुख्यालय केशव कुञ्ज में स्व. ठेंगडी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए। इस अवसर पर दिल्ली प्रांत के संघचालक श्री सत्यनारायण बंसल ने उपस्थित कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे स्व. ठेंगडी के आदर्श को सामने रखकर उनके सपनों को साकार करने हेतु प्रयत्नशील रहें। पुष्पांजलि समारोह का समापन संघ प्रार्थना के साथ हुआ।

लखनऊ

१४ अक्तूबर को सायंकाल विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। केन्द्र की त्रैमासिक शोध पत्रिका के संपादक डा. गौरीनाथ रस्तोगी की अध्यक्षता में आयोजित हुई इस शोक सभा में रा.स्व.संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री अधीश कुमार तथा संवाद भारती पत्रिका के संपादक श्री नंद किशोर सहित बड़ी संख्या में स्वयंसेवक व कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

जौनपुर

१५ अक्तूबर की शाम को खेटासराय, जौनपुर (उ.प्र.) में स्व. ठेंगडी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। इस अवसर पर संघ विचार परिवार के लगभग १५० कार्यकर्ताओं ने स्व. ठेंगडी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। ■

पूर्वोत्तर की चिंता

कब लौटेगा

अमन की तलाश में सड़कों पर आंदोलनरत मणिपुरी महिलाएं

■ आचार्य राधा गोविन्द थोङगम

पिछले २४ वर्षों से पूर्वोत्तर में ए.एफ.एस.पी.ए. (आर्म्ड फोर्सेज स्पेशल पावर्स एक्ट-१९५८) लागू है। ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जब गोली न चलती हो। अब तक आतंकवादियों ने १० हजार से ज्यादा भारतीय सैनिकों और पुलिसकर्मियों को मौत के घाट उतारा है। इसके साथ ही १० हजार आतंकवादियों की संख्या भी जोड़ें तो यह २० हजार तक पहुंचती है। यह मारकाट 'नागा नेशन' के निर्माण की मांग करते हुए सन् १९४६ में फिजो अंगामी ने शुरू की थी। नागा विद्रोहियों ने स्वतंत्र नागा राष्ट्र की आवाज उठाने के साथ-साथ गैर नागाओं को मौत के घाट उतारा। उन्होंने असम पुलिस पर निशाना साधा तो असम राइफल्स ने विद्रोही नागाओं को गोलियों और बमों से उड़ाना प्रारंभ किया। नागा विद्रोह को दबाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने अंग्रेजों द्वारा सन् १९४२ में भारतीयों का दमन करने के लिए जो कानून

नागा विद्रोहियों ने स्वतंत्र नागा राष्ट्र की आवाज उठाने के साथ-साथ गैर नागाओं को मौत के घाट उतारा। उन्होंने असम पुलिस पर निशाना साधा तो असम राइफल्स ने विद्रोही नागाओं को गोलियों और बमों से उड़ाना प्रारंभ किया।

बनाया था, उसमें कुछ फेरबदल कर ए.एफ.एस.पी.ए.-१९५८ बनाकर लागू कर दिया। मणिपुर में पी.एल.ए. (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी) के आतंक और प्रिपाक को दबाने के लिए सन् १९८० में मणिपुर राज्य विधानसभा ने सर्वसम्मति से मणिपुर को अशांत क्षेत्र घोषित किया था। मिजोरम को स्वतंत्र देश बनाने के लिए लालडेंगा ने मिजो आतंकवादियों का संगठन बनाकर गैर मिजो (लुसाई) लोगों को गोलीबारी करके तथा उनके घरों में आग लगाकर उन्हें भगाना शुरू किया तब भारतीय सुरक्षाबल को पूरे मिजोरम में कार्रवाई करनी पड़ी थी। मिजोरम में आतंकवादी संगठन आज भी मौजूद हैं। मेघालय तथा अरुणाचल में भी आतंकवादी संगठन आतंक फैलाते रहते हैं।

भूमिगत संगठनों के दो चेहरे

पूर्वोत्तर के भूमिगत संगठनों में एन.एस.सी.एन. (नेशनल सोशलिस्ट कार्उंसिल आफ नागालैण्ड) की स्थापना १९६३ में मुइवा के द्वारा हुई। मुइवा का जन्म मणिपुर के उखरूल जिले की तांखुल जनजाति में हुआ था। उसने नागालैण्ड के खापलांग को अध्यक्ष बनाया। कुछ कारणों से लगभग दस वर्ष पूर्व खापलांग अलग हो गया। इस तरह एन.एस.सी.एन. पूर्वोत्तर

आज मणिपुर की जनता शांति चाहती है, अमन चाहती है। पूर्वोत्तर राज्यों की आज एकमात्र चिंता यही है।

का सबसे बड़ा और ताकतवर आतंकवादी संगठन बना। ईसाई मिशनरियां भी एन.एस.सी.एन. को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष समर्थन देती हैं।

पूर्वोत्तर के आतंकवादी संगठनों में उल्फा का नाम एन.एस.सी.एन. के बाद आता है। मणिपुर में के.सी.पी. (कंलैपाक कम्युनिस्ट पार्टी) से पहले आर.पी.एफ. (रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट) का नाम आता है। १९६३ में पूर्वी पाकिस्तान के सिलहट में ओ. सुधीर सिंह के झंडे तले इसका गठन हुआ था। पी.एल.ए. इसी संगठन का सैन्य अंग है। एन. विश्वेश्वर सिंह इसके कमांडर इन चीफ थे। सबसे पहले १९५८ में सिलहट में (पूर्वी पाकिस्तान) ही एम.एन.एल.एफ. (मणिपुर नेशनल लिबरेशन फ्रंट) की स्थापना सोमरेन्द्र सिंह अरांबम के नेतृत्व में हुई थी। आर.के. सनायाइमा ने एम.एन.एल.एफ. का फिर से गठन किया है। प्रिपाक (पीपुल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी आफ कंलैपाक) का गठन १९६४ में आर.के. तुलचन्द्र ने किया था। सबसे अंत में बीसवीं शती के नौवें दशक में के.वाई के.एल. (कंलैपाक याओल कन्नलुप) का गठन हुआ। मणिपुर में दो इस्लामी आतंकवादी संगठन भी हैं। इनके अलावा कूकी जनजाति के तीन आतंकवादी संगठन हैं।

पूर्वोत्तर में, विशेषकर मणिपुर में एन.एस.सी.एन (आई-एम) को

जुना किडनी रोग दुरूस्त हुआ

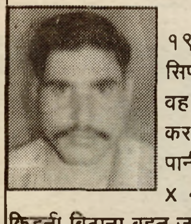

मेरी बायी किडनी नादुरूस्त हुयी थी इसलिए १९९६ में शस्त्रक्रिया करके उसे निकाल दिया था। सिर्फ एकही दायी किडनीपर मेरा जीना निर्भर था। परंतु वह भी नादुरूस्ती के मार्गपरही थी। एक्स-रे निकाल कर डॉक्टरसे जाँच किया तो ज्ञात हुआ कि किडनी में पानी भरकर सूजन आयी है और उसका आकार (12.50 x 4.50mm) बढ गया है और उसे निकालकर दूसरी किडनी बिठाना बहुत जरूरी है। मेरे लिए तो यह असम्भव था। दायें किडनी मे इतना भयानक दर्द था कि एक-एक पल मेरे लिए एक साल के बराबर महसूस होता था। जलगांव (महाराष्ट्र) के प्रसिध्द वैद्यराज म. बा. वाघण्णाजी की महिमा दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले "पाञ्चजन्य" साप्ताहिक में पढनेमे आयी थी। पोलिओ, लकवा, जनमसे अपाहिज, जनमसे दिवाने मंदबुध्दि, मिरगी, बवासीर, मधुमेह, मूत्ररोग, दमा, टी.बी. हृदयरोग, श्वासरोग, अनेक प्रकारके वातरोग ऐसे अनेक प्रकारके असाध्य रोगोंपर इलाज करते है ऐसा पढने में आया था। दि. १८/५/२००४ के दिन वैद्यराज वाघण्णाजी को मेरी प्रकृति दिखाकर उनका इलाज चालू किया। उनकी दवाईसे एक महिने के अंदर मेरा दर्द बंद हो गया। दि. १७/६/२००४ के दिन शाम शाह मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल रीवा में पुन्हा एक्सरे निकालकर जाँच किया। दाये किडनीका आकार (11.9 x 3.9 m.m.) कम होकर नॉर्मल का रिपोर्ट दिया गया। अब मैं बिलकूल स्वस्थ हूँ। वैद्यराज वाघण्णाजीने मुझे नया जीवन दिया है। सामान्य जनता को इस अमूल्य सेवा का लाभ मिलना बहुत जरूरी है। इसलिए मै यह अभिप्राय जाहिर कर रहा हूँ।

वैद्यराज वाघण्णाजीकी उपलब्धी
"गुरूकृपा" गीरणा पानीकेकेटंकी केपास
जलगांव (महाराष्ट्र) पिन : ४२५००२
दूरभाष: (०२५७) २२३७५०३

रूद्रमणी श्रीइंद्रमणी प्रसाद मिश्र
ग्राम करतरा पो. निगा
त. हुजूर जि. रीवा (म.प्र.)

हिन्दी का विरोध क्यों?

■ भारतबंधु इम्फाली

शेष देश का इतिहास भले कुछ रहा हो मणिपुर-असम आदि पूर्वोत्तर राज्यों में राजनीतिज्ञों ने हिन्दी का विरोध कभी नहीं किया, बल्कि असमिया भाषा-साहित्य के जनक श्रीमन्त शंकर देव ने असमिया भाषियों को भगवत्भक्ति के लिए हिन्दी सीखने का सुझाव दिया था।

मणिपुर में तो इससे भी एक कदम आगे बढ़कर हिन्दी ने प्रजातंत्र की बयार बहाई। मणिपुरी भाषा-संस्कृति को विश्व के सामने सजा-संवार कर रखा। जब १९७२ से मणिपुरी भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने की मांग पर आन्दोलन शुरू हुआ तब उसमें हिन्दी सेवकगण व हिन्दी प्रचार संस्थाएं ही नहीं बल्कि हिन्दीभाषियों ने तन, मन, धन से सहयोग देकर भाग लिया। मणिपुरी समाज के २५ प्रतिशत छात्र हिन्दी भाषी प्रदेशों में पढ़े हैं, आज भी पढ़ रहे हैं। मणिपुरी साहित्य, संगीत, सिनेमा आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी ने अगुवाई की है। बंगला भाषा के बाद सबसे अधिक भागीदारी हिन्दी

मणिपुरी समाज के २५ प्रतिशत छात्र हिन्दी भाषी प्रदेशों में पढ़े हैं, आज भी पढ़ रहे हैं। मणिपुरी साहित्य, संगीत, सिनेमा आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी ने अगुवाई की है। बंगला भाषा के बाद सबसे अधिक भागीदारी हिन्दी सीखने वाले मणिपुरी भाषियों की है। मगर फिर भी भूमिगत संगठनों और उनके समर्थक संगठनों द्वारा सन् १९७९ और १९८९ में हिन्दी का झंडा गाड़ने की कोशिश की गई।

अमन?

मिलाकर आज ११ आतंकवादी संगठन हिंसारत हैं। सभी संगठन जबरन धन वसूली में लगे हुए हैं। एन.एस.सी.एन. को तो विदेशों से भी करोड़ों रुपया मिलता रहा है। मणिपुर में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों, खोमचा या फेरी लगाकर व्यवसाय करने वालों तक से रुपया वसूला जाता है। किसी गांव का आज ऐसा कोई घर नहीं मिलेगा जिसे भूमिगत संगठन के लोगों के खाने-पीने की व्यवस्था न करनी पड़ी हो। यहां के सभी राजनीतिक, सामाजिक और छात्र संगठन आदि इन भूमिगत संगठनों का परोक्ष समर्थन ही करते दिखते हैं।

ए.एफ.एस.पी. एक्ट और पोटा

११ जुलाई को थांजम मनोरमा की कथित हत्या होने के बाद १५ जुलाई को १२ वृद्धाओं ने निर्वस्त्र प्रदर्शन किया था। मणिपुर राज्य के विधायकों ने १५ अगस्त की चेतावनी तिथि तय की थी। आखिरकार केवल इम्फाल नगरपालिका क्षेत्र से इस विवादित अधिनियम को हटाया गया है।

३० सितम्बर को भाकपा के ए.बी. बर्धन ने कहा था, १९५८ के उक्त अधिनियम पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। जब तक इस कानून को मणिपुर से नहीं हटाया जाता तब तक मणिपुर में शांति नहीं आयेगी। इसी के साथ यह भी जरूरी है कि भूमिगत संगठन आगे आकर मणिपुर सरकार की मध्यस्थता में भारत सरकार के साथ संघर्षविराम का वचन देकर बातचीत करें।

३० सितम्बर को शिलांग में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री थांवरचंद गहलोत ने कहा था, कांग्रेस के नेतृत्व में बनी डा. मनमोहन सिंह की सरकार पोटा को हटाने के लिए बहुत व्यग्र है। इसको हटाने से आतंकवाद निरंकुश हो जाएगा। पूर्वोत्तर से शांति कोसों दूर दिखती है। भाजपा विधायक श्री मैनम भरत सिंह ने शिलांग में कहा, 'पूर्वोत्तर की जनता शांति चाहती है। यह शांति कौन देगा, सरकार या भूमिगत संगठन?' उधर सुरक्षाबलों का कहना है कि वे गुप्तचरों की पक्की सूचना पर कार्रवाई करते हैं। लेकिन थांजम मनोरमा का

गांव का आज ऐसा कोई घर नहीं मिलेगा जिसे भूमिगत संगठन के लोगों के खाने-पीने की व्यवस्था न करनी पड़ी हो। यहां के सभी राजनीतिक, सामाजिक और छात्र संगठन आदि इन भूमिगत संगठनों का परोक्ष समर्थन ही करते दिखते हैं।

शरीर चाहे जिस हालात में मिला पर मिला तो, कई लोगों का तो कोई पता नहीं है कि उन्हें कौन उठाकर ले गया, कहां मार कर फेंका या जला दिया गया है।

मणिपुर में पुलिस और प्रदशनकारियों के बीच इस तरह की झड़पें आज आम दृश्य है

पूर्वोत्तर में आम हड़ताल

५ अक्तूबर को सुबह ५ बजे से शाम ५ बजे तक 'नार्थ ईस्ट स्टूडेन्ट्स आर्गेनाइजेशन' ने मणिपुर, असम, नागालैंड, अरुणाचल, मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा में आम हड़ताल का आह्वान किया था। उनकी मांग थी कि- १. ए.एफ.एस.पी.एक्ट- १९५८ को पूर्वोत्तर से हटाया जाय और शांति का रास्ता खोला जाय। २. पूर्वोत्तर में बाहर से आने वालों को रोके जाने की व्यवस्था की जाय। ३. पूर्वोत्तर राज्यों की सरकारी, निजी, अर्ध सरकारी नौकरियों में शत-प्रतिशत आरक्षण व नियुक्ति पूर्वोत्तर से ही की जाय। एन.एस.सी.एन. (आई-एम) मणिपुर के पूरे पहाड़ी क्षेत्र को नागा क्षेत्र घोषित करना चाहता था तथा कूकी जनजाति पर भी अपना आधिपत्य चाहता था। उसकी यह भी कोशिश थी कि नागालैंड से जिस तरह कूकी जाति को निकाला गया उसी तरह वे उसे मणिपुर के पहाड़ी इलाकों से निकाल दें। इसके लिए सन् १९९० में सशस्त्र हमले किए गए। हजारों कूकियों के साथ हजारों नागा भी मारे गए। वह दौर बीत चुका है। आज मणिपुर की जनता शांति चाहती है, अमन चाहती है। पूर्वोत्तर राज्यों की आज एकमात्र चिंता यही है। ■

पूर्वोत्तर में, विशेषकर मणिपुर में एन.एस.सी.एन (आई-एम) को मिलाकर आज ११ आतंकवादी संगठन हिंसारत हैं। सभी संगठन जबरन धन वसूली में लगे हुए हैं। एन.एस.सी.एन. को तो विदेशों से भी करोड़ों रुपया मिलता रहा है। मणिपुर में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों, खोमचा या फेरी लगाकर व्यवसाय करने वालों तक से रुपया वसूला जाता है।

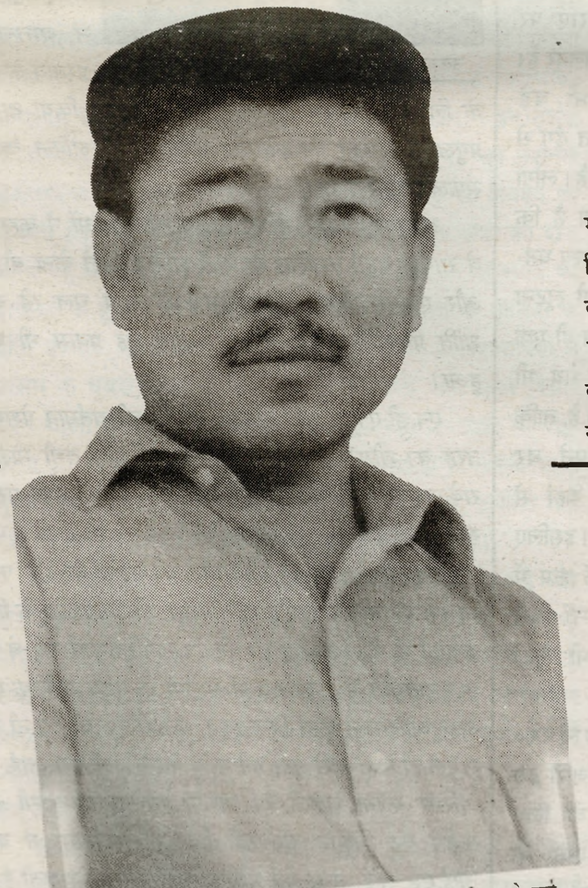
एन.एल.एफ.टी. का 'कमांडर इन चीफ' मंटू कोलाई

सीखने वाले मणिपुरी भाषियों की है। मगर फिर भी भूमिगत संगठनों और उनके समर्थक संगठनों द्वारा सन् १९७९ और १९८९ में हिन्दी का झंडा गाड़ने की कोशिश की गई। लेकिन जनता ने उसका समर्थन नहीं किया। १५ जुलाई, २००४ के बाद से विवादित कानून हटाए जाने की मांग पर पूरे मणिपुर में एक बड़ा आंदोलन शुरू हुआ, जो अब भी जारी है। मणिपुर के सिनेमाघरों में हिन्दी फिल्मों तथा केबल टेलीविजन पर भी हिन्दी फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगाई गई। यहां तक कि हिन्दी फिल्मी गीतों के कैसेटों की बिक्री पर रोक लगाई गई और उन्हें एकत्र कर बार-बार जलाया गया। आज ७० प्रतिशत सिनेमाघर बंद हैं। कहा यही गया कि हिन्दी फिल्में और फिल्मी गीत मणिपुरी समाज में अनैतिकता फैलाते हैं।

मणिपुर में नेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन आफ इंडिया, आल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् छात्र संगठन हैं। एमसू (आल मणिपुर स्टूडेन्ट्स यूनियन) के अलावा डेसाम तथा मणिपुर स्टूडेन्ट्स फ्रंट आफ इंडिया भी हैं। इसके अलवा नागा व कूकी जनजाति के छात्र संगठन हैं। छात्र संगठन राजनीतिक प्रशिक्षण की पाठशाला माने जाते हैं। असम छात्र संघ वालों ने असम छात्रगण परिषद् और फिर असम गण परिषद् बनाकर असम का राज सिंहासन प्राप्त किया था। मणिपुर में छात्र संगठनों को ऐसी सफलता तो नहीं मिल पाई है। मगर उन्हें मणिपुर में राजनीति करने वाले नेताओं तथा परोक्ष रूप से भूमिगत संगठनो का समर्थन मिलता रहा है।

मणिपुर में कुछ छात्र संगठनों के आह्वान पर २१ सितम्बर से हिन्दी और एन.सी.पी. की शिक्षा पर प्रतिबंध लग गया है। उन्होंने घोषणा की है कि हिन्दी और एन.सी.सी. के पठन-पाठन पर तब तक रोक लगाई जायेगी जब तक मणिपुर से ए.एफ.एस.पी. एक्ट नहीं हटाया जाता है। मणिपुर के लाखों छात्रों को पूरे शैक्षिक वर्ष की हानि होने का भय है। ■

मणिपुर में कुछ छात्र संगठनों के आह्वान पर २१ सितम्बर से हिन्दी और एन.सी.पी. की शिक्षा पर प्रतिबंध लग गया है। उन्होंने घोषणा की है कि हिन्दी और एन.सी.सी. के पठन-पाठन पर तब तक रोक लगाई जायेगी जब तक मणिपुर से ए.एफ.एस.पी. एक्ट नहीं हटाया जाता है। मणिपुर के लाखों छात्रों को पूरे शैक्षिक वर्ष की हानि होने का भय है।

हिन्दू वॉइस
राष्ट्रभक्तों की धड़कन
HINDU VOICE
The Heartbeat of Nationalists
हिन्दी और अंग्रेजी मासिक
Hindi RNI No. MAHHIN/2003/12932
Eng. RNI No. MAHENG/2002/6954
हिन्दुत्व का प्रचार
राष्ट्रीयता का प्रसार
हिन्दुओं की बुलंद आवाज
हिन्दू विरोधियों पर गाज
सदस्यता शुल्क (हिन्दी या अंग्रेजी):
एक वर्ष 100रु. – तीन वर्ष 250रु.
आजीवन 1000रु.
(चेक "हिन्दू वॉइस" के नाम जारी करें)
हिन्दू वॉइस
4, अलकज्योत, आरे रोड,
गोरेगांव (पूर्व), मुम्बई 400063
Tel: 28764418/28764460/28742812
Email: hinduvoice@vsnl.net

असम

मानकाचर का सच

■ प्रतिनिधि

२२ सितम्बर, २००४ को शाम चार बजे मानकाचर (धुबरी) की सब्जी मंडी में एक जोरदार बम धमाका हुआ। धमाके की गूंज चार किलोमीटर दूर तक सुनाई दी थी। मानकाचर के इतिहास में इस तरह का यह पहला बम धमाका था। उस धमाके ने एक दुकानदार अखिल पाल (४२) के शरीर को दस-बारह फुट ऊपर उछाल कर लगभग पांच मीटर की दूरी पर ले जाकर चीथड़े-चीथड़े करके फेंका था। पांच लोग घायल भी हुए थे। इससे पूर्व मानकाचर में तीन-चार माह पहले एक बस में बम मिला था तभी से लोग किसी अनहोनी घटना के प्रति आशंकित थे।

बंगलादेशी घुसपैठियों से पटते जा रहे मानकाचर की इस घटना के बारे में लोग कहते हैं कि स्थानीय मुस्लिमों की सहायता से इस्लामी आतंकवादियों ने इससे अंजाम दिया है। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि यहां खुद को आई.एस.आई. का एजेन्ट बताते हुए खुलेआम घूमने वालों की कोई कमी नहीं है। उल्लेखनीय है कि मानकाचर से लगभग १ कि.मी. दूर बंगलादेश का बराइबारी क्षेत्र वही स्थान है जहां अप्रैल, २००१ में बंगलादेशियों ने सीमा सुरक्षा बल के १६ जवानों की नृशंस हत्या कर दी थी। स्वाधीनता के समय से ही यहां का इतिहास कुछ अजीब रहा है। १९४७ में यहां के मुस्लिम लीगियों ने मानकाचर के दक्षिण में स्थित शालमारा अनुमण्डल को पाकिस्तान में मिलाने की साजिश रची थी। किन्तु वे लोग अपनी साजिश में सफल नहीं हुए, पर यही टिके रहे। १९६५ में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय देशद्रोह के आरोप में इन्हीं में से कुछ लोग जेल भी गए थे और बाद में छूटकर प्रदेश के 'माननीय' मंत्री भी बने।

मानकाचर के लोग १९९४-९५ से ही विषम स्थिति का सामना कर रहे हैं। १९९५ में दीपावली के दिन कुछ बदमाशों ने मिलकर सीमा सुरक्षा बल के एक जवान को बीच बाजार में ही आग लगाकर जलाने की कोशिश की थी। हालांकि बुरी तरह घायल होने के बाद भी वह जवान बच गया था। फिर उन्हीं लोगों ने प्रशासन पर दबाव डालकर सीमा सुरक्षा बल के जवानों को बाजार में रात्रि गश्त से हटवा दिया था। जबकि नियमानुसार सीमा से तीन कि.मी. अंदर का क्षेत्र सीमा सुरक्षा बल की निगरानी में ही रहना चाहिए और मानकाचर तो सीमा से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर है।

सीमा सुरक्षा बल के जवानों का रात्रि गश्त बन्द हो जाने के बाद यहां डकैती की घटनाओं का दौर चल पड़ा और अभी भी यह बदस्तूर जारी है। यहां तक कि जिस शाम को बम धमाका हुआ उस रात भी सविता मुखर्जी नामक एक महिला के घर डाका डाला गया। धन-सम्पत्ति लूटने के बाद डकैतों ने मकान मालकिन और मनोज नाम के एक लड़के को चाकू मारकर बुरी तरह घायल कर दिया। डकैतियां भी अधिकांश हिन्दू घरों में ही होती हैं। पूजा स्थलों को भी नहीं छोड़ा जाता। स्थानीय कामख्या मंदिर और शनि भगवान के मंदिर में बराबर चोरी की घटनाएं होती हैं। डकैती की घटनाओं से परेशान होकर सीमावर्ती क्षेत्रों के हिन्दू घर-द्वार छोड़कर अन्यत्र कहीं किराए पर रहने को मजबूर हैं। डकैती भी बड़े सुनियोजित ढंग से की जाती है। लोगों का मानना है कि इसका उद्देश्य धन-सम्पत्ति तो लूटना है ही साथ ही एक तरह का भय भी पैदा करना है, ताकि लोग अपने घर छोड़कर यहां से चले जाएं। इसलिए डकैती के क्रम में मां-बहनों की इज्जत भी लूटी जाती है।

पिछले १० साल से जारी इस आतंक के लिए पुलिस एक भी व्यक्ति को पकड़ तक नहीं पाई है। इसलिए लोगों का पुलिस-प्रशासन से विश्वास उठ चुका है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि यही स्थिति रही तो वह दिन दूर नहीं जब यहां के हिन्दू भी शरणार्थी बनकर दर-दर भटकेंगे। ■

■ गुवाहाटी से अमरनाथ दत्ता

उल्फा में दरार

८ अक्तूबर को नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट आफ बोडोलैण्ड (एन.डी.एफ.बी.) के अध्यक्ष डी.आर. नाबला द्वारा केन्द्र के साथ बातचीत के लिए संघर्षविराम की पेशकश की गई। इसके कुछ ही घंटे बाद उल्फा प्रमुख अरविन्द राजखोवा और कमांडर इन चीफ परेश बरूआ के बीच गहरे मतभेदों की खबर फैली। इससे केन्द्रीय गृह मंत्रालय और असम सरकार ने थोड़ी राहत की सांस ली है। अरविन्द राजखोवा संगठन के ताने-बाने की चिंता करता है तो परेश बरूआ हमलों का संयोजन करता है।

असम सरकार के गुप्तचर प्रकोष्ठ के विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार बंगलादेश में छिपे अरविन्द राजखोवा ने केन्द्र के साथ क्षेत्र में शांति लाने संबंधी वार्ता के लिए सूत्र स्थापित किया है। राजखोवा आम लोगों से उल्फा को दूर कर रहीं हिंसक कार्रवाइयों को त्यागने का मन बना रहा है। लेकिन दूसरी ओर परेश बरूआ किसी तरह की बातचीत की बजाय हिंसा के जरिए मुद्दे सुलझाने का इच्छुक है। केन्द्र भी बरुआ की अनदेखी करते हुए राजखोवा के साथ बातचीत की योजना बना रहा है।

इस बीच असम सरकार ने एन.डी.एफ.बी. से प्रस्तावित बातचीत की रूपरेखा तैयार करने का केन्द्र से अनुरोध किया है। चूंकि एन.डी.एफ.बी. की प्रमुख मांग संप्रभु बोडोलैंड की है और इसी पर वार्ता होनी है, इसलिए यह विषय केवल केन्द्र के अधीन ही है, राज्य सरकार तो प्रस्तावित वार्ता में सहयोग मात्र दे सकती है।

उल्फा का 'कमांडर-इन-चीफ' परेश बरुआ

राज्य के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई प्रस्तावित बातचीत के निष्कर्ष को लेकर चिंतित बताए जाते हैं। पहले भी अप्रैल, २००१ में एन.डी.एफ.बी. ने बातचीत के प्रस्ताव के अध्ययन के लिए तीन सदस्यीय एक समिति का गठन किया था जिसके प्रमुख थे संगठन के उपाध्यक्ष धीरेन बोडो। लेकिन वह प्रयास सफल नहीं रहा था।

अक्तूबर, २००२ में एन.डी.एफ.बी. नेताओं ने कहा था कि वे सार्थक वार्ता के लिए तैयार हैं लेकिन पहले केन्द्र बी.एल.टी. और एन.एस.सी.एन. (आई.एम.) के साथ चल रहे दो अन्य शांति प्रयासों को पूरा कर ले। अतः वह प्रयास भी धराशायी हुआ।

एन.डी.एफ.बी. के अध्यक्ष नाबला की वर्तमान पेशकश इस तरह का तीसरा प्रयास है, जिसका परिणाम तभी मालूम चल सकेगा जब यह गुट संघर्षविराम की अपनी बात पर सच्चा साबित होगा।

इस बीच ९ व १० अक्तूबर को राज्य के दौरे पर आया भाजपा का तीन सदस्यीय दल असम और नागालैंड के हिंसाग्रस्त इलाकों में भी गया जहां ८० निर्दोष नागरिक मारे गए थे। बाद में एक बातचीत में राज्यसभा में भाजपा के मुख्य सचेतक एस.एस. अहलुवालिया ने कहा कि उल्फा, एन.डी.एफ.बी., ए.टी.टी.एफ., ए.एल.टी.एफ. जैसे गुटों की मदद करके आई.एस.आई. देश को अस्थिर करना चाहती है। भाजपा इस पर देशव्यापी आंदोलन छेड़ने पर विचार कर रही है। अहलुवालिया ने कहा कि आई.एस.आई. उत्तर-पूर्व में एक मोर्चा खोलना चाहती है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य कांग्रेस ने १९९८ के लोकसभा चुनावों और २००१ के राज्य विधानसभा चुनावों में उल्फा की सहायता ली थी। उन्होंने दावा किया कि उत्तर-पूर्व में हाल के आतंकवादी विस्फोट राज्य की कांग्रेस सरकार की नाकामी का सबूत हैं।

उधर केन्द्र सरकार ने एन.डी.एफ.बी. से बातचीत के लिए आत्मसमर्पित गुट बी.एल.टी. के अध्यक्ष और अंतरिम बोडोलैंड क्षेत्रीय परिषद् के मुख्य कार्यकारी सदस्य हंग्रामा बसुमतारी को जिम्मेदारी सौंपी है। इनसे कहा गया है कि वे एन.डी.एफ.बी. के संघर्षविराम की उचित समीक्षा करें।

केन्द्र चाहता है कि एक बार बी.एल.टी. संघर्षविराम की पुष्टि कर दे तो वह एन.डी.एफ.बी. के अध्यक्ष और कमांडर इन चीफ रंजन दैमारी के साथ त्रिपक्षीय शांति वार्ता शुरू किए जाने पर विचार करेगा। ■

चारों वेदों का सम्पूर्ण पारायण पहली बार (C.D.) में

वेद मनुष्यों के जीवन में होने वाले सारे वैदिक कर्म, यज्ञ आदि का एकमात्र स्रोत है और सारे संसार के विविध क्षेत्रों में ज्ञान का मूल आधार है। हमारे पुराने ऋषिमुनियों ने मानवता के ऊपर अपार करुणा से इस ज्ञान भण्डार को शताब्दियों से सुरक्षित रूप से पहुंचा दिया है। अब हमारा कर्तव्य है कि हम आगामी पीढ़ियों के लिए इस वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रूप से पहुंचायें। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए दिल्ली सूरजकुण्ड मार्ग फरीदाबाद में पुरानी गुरुकुल परम्परा में एक वेद पाठशाला की स्थापना हुई है जहां विद्यार्थियों को कृष्ण यजुर्वेद की शिक्षा और अन्य जीवनोपयोगी शिक्षा भी दी जा रही है। इन विद्यार्थियों की पूरी देखभाल पाठशाला के सुपुर्द है और इसके लिए हम जन साधारण की सहायता की प्रार्थना करते हैं। इन विद्यार्थियों के अन्न दान के लिए दी जाने वाली राशि अति पुण्यदायक है।

एक दिन में 10 विद्यार्थियों के अन्न दान के लिये रु० 360/- धनराशि देने वाले दातागण को चारों वेदों में से एक वेद का सम्पूर्ण पारायण (C. D.) प्रसाद के रूप में दिया जाएगा।

एक दिन में सारे विद्यार्थियों के अन्न दान के लिए रु० 1200 धन राशि देने वाले दाताओं के लिए चारों वेदों का सम्पूर्ण पारायण (C.D.) प्रसाद के रूप में दिया जायगा।

यह पारायण दक्षिण और उत्तर भारत के प्रकाण्ड विद्वानों के द्वारा निहित स्वर में बहुत सुचारू रूप में हुआ है।

जन साधारण दातागण से हमारी प्रार्थना है कि इस पुण्यप्रद अन्नदान कार्य में हमारी सहायता करें और अपने घर में वेद ध्वनि गूंजते रहने का अवसर प्राप्त करें और साथ साथ अपने मित्र व बन्धुवर्ग को इस ज्ञान भण्डार की अनोखी भेंट दें। इस भेंट से आप इस पुण्यप्रद कार्य में हमारी सहायता करने के साथ साथ वेदों के प्रसार के भागी भी बनेंगे। आपको और अपने कुटुम्ब के लिए अखण्ड सुख और सौभाग्य और सारे देवताओं के अनुग्रह प्राप्त होंगे यह हमारा निश्चय है। दीपावली व नववर्ष के लिए एक अनोखी भेंट हो सकती है। घर घर में वेद ध्वनि गूंज उठेगी तो समस्त वातावरण सुख और शान्तिपूर्ण होगा। हर शुभचिन्तक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपने घर में किसी भी एक वेद का (C.D.) अपने घर में कोष के तरह सम्भाल कर रखें।

बड़े उद्योग व अन्य स्थापनों में प्रबन्ध कार्य से सम्बन्धित लोग अपने हितैषियों के लिए हर वर्ष दिये जाने वाले भेंट के रूप में इस वेद पारायण (C.D.) को दे सकते हैं।

अधिक संख्या में भेंट देने के इच्छुक सीधे या दूरभाष न० (9818088224) में सम्पर्क कर सकते हैं।

धन राशि युवर फैमिली फ्रेंड, (Your Family Friend,) नई दिल्ली के नाम धन-आदेश (MO) या (DD) के रूप में भेजी जा सकती है। चैक के माध्यम धन राशि भेजने वाले दातागण 20/- रु० (Bank Commision) को भी धन राशि के साथ सम्मिलित करके भेजें। दातागण अपने नाम, पता, दूरभाष और अपनी चाह धन आदेश कूपन में व अपने पत्र में साफ अक्षरों में लिखकर भेजें। प्रसाद (Courier) से भेजा जायगा।

जी० के० सीतारामन्
C/o युवर फैमिली फ्रैंड
ए- 437, डबल स्टोरी,
कालकाजी, नई दिल्ली-110019
फोन न०.011-26219385, 26428796,
Resi. 0129-2512882

कैसे हो आतंक का सामना?

■ मा.गो. वैद्य

कश्मीर मोर्चे पर फिलहाल कुछ शांति है, पर पूर्वोत्तर भारत हिंसा झेल रहा है। यदि कोई यह समझे कि कश्मीर में दिख रही थोड़ी-बहुत शांति का कारण पाकिस्तान का हृदय परिवर्तन या पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में मारे गए आतंकवादियों के गौरवगान में आई रोक है, तो सर्वथा गलत ही होगा। वास्तव में अमरीका ने पाकिस्तान की लगाम कसी हुई है। ११ सितम्बर, २००२ को अमरीका के मान-बिन्दुओं पर हुए आक्रमण से अमरीका ने अपनी नीतियों में जो परिवर्तन किए हैं, यह उसका परोक्ष परिणाम है।

हैदराबाद में पीपुल्स वार ग्रुप की सभा में नक्सलवादी नेता गदर

नागालैण्ड, असम और शेष पूर्वोत्तर राज्यों में हिंसाचार की ज्वाला धधक रही है। दीमापुर रेल स्टेशन और उसके हांगकांग नामक बाजार में हुए विस्फोटों तथा नरसंहार को देखते हुए, नागालैण्ड को भारत से पृथक करने के लिए कार्यरत नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैण्ड (एन.एस.सी.एन.) पर शक की अंगुली उठती है। पर भारत सरकार ने तो इस संस्था के साथ युद्ध-विराम का समझौता किया हुआ है। अभी तक किसी भी संगठन ने इन नृशंस वारदातों की जिम्मेदारी तो नहीं ली है, पर संशय की सुई नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट आफ बोडोलैण्ड (एन.डी.एफ.बी.) पर अवश्य जा टिकती है। केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल इन क्षेत्रों का दौरा करने गए थे। उनका स्वागत ही बम विस्फोटों और निरीह लोगों की हत्याओं से हुआ। मानो इन आतंकवादियों ने भारत के गृहमंत्री के प्रति 'इज्जत' का इजहार किया हो। दूसरी ओर आतंकवादियों ने असम के धुबरी जिले में १० लोगों को मौत के घाट उतार दिया। मरने वालों में कौन थे, इसका विस्तृत विवरण तो पढ़ने को नहीं मिला, पर निश्चित रूप से उनमें हिन्दू अधिक रहे होंगे। बंगलादेश से घुसपैठ करके आए मुसलमानों को तो वे मारने से रहे, क्योंकि वही देश तो अभी आतंकवाद का आश्रय स्थान बना हुआ है।

स्वयं प्रधानमंत्री ने ही बंगलादेश में आतंकवादियों के अड्डे और प्रशिक्षण केन्द्र होने की पुष्टि की है। वहां का प्रशासन तो अभी भारत-द्वेषी ही है, अतः वहां की सरकार तो इन आतंकवादियों को रोकने से रही। अमरीका के डर से पाकिस्तान पश्चिम में आतंकवाद फैलाने से थम गया है। इसी काम को अब बंगलादेश पूर्वी क्षेत्र में अंजाम दे रहा है।

डरपोक हिन्दू

भारत सरकार की हिंसा के प्रति घबराहट उल्फा, एन.डी.एफ.बी., एन.एल.एफ.टी. आदि प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों द्वारा चलाई जा रही कार्रवाइयों में तेजी का कारण हो सकता है। भारत सरकार चाहे वर्तमान या पूर्व की, जो भले खुद को पंथनिरपेक्ष बताती रहे, सारा विश्व उसे एक हिन्दू सरकार ही समझता है। हिन्दू तो वैसे ही हिंसाचार से डरता है। अखंड भारत का जनादेश प्राप्त करने के बावजूद कांग्रेस दल ने देश का विभाजन क्यों स्वीकार किया? इसका कारण कलकत्ता में ११ अगस्त, १९४६ में हुए 'डायरेक्ट एक्शन' को बताया जाता है, जिससे हिन्दू घबरा गया था। यह धारणा पक्की हो गई है कि हिन्दू डरपोक है, भीरू है। कश्मीर से हिन्दुओं को इन्हीं आतंकवादी हथकण्डों से भगाया गया। शेष भारत ने भले ही चीख-पुकार मचाई पर उसके मंसूबे तो सफल हो ही गए।

आंध्र प्रदेश का उदाहरण

ताजा उदाहरण आंध्रप्रदेश का ही लें। पीपुल्स वार ग्रुप और अन्य आतंकवादी संगठन प्रतिबंधित थे। सरकार तो उन पर काबू पा नहीं सकी, उल्टे उन पर लगा प्रतिबंध हटाकर उनसे बातचीत कर रही है। प्रतिबंध से छूटे संगठन स्थान-स्थान पर जमावड़े आयोजित कर रहे हैं तथा लोकप्रियता हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। लोकप्रियता के लिए वह चुनाव मैदान में क्यों नहीं उतरते? कश्मीर में हुर्रियत चुनाव मैदान में नहीं उतरती, पर चुनावों का बहिष्कार अवश्य करती है और कश्मीरी जनता का प्रतिनिधि होने का दम भरती है। उसे पाकिस्तान का समर्थन इसलिए प्राप्त है, क्योंकि वह पाकिस्तान के हितों की सुरक्षा जो करती है। भारत के आजाद होने के बाद तेलंगाना के इसी क्षेत्र में कम्युनिस्टों ने फसाद किया था, पर भारत सरकार ने उनके सम्मुख वार्ता का कोई प्रस्ताव नहीं रखा, बल्कि अपने शस्त्रों के बल पर इस आंदोलन को सदा के लिए दफना दिया। उस समय गृहमंत्री सरदार पटेल थे, शिवराज पाटिल नहीं।

अपने पैरों पर कुल्हाड़ी

प्रधानमंत्री तो कहते हैं कि बंगलादेश आतंकवादियों का आश्रय स्थल बना हुआ है, तो वे उससे जवाब क्यों नहीं मांगते? गुलाम कश्मीर में आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविर हैं, तो उन्हें हमारे लड़ाकू विमानों का लक्ष्य क्यों नहीं बनाया जाता? कारगिल युद्ध और बाद में संसद पर हुए हमले के समय यह कदम क्यों नहीं उठाया गया? प्रत्यक्ष नियंत्रण रेखा की पवित्रता बनाए रखने की जिम्मेदारी क्या अकेले भारत की ही है, पाकिस्तान की नहीं? सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत में १ करोड़ २० लाख बंगलादेशी घुसपैठिए हैं, पर केन्द्र में सत्तासीन गठबंधन के मुख्य घटक कांग्रेस के ही मुख्यमंत्री सरेआम वक्तव्य दे रहे हैं कि उनके राज्य असम में एक भी बंगलादेशी घुसपैठिया नहीं है। ऐसे में बंगलादेश क्यों डरे?

सीमा पर बाढ़ हम लगाते हैं, पाकिस्तान क्यों नहीं लगाता? नियंत्रण रेखा का आदर हम करते हैं, पाकिस्तान क्यों नहीं करता? पीपुल्स वार ग्रुप या हुर्रियत कांफ्रेंस चर्चा की पहल क्यों नहीं करते, भारत सरकार ही क्यों पहल करे?

हिम्मत बढ़ने का कारण

अमरीका के दो मान-बिन्दुओं पर आक्रमण क्या हुआ, उसने पूरे अफगानिस्तान को रौंद डाला, तालिबान को दर-बदर कर दिया और अपने समर्थन की सरकार बना दी। अफगानिस्तान की सीमा तो अमरीका से लगी नहीं है, पर केवल ओसामा बिन लादेन को आश्रय दिए जाने की बात कह कर तालिबान पर चढ़ाई कर दी। यहां हमारी सीमाओं पर खुलेआम आक्रमण हो रहा है। लोकतंत्र के प्रतीक संसद पर हमला हो जाता है, पर हम केवल बातें ही करते रह जाते हैं। ऐसा लग रहा है कि आंध्रप्रदेश के नक्सली संगठनों से जिस प्रकार सम्मानपूर्वक बातचीत की जा रही है, उसी प्रकार पूर्वोत्तर के आतंकवादी गुट भी सरकार को झुकाकर अपनी बातें मनवाने की तैयारी में जुट गए हैं। भारत सरकार को झुकाने के लिए ही वे कार्यवाहियों को अंजाम दे रहे हैं।

जैसे को तैसा

इस आतंकवाद को समाप्त करने का तरीका क्या हो? नीति विशेषज्ञों का तो कहना है कि हिंसा से हिंसा नहीं दबाई जा सकती। भगवान बुद्ध ने भी अपने उपदेशामृत में यही कहा है, दुश्मनी करने से दुश्मनी समाप्त नहीं होती। आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से यह बात भले ही ठीक लगती हो, पर व्यावहारिक दृष्टि से इससे कैसे निपटा जाए? पाश्चात्य देशों में भी तो नीति विशेषज्ञ होते हैं। हिंसाचार को समाप्त करने के लिए कठोर हिंसा का अवलंबन करना ही पड़ता है। सवाल यह उठता है कि बारह वर्ष वनवास और फिर एक वर्ष का अज्ञातवास खत्म करने के बाद भी सुई की नोंक बराबर भूमि भी न देने के हठ से कैसे निपटा जाए? एक बार के लिए यह मान भी लें कि अमरीका की एशियाई नीति के कारण ही इस्लामी आतंकवाद पनप रहा है। तो इधर कश्मीरी हिन्दुओं ने ऐसी कौन सी कार्रवाई की थी, जिससे उन्हें अपनी जमीन छोड़नी पड़ी? उन्हें क्यों जबरन खदेड़ा जा रहा है? हिंसाचार के सम्मुख नतमस्तक होने से हिंसाचार खत्म होता है, विश्व इतिहास में ऐसा कतई नहीं हुआ है। गत सौ वर्षों में महात्मा गांधी जैसा शांति-पूजक नेता दूसरा कोई हुआ ही नहीं! फिर भी क्या वे हिंसाचार को रोक सके? कलकत्ता में 'डायरेक्ट एक्शन' के लिए क्या गांधी जी उत्तरदायी थे? कलकत्ता में हुए नरसंहार की प्रतिक्रिया जब बिहार में हुई तभी कलकत्ता शांत हुआ। पीड़ित जनता की यदि कुछ मांगें हों तो उन पर पुनर्विचार होना ही चाहिए। परन्तु हिंसाचार और बलपूर्वक उस पर काबू पाने में असफलता के कारण उनकी मांगों पर विचार करना न तो राजनीति है न ही युद्ध नीति। इससे तो आतंकवादियों का मनोबल और ऊंचा उठता है। बंगलादेश और पाकिस्तान को तो भारत से डरना ही चाहिए, जबकि घबराते हम हैं। सीमा पर बाढ़ हम लगाते हैं, पाकिस्तान क्यों नहीं लगाता? नियंत्रण रेखा का आदर हम करते हैं, पाकिस्तान क्यों नहीं करता? पीपुल्स वार ग्रुप या हुर्रियत कांफ्रेंस चर्चा की पहल क्यों नहीं करते, भारत सरकार ही क्यों पहल करे? ■

कभी इनके सिर पर लाखों का इनाम घोषित था, पर आज पुलिस की सुरक्षा में ये आम सभाओं में जाते हैं - हैदराबाद में पी.डब्ल्यू.जी. के राज्य समिति सचिव अक्किराजू हरिगोपाल उर्फ रामकृष्ण तथा तेलंगाना क्षेत्रीय सचिव गणेश

स्मृति शेष-दत्तोपंत ठेंगडी

सूरीनाम में भारतवंशियों के आगमन की प्रतीक 'माई-बाप प्रतिमा' के समक्ष श्री दत्तोपंत ठेंगडी

त्रिनिदाद में त्रिनिनादेश्वर महादेव का पूजन

गुयाना यात्रा के दौरान वहां के तत्कालीन राष्ट्रपति एस. हिन्ड्स के साथ भेंट करते हुए

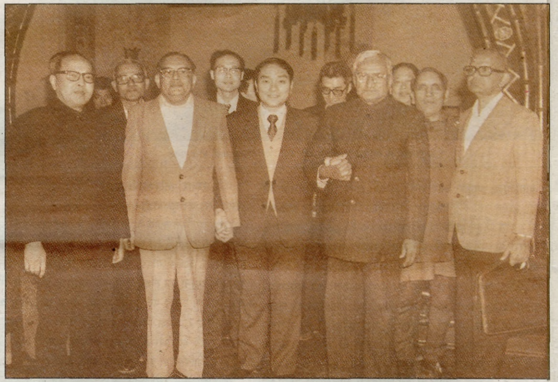

चीन के आमंत्रण पर भा.म.संघ के पदाधिकारियों के साथ दत्तोपंत चीन यात्रा पर गए थे। उस दौरान लिए गए इस चित्र में चीनी श्रमिक संगठन प्रतिनिधियों के साथ

त्रिनिदाद व टोबैगो के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वासुदेव पांडे के साथ वार्ता करते हुए

मास्को में तत्कालीन राष्ट्रपति बोरिस येल्त्सीन के सचिव एवं राजनीतिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष अलेक्सान्द्र तीखानोव के साथ श्री दत्तोपंत ठेंगडी। चित्र में उनके साथ हैं श्री ब्रह्मदेव उपाध्याय एवं श्री अशोक सिंहल

श्रमिकों के संघर्ष में साथ-साथ : नई दिल्ली में भा.म.संघ की विशाल विरोध रैली का नेतृत्व करते हुए श्रम-ऋषि

राष्ट्र-ऋषि का महाप्रयाण

अनथक यात्री की अन्तिम यात्रा- पुष्पसज्जित वाहन पर स्व. दत्तोपंत ठेंगडी की पार्थिव देह के साथ श्री मोहन राव भागवत व अन्य

राष्ट्र-ऋषि को अंतिम प्रणाम...स्व. ठेंगडी को अंतिम प्रणाम निवेदित करते हुए (बाएं से)- श्री कुप्.सी. सुदर्शन, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी (साथ में हैं श्री नरेन्द्र मोदी) एवं श्री अशोक सिंहल

स्व. ठेंगडी के परिजनों को ढाढस बंधाते हुए श्री सुदर्शन

परम तेज में विलीन तेज

स्व. ठेंगडी के भतीजे श्री सतीश ठेंगडी को सांत्वना देते हुए श्री सुदर्शन

अंत्येष्टि स्थल पर उपस्थित शोकमग्न सहकर्मी, मित्र, समर्थक, परिचित... ➪

२७ से ३० अक्तूबर तक रांची में होगा

वनवासी बाल संगम

झारखंड की राजधानी रांची में आगामी २७ से ३० अक्तूबर, २००४ तक विद्या भारती विद्यालयों के पन्द्रह हजार वनवासी बच्चों का विराट बाल संगम आयोजित होगा। बालकों के इस महाकुंभ को 'अखिल भारतीय वनवासी जनजातीय बाल संगम' की संज्ञा दी गई है। इसका उद्देश्य वनवासी समाज की सुषुप्त प्रतिभाओं को जगाना है। गत २७ सितम्बर को रांची में विद्या भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी', राष्ट्रीय मंत्री श्री शांतनु शेंडे एवं राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री श्री प्रकाशचंद्र की उपस्थिति में बाल संगम के लिए भूमि-पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रांतों के विद्या भारती प्रतिनिधियों के अलावा बड़ी संख्या में गण्यमान्यजन उपस्थित थे। बाल संगम के संयोजक डा. रमाकांत के अनुसार इस शिविर में कक्षा ३ से कक्षा ७ तक के वनवासी छात्र भाग लेंगे।

शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि होंगे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री कुप्.सी. सुदर्शन और अध्यक्षता करेंगे शांतिकुंज, हरिद्वार के प्रमुख डा. प्रणव पंड्या। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत होंगे। ■ **हिमांशु कुमार वर्मा**

भूमि-पूजन के अवसर पर भाई जी

राजस्थान

मानव प्रबोधन न्यास का गीता प्रतियोगिता आयोजन

बालमन और गीता

गत दिनों बीकानेर में मानव प्रबोधन न्यास ने विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों के छात्रों के बीच एक अनूठी गीता प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता न्यास के संस्थापक-अध्यक्ष

गीता प्रतियोगिता में शंकर ने भाग लिया तो शाहिद ने भी

स्वामी संवित् सोमगिरी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। विश्व के बदलते परिप्रेक्ष्य में गीता का महत्व पुनः स्थापित करने और देश की भावी पीढ़ी को विश्व के महानतम ग्रन्थ से परिचित कराने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष यह आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिता में लगभग ३३ हजार छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र भी सम्मिलित हुए। गीता के बारे में उनके ज्ञान की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कक्षा छह के विद्यार्थी शाहिद अली का कहना था कि वह दूसरी बार इस प्रतियोगिता में भाग ले रहा है। उसके अभिभावकों ने भी उसका पूरा सहयोग दिया। वह बालक तो है पर यह भी बखूबी जानता है कि इस तरह के आयोजनों से साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ेगा और पुण्य ग्रंथों के बारे में जानकारी मिलेगी।

प्रतियोगिता में विभिन्न आयुवर्गों-शिशु, कनिष्ठ, वरिष्ठ एवं महाविद्यालय स्तर- के लिए लिखित, श्लोक वाचन, निबंध लेखन एवं भाषण कला जैसे विविध आयामों को रखा गया था। बाद में विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत भी किया गया। ■**प्रतिनिधि**

गीता प्रतियोगिता में भाग ले रहे बच्चों के साथ स्वामी सोमगिरि महाराज

सुनो कहानी

क्यों छोड़ूं हरिनाम?

*बंगाल के बूड़न ग्राम के एक मुस्लिम परिवार में एक बालक जन्मा। उस बालक को बचपन से सिर्फ एक ही नाम की रट और धुन लग गई, वह था, 'हरिनाम'। वह बालक 'हरि बोल। हरि! हरि! बोल' के अलावा और न कुछ पढ़ सका- न जान सका। वह गांव के जंगल में जाकर रहने लगा। रात-दिन 'हरि! हरि!' कहना-रटना ही उसका एकमात्र काम था। समय गुजरने पर वह बालक अच्छा-खासा सुन्दर युवक दिखने लगा। पास के गांव से भिक्षा मांग कर वह खा लेता था, वह भी एक बार। उसका नाम अब हर जगह 'हरिदास' प्रचलित हो गया। माता-पिता द्वारा रखा गया उसका मुस्लिम नाम किसी को पता न था। उस गांव का जमींदार था, रामचन्द्र, जो बड़ा दुष्ट था। उसने हरिदास को बदनाम करने के लिए उसके पास एक सुंदर लड़की भेजी, जो नाचने-गाने का काम करती थी। जमींदार के भड़काने और धन का लालच देने पर वह लड़की तीन रात तक बराबर उसे रिझाने की कोशिश में लगी रही, पर उसे सफलता न मिली। एक दिन हरिदास ने उससे कहा, 'मुझे आज समय न मिला कि तुमसे बात करूं, कल करूंगा।' पर वह 'कल' कभी नहीं आया, क्योंकि हरिदास रोज रात-दिन ३ लाख बार हरिनाम जपते थे। वह लड़की देखती थी कि उन्हें तो भगवान का नाम रटने-जपने से दो घड़ी की भी फुर्सत नहीं। ३ रात तक हरिनाम सुनते-सुनते और उस पवित्र आत्मा की संगति से उस लड़की का मन-हृदय भी पवित्र हो गया। उसने हरिदास से क्षमा मांगी और निश्चय किया कि अब कभी मैं यह नाच आदि का पेशा नहीं करूंगी। उसने सब कीमती कपड़े-जेवर गरीबों को बांट दिए और फिर वह भी उसी जंगल में हरिदास के पास आकर रहने लगी। रात-दिन हरिनाम जपते-जपते उसका जीवन भी बदल गया, पवित्र हो गया। फिर हरिदास वह स्थान उस लड़की को देकर स्वयं शांतिपुर चले गए। वह जमाना मुसलमानों के शासन का था। वहां गोराई काजी का बड़ा दबदबा था। उस राज्य का मुसलमान शासक 'मुलुकमति' के कहे पर चलता था। गोराई काजी के उकसाने पर शासक ने हरिदास को पकड़वाया और कैदखाने में डलवा दिया। उससे कहा गया- 'कलमा पढ़ो, वर्ना कड़ी सजा दी जाएगी। काफिरों की तर्ज छोड़ दो।' पर हरिदास ने कहा- **'आमि ना छाड़िब हरिनाम भले जाय जान'**। तब उनको बाजार में २२ बार घुमाकर बेंत लगाने की सजा दी गई। हरिदास को बाजार में घुमा-घुमाकर बेंत मारे जाने लगे। कुछ देर बाद वे बेहोश हो गये। पर जब तक होश रहा हरिनाम लेते रहे। उस भक्त की ऐसी निष्ठा देखकर वह काजी और उस क्षेत्र का शासक (मुलुकपति)- दोनों हरिदास के अनुयायी बन गए। वे भी कलमा-कुरान और रोजा-नमाज छोड़कर हरिनाम ही गुंजाने लगे। अंत में हरिदास नवद्वीप में जाकर बस गए। उसके बाद चैतन्य महाप्रभु के ही आदेश से हरिदास जगन्नाथपुरी आ गए और वहां कांशी मिश्र के बाग में रहने लगे। उनके देहावसान के बाद स्वयं चैतन्य महाप्रभु ने ही वहां उनकी अंत्येष्टि की थी।* ■ **मानस त्रिपाठी**

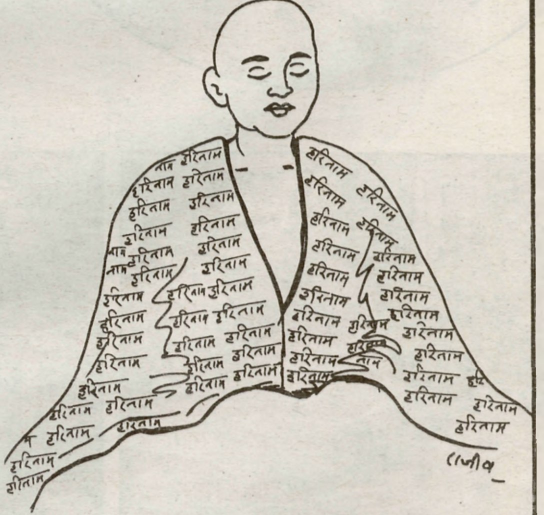

वर्ग पहेली क्रमांक- २४७

१		२		■	३	४		५	■
■	■		■	■	■		■	६	
७			■	■	८		■		■
	■	९				■	१०	■	■
	■		■	■	११				■
	■	■	■	■		■		■	१२
१३			१४		■	■	१५		
	■	■		■	१६	१७		■	
१८		■		■	■		■	१९	
■	■	२०					■	■	■

वर्ग पहेली क्रमांक- २४७

बाएं से दाएं

१. हाल ही में दिवंगत चम्पाकुलम पाचु पिल्लई किस नृत्य के विशेषज्ञ थे?
३. सूर्य के एक पुत्र का नाम
६. असत्य, झूठ
७. उत्तराञ्चल का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान
८. रहित, शून्य, दीन
९. एक नक्षत्र
११. रावण की पटरानी जो, मय की कन्या थी
१३. मध्य प्रदेश का एक जिला
१५. तमाचा, थप्पड़
१६. एक मुनि, जो छंद शास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं
१८. भोजन का एक आवश्यक अवयव
१९. तेजी, उत्तेजना, फुर्ती
२०. वेद व्यास के एक शिष्य

ऊपर से नीचे

२. उत्तराञ्चल का राजकीय (वन्य) पशु
४. उलटी
५. ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता पी.वी. अकलिंदम ने किस भाषा में साहित्य सृजन किया है?
७. प्राचीन काल का एक उत्सव, जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था
८. तोते की एक कल्पित जाति, जिसका रंग सुनहरा माना जाता है
१०. पुराणनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत, जहां से चंद्रमा और सूर्य निकलते हैं
१२. राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी
१४. गले में हाथ डालना, आलिंगन
१७. प्रेमचंद की एक कृति

वर्ग पहेली क्रमांक- २४६ (१७ अक्तूबर, २००४) का हल

१ वि	श्रा	रू	२ प	■	३ ऋ	ष्य	मू	४ क	■
श्रा	■	■	यो	■	■	■	■	५ मी	६ रा
मं	■	७ उ	द	ग	गं	८ ल	■	■	ज्य
ग	■	द्ध	■	■	■	क	■	९ न	व
१० ल	गा	व	■	११ अ	न्ते	वा	१२ सी	■	र्ध
■	■	■	■	त्र	■	■	१३ वा	म	न
१४ स्वा	य	म्भु	व	म	नु	■	न	■	सिं
प	■	■	■	य	■	१५ कौ	■	१६ चा	ह
१७ न	रो	१८ रा	■	को	■	सा	■	च	■
■	■	१९ ह	रि	श	य	नी	■	री	■

बूझो तो जानें

प्यारे बच्चो! हमें पता है कि तुम होशियार हो, लेकिन कितने? तुम्हारे भरत भैया यह जानना चाहते हैं। तो फिर देरी कैसी? झटपट इस पहेली का उत्तर तो दो। भरत भैया हर सप्ताह ऐसी ही एक रोचक पहेली पूछते रहेंगे। इस सप्ताह की पहेली है-

राम कथा का अमृत तुलसी बाबा ने पिलवाया, जन-जन की भाषा में था, सो सबने उसको पाया।।
घर-घर और लीलाओं में उसको श्रद्धा से गाते, हिन्दू धर्म बचा उससे, ये हैं बुजुर्ग बतलाते।।

उत्तर: (रामचरितमानस)

देह-बांसुरी

डा. तारादत्त 'निर्विरोध'

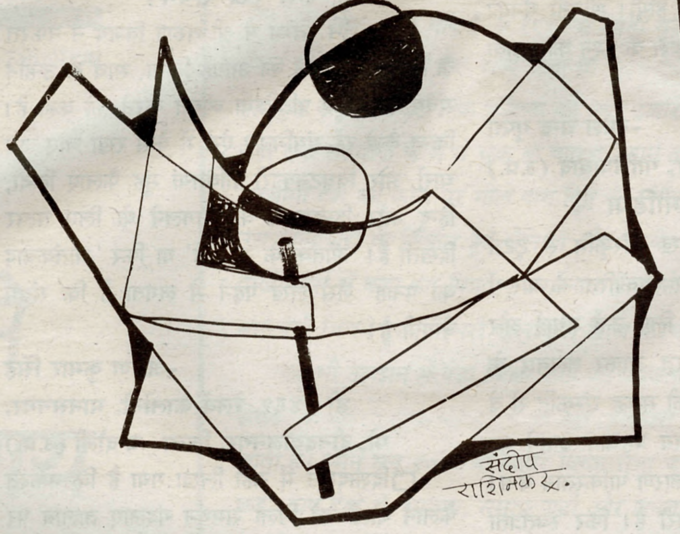

मन किसी के गांव का घर,
सांस मेरी गीत का स्वर,
सब कहीं बजता रहूंगा-

राग जब आसावरी तो
देह मेरी बांसुरी है।

एक सरगम जी रहा हूं
ताल-लय भी साथ मेरे।
सृष्टि का संगीत मुझमें
प्रकृति के सब पाथ मेरे।
गंध बन मिलता रहूंगा-

सब टिके जिस पर अनन्तर,
दृष्टि मेरी वह धुरी है।

एक पूरा देश हूं मैं,
सब सिरे जिसके जुड़े हैं।
पर्वतों के, नदी-नद के
रास्ते जिसमें मुड़े हैं।
ऋतु बना खिलता रहूंगा-

पांव सी फैली कुमारी
बांह थामे जब पुरी है।

पुस्तक -समीक्षा

देह से विदेह की ओर

अपने 'अक्षत' कविता संग्रह के माध्यम से पुष्पिता ने प्रेम के आध्यात्मिक स्वरूप को उकेरने और संवारने का यथासंभव प्रयास किया है। पुष्पिता की ये कविताएं प्रेम के लगभग सभी रास्तों से गुजरती हुई, उसकी दैहिकता से बचती हुई, उसकी रूहानी गहराइयों और ऊंचाइयों को छूती हुई आगे बढ़ती हैं। इन समस्त कविताओं को एकात्म रूप से देखें तो पुष्पिता का यह

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम	: अक्षत (काव्य संग्रह)
लेखक	: पुष्पिता
पृष्ठ संख्या	: १३१
मूल्य	: १५० रुपए
प्रकाशक	: राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. जी-१७, जगतपुरी, दिल्ली-११००५१

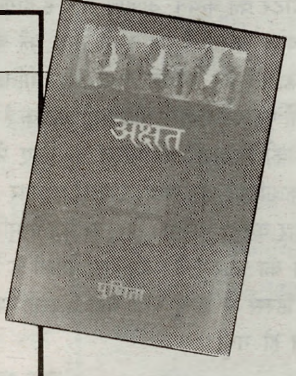

काव्य संग्रह प्रेम का एक 'महाकाव्य रूप' हमारे सामने लाता है, जिसमें प्रेम की इन्द्रधनुषी छटा के 'महादर्शन' होते हैं। यह महाकाव्य रूप आध्यात्मिक है, इस मायने में ये कविताएं असाधारण श्रेणी में आती हैं। ये कविताएं हमें देह से विदेह की ओर ले जाती हैं। देह की गंध के आनंद से आत्मा की गंध के परमानन्द तक पहुंचाती हैं। यहां प्रेम अपने पूरे पारदर्शी और उदात्त रूप में प्रकट होता प्रतीत होता है।

कवयित्री पुष्पिता लम्बे समय से सूरीनाम (दक्षिणी अमरीकी उपमहाद्वीप) में हिन्दी की आमंत्रित व्याख्याता (विजिटिंग प्रोफेसर) के रूप में कार्य कर रही हैं। इस कारण उनकी कविताओं में प्रवासी-मन की पीड़ा के भी बार-बार दर्शन होते हैं।

'अक्षत' में संग्रहित कविताओं में प्रेम का अकुंठित भाव प्रवाहित हुआ है। इन कविताओं के प्रेम की पूर्वाहट है, प्रवासी पीड़ा है। उपस्थिति है, अनुपस्थिति है, आस्था है, स्वीकार्य है, उन्मुक्तता है, चुप्पी है, निनाद है, हिचकियां हैं, सिसकियां हैं, स्मृतियां हैं, बेचैनी है, कसक है, अकुलाहट है, परछाई है, प्रतीक्षा है.... और भी प्रेम के न जाने कितने-कितने रूप.... कितने-कितने बिम्ब...... कितने-कितने उपनाम। ये कविताएं कई जगह बड़ी सहज लेकिन ताकतवर अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती हैं-

तुम! मेरे पास।
सुख की तरह हो
जैसे-जड़ों के पास जमीन।
('सच के भीतर' कविता से)

एक और बनागी देखिए

'अक्सर विदा लेते समय।
अपनी सुबकियां।
छोड़ आते हैं होंठ।
तुम्हारे भीतर।
(चुपचाप अंधेरा पीने के लिए' कविता से)।

कुछ कविताएं तो नितांत व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वजनिक प्रतीत होती हैं। प्रेम के विविध रंगों को संजोए तितलियों-सी उड़ती-बैठती ये कविताएं पाठक के मन को 'आध्यात्मिकता से सराबोर करने की सामर्थ्य रखती हैं। कवयित्री के पास मानो शब्दों का विपुल भण्डार है और हर शब्द अपने पूरे अर्थ और भाव के साथ मौजूद दिखाई पड़ता है। फैशन से दूर, काल्पनिक चित्रों, प्रतीकों और संवेदनाओं से भरी ये प्रेम कविताएं अपना एक अलग ही संसार रचती हैं। कुल मिलाकर यह देह से विदेह तक की यात्रा है। ■ नरेश शांडिल्य

हिन्दू-भूमि

सुरेश सोनी

पुराणों की उपयोगिता

(३ अक्तूबर में प्रकाशित अंश से आगे)

पुराणों में वर्णन आता है कि पृथ्वी शेषनाग के फन पर परमाणु के समान स्थित है। यह पढ़कर कुछ प्रगतिशील लोग हंसी उड़ाते हैं, परन्तु थोड़ा गहराई से विचार करेंगे तो ध्यान में आएगा कि शेषशायी विष्णु के प्रतीक के रूप में ब्रह्माण्ड विज्ञान को ही समझाया गया है। विष्णु का अर्थ है 'विवर्धते इति विष्णु', यानी जो फैल रहा है वह विष्णु। यह ब्रह्माण्ड भी फैल रहा है तथा विष्णु शेष पर लेटे हैं अतः शेष की व्याप्ति उनसे अधिक है। शेष का एक नाम अनंत भी है। सान्त ब्रह्माण्ड अनन्त में ही स्थित है। वैज्ञानिक तथ्य को सरल रूप में इस कथानक द्वारा समझाया गया है।

४. श्रीमद्भागवत् पुराण में परीक्षित शुकदेव मुनि से पूछते हैं, काल का स्वरूप क्या है? इस पर शुकदेव मुनि उत्तर देते हैं- विषय का परिवर्तन ही काल का स्वरूप है। घटनाओं के परिवर्तन द्वारा ही उस अमूर्त्त काल को हम जानते हैं।

५. काल के मापन की सूक्ष्मतम और महत्तम इकाई के वर्णन को पढ़कर दुनिया का प्रसिद्ध ब्रह्माण्ड विज्ञानी कार्ल सेगन अपनी पुस्तक कॉसमॉस में लिखता है, 'विश्व में एक मात्र हिन्दू धर्म ही ऐसा धर्म है, जो इस विश्वास को समर्पित है कि ब्रह्माण्ड सृजन और विनाश का चक्र सतत चल रहा है। तथा यही एक धर्म है जिसमें काल के सूक्ष्मतम नाप परमाणु से लेकर दीर्घतम माप ब्रह्म दिन और रात की कल्पना की गई, जो ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष तक बैठती है तथा जो आश्चर्यजनक रूप से हमारी आधुनिक गणनाओं से मेल खाती है।'

६. काल का सम्बंध गति से है। गति परिवर्तन से काल परिवर्तन हो जाता है। वर्तमान युग के महान वैज्ञानिक आइनस्टीन ने अपने सापेक्षता सिद्धान्त में इसे प्रतिपादित किया है। इस सम्बंध में एक घटना का वर्णन मिलता है। एक बार कुछ पत्रकार सापेक्षता सिद्धान्त के बारे में जानने के लिए आइनस्टीन के घर गए। आइनस्टीन कहीं बाहर गए थे, घर पर उनकी पत्नी थीं। पत्रकारों ने उनसे ही सापेक्षता के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, 'मैं ज्यादा तो नहीं जानती पर मुझे समझाने में वे एक घटना का वर्णन करते हैं। मान लीजिए की एक युवक है और एक युवती। उनमें आपस में प्रेम है। एक झरने के किनारे वे बैठे हैं, चारों ओर हरियाली है। ठण्डी-ठण्डी हवा बह रही है और वे आपस में प्रेम भरी बातें कर रहे हैं। तो सुबह से शाम हो जाएगी। पता नहीं चलेगा और अंधेरा होने पर उनके मुंह से यह वाक्य निकलेगा, अरे अभी तो बैठे थे, इतनी जल्दी अंधेरा हो गया। अर्थात् कई घण्टों का बीता समय उन्हें एक क्षण के समान लगेगा। परन्तु दूसरी ओर गर्मी के दिन हों और दोपहर को तपती हुई भट्टी के निकट काम करना पड़े तो कुछ क्षण कई घण्टों जैसे महसूस होंगे। यह अवधारणा ही सापेक्षता है।'

पुराणों में एक कथा आती है। रैवतक राजा की पुत्री रेवती की लम्बाई अधिक थी, अतः उसे कोई वर नहीं मिल रहा था। उसके पिता योगबल से अपनी पुत्री को लेकर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे। जब वहां पहुंचे तो गंधर्वगान चल रहा था। अतः कुछ समय रुके, बाद में ब्रह्मा जी ने आने का कारण पूछा तो राजा ने कहा, 'आपने पुत्री तो दी पर इसके लिए कोई वर भी उत्पन्न किया है या नहीं? यह जानने आया हूं।' इस पर ब्रह्माजी हंसे और और कहा- 'जितने समय में तुम आए और गान सुना इतने समय में पृथ्वी पर २७ चतुर्युगियां व्यतीत हो गई हैं और २८वीं चतुर्युगी का द्वापर समाप्त होने वाला है।' इस कथा में यह वर्णन आता है कि ब्रह्माजी के कुछ क्षण पृथ्वी के कई लाख वर्षों के बराबर हो जाते हैं।

पुराण एवं इतिहास-पुराणों में इतिहास है। परन्तु हमारी इतिहास दृष्टि भिन्न थी। पश्चिमी विद्वान् ऐसी कोई भी बात, ईसा पूर्व की हो, ऐसा कोई भी वर्णन जो सामान्य ज्ञान के परे हो, उसे इतिहास मानने से इनकार करते रहे। उनके लिए इतिहास घटनाक्रमों और राजाओं के उत्थान-पतन का वर्णन मात्र रहा। परन्तु भारतीय दृष्टि भिन्न रही। हमारे यहां केन्द्र-बिन्दु धर्म रहा। अतः उसको केन्द्र-बिन्दु मानकर सारा वर्णन किया गया। उनकी दृष्टि थी- १. प्राचीन घटनाओं का वर्णन इसलिए किया ताकि वर्तमान पीढ़ी उससे कुछ सीख सके। २. जिन राजाओं ने, ऋषियों ने महर्षियों ने धर्म के मार्ग पर चलकर उदाहरण प्रस्तुत किया उनका जीवन समाज के सामने आ सके। ३. जो अधर्म के मार्ग पर चले उनके जीवन का समाज पर क्या परिणाम हुआ तथा उनका अन्त कितना दुःखपूर्ण रहा, यह भाव मन में उत्पन्न हो सके। इन्हीं बातों को लेकर पुराणों में आवश्यक इतिहास का वर्णन किया गया है।

(पाक्षिक स्तम्भ)

(लोकहित प्रकाशन, लखनऊ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक विचारधारा के मूल स्रोत' से साभार।)

पञ्चांग

संवत् २०६१ वि.,			ई. सन् २००४
आश्विन शुक्ल	११	रवि	२४अक्तूबर
,, ,,	१२	सोम	२५ ,,
(सोम प्रदोष)			
,, ,,	१३	मंगल	२६ ,,
,, ,,	१४	बुध	२७ "
आश्विन पूर्णिमा		गुरु	२८ "
(महर्षि वाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नानारम्भ)			
कार्तिक कृष्ण	१	शुक्र	२९ "
,, ,,	२	शनि	३० "

पाठकीय

अंक-संदर्भ ● २६ सितम्बर, २००४

यदुवंशी या गो-वैरी?

आवरण कथा 'यदुवंशी लालू ने चलायी गो-हत्यारी रेल' से यह बात साफ हो गई कि रेल मंत्री लालू यादव ने बिहार विधानसभा के चुनाव को देखते हुए यह राक्षसी कृत्य किया है। यह हिन्दू और मुसलमानों के बीच संघर्ष पैदा करने की चाल लगती है। लालू यादव जैसे नेता मुसलमानों को विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल आदि हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनों का भय दिखाएंगे, ताकि मुस्लिम मतदाता उनसे दूर न हों। काश, ये नेता और हमारे मुस्लिम भाई गाय का महत्व समझ पाते।

-राकेश काम्बोज
चौक बाजार, थाना भवन
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

□ यह चिन्ता का विषय है। एक ओर तो तस्करी के माध्यम से गोवंश बंगलादेश भेजा जा रहा है, दूसरी ओर अल कबीर जैसे बड़े-बड़े कत्लखाने देश में कई स्थानों पर खोले जा रहे हैं। गो-हत्या पूरी तरह बन्द होनी चाहिए, क्योंकि गाय पूरी मानव जाति की एक प्रकार से पोषक है, मां है। कहते हैं कि परमाणु युद्ध होने पर गाय के गोबर से लिपा घर ही बचेगा।

-रजत कुमार
२७८, भूड़, बरेली (उ.प्र.)

□भगवान श्रीकृष्ण यदुवंशी थे, गऊ का पालन करके गोपाल कहलाए। पर आज के यदुवंशी लालू यादव केवल अपनी राजनीति चमकाने के लिए गो-पालक की जगह गो-मारक रेल चलवा रहे हैं। उनका यह कृत्य तो यदुवंश कुल को कलंकित कर ही रहा है, देश, धर्म एवं संस्कृति के लिए भी घातक है। श्रीमती मेनका गांधी ने गो-हत्यारी रेल को रोकने का बीड़ा उठाया है, यह स्वागतयोग्य कदम है। श्रीमती मेनका 'गो-रक्षा रथ यात्रा' शुरू करें तो उन्हें जन-साधारण का भी समर्थन मिलेगा।

-अशोक बोहरा
पिपलोन कलां, शाजापुर (म.प्र.)

□आवरण पृष्ठ पर मालगाड़ी के डिब्बे में निर्दयतापूर्वक ले जाए जा रहे गोवंश का चित्र देखा। इनको बंगलादेश के कसाईखानों में भेजकर कथित सेकुलरों की आत्मा प्रसन्न होती होगी। श्रीमती मेनका गांधी ने जिस हिम्मत के साथ गोवंश के प्रश्न को उठाया है वह निःसंदेह प्रशंसनीय है।

-रमेश चन्द्र गुप्ता
नेहरू नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

भटका रहा है मीडिया

शाहिद रहीम ने अपने लेख 'संस्कृति से टूटते सम्बन्ध' में आज के मीडिया और पत्रकारिता के बारे में अक्षरशः सत्य लिखा है। इसके लिए उन्हें बधाई और शुभकामनाएं। मुसलमानों ने भारत आकर तलवार के जोर पर युद्ध तो जीते, पर यहां की समृद्ध संस्कृति से वे भयभीत थे। उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाने का हर संभव प्रयत्न किया, जिसके कारण पाकिस्तान बना। उनका वह प्रयत्न आज भी जारी है। फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कुकुरमुत्ते की तरह अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खुल गए। वहां पढ़ने वाली पीढ़ी अंग्रेजीदां हो जाती है। ऐसे में आज का आधुनिक मीडिया जले पर नमक छिड़क रहा है। भारतीय संस्कृति और इतिहास से उसका कोई सरोकार नहीं है।

-हरिसिंह महतानी
८९/७, पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

□वास्तव में हम अपनी संस्कृति से कट रहे हैं। इसे राह पर लाने के लिए कोशिश करनी होगी। एक महत्वपूर्ण लेखकीय चिंतन के रूप में 'क्या परिवार नियोजन इस्लाम विरोधी?' बेहद अच्छा लगा। मुस्लिम रहनुमाओं, नेताओं एवं देश की उन्नति चाहने वालों को अपने सामाजिक कर्तव्य को देखते हुए परिवार नियोजन को बढ़ावा देना होगा, तभी देश की समस्याएं कम होंगी।

-अजय जैन 'विकल्प'
३६, स्कीम नं. ७१, गुमाश्ता नगर, इन्दौर (म.प्र.)

□आज अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं अपने स्वार्थ पूरे करने के लिए भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास एवं हिन्दुत्व के मार्ग से लोगों को भटका रही हैं। समाज को सही दिशा देने के बजाय मीडिया स्वयं अपने उद्देश्यों से दूर हो रहा है। आज मीडिया अपने पाठकों या दर्शकों के सामने जो परोस रहा है, उससे नई पीढ़ी पर विपरीत असर हो रहा है। इस प्रवृत्ति पर रोक लगना आवश्यक है।

-भारत जी. खामितकर
जेवर्गी कालोनी, गुलबर्गा (कर्नाटक)

□मीडिया ने हमारी संस्कृति एवं सभ्यता पर कुठाराघात किया है, क्योंकि उसे केवल अपना व्यवसाय बढ़ाना है। मीडिया के गलत आचरण से ही समाज में भी कुरीतियां बढ़ी हैं। यह समाज के लिए हानिकारक है, इसे रोकना ही होगा।

-शत्रुघ्न सिंह
ग्रा.-परवेजाबाद, पत्रा.-सोनपुर,
जिला-सारण (बिहार)

□ यह प्रसन्नता की बात है कि आज भी शाहिद रहीम जैसे राष्ट्रवादी मुस्लिम विचारक हैं, जो यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर इस देश को अपनी मातृभूमि, हिन्दुओं को अपना भाई और भारतीय संस्कृति को अपनी संस्कृति मानते हैं। ऐसे राष्ट्रवादी विचारकों को मेरा सादर नमन एवं साधुवाद!

-राम शंकर श्रीवास्तव
सी-१३७३, राजाजीपुरम्, लखनऊ (उ.प्र.)

कैसे रखें संयम?

दिशादर्शन स्तम्भ में श्री तरुण विजय ने नफरत के विरुद्ध खड़े होने का आग्रह किया, साथ ही उन्होंने संयम रखते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त करने को कहा है। किन्तु कैसे रखें संयमित? ऐसे में कैसे रखा जाए जब चारों ओर विघटनकारी शक्तियां मुंह फैलाए हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्थान को निगलने के लिए तत्पर दिखती हैं। 'आतंक के साये में' या फिर 'आतंकवाद को पनाह' जैसे लेख पढ़ने से लगता है कि संयम बेमानी है।

-अरुण कुमार सिंह
डी-१४६१, रेलवे कालोनी, मानसनगर,
पो. दीनदयालनगर, जिला- चन्दौली (उ.प्र.)

□दिशादर्शन में सही लिखा गया है कि नफरत फैलाने वालों को मिला समर्थन गंदलाए तालाब पर जमी काई से भी पतला है। पर दुर्भाग्य से हमारी संख्या भी अपेक्षा से कम गति से ही बढ़ रही है। आज हमारा समाज कटी पतंग की तरह है। डा. हेडगेवार का स्वप्न कब साकार होगा, हिन्दू समाज कब संगठित होगा?

-सुनील
वनवासी विकास परिषद्
८११, नरसिंह वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)

बेसलान का सबक

संपादकीय 'रूस की हिम्मत' जोरदार रहा। बेसलान में आतंकवादी कार्रवाई का रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने जिस कारगर ढंग से जवाब दिया वह राष्ट्रभक्ति का ही सबूत है। राष्ट्रपति पुतिन का साहसी कदम भारत को भी सबक देता है कि आतंकवाद का प्रतिकार केवल उनसे दो-दो हाथ करने में ही है। मासूमों की हत्या करने वाले किसी भी तरह की दया के पात्र नहीं हैं। दुःख की बात यह है कि हमारे यहां रूस जैसी इच्छाशक्ति की कमी है।

-शक्तिरमण कुमार प्रसाद
श्रीकृष्णनगर,पटना (बिहार)

सटीक टिप्पणी

श्री मुजफ्फर हुसैन ने अपने लेख 'दारूल इस्लाम की ओर बढ़ता भारत' में मुस्लिम नेताओं की गोलमोल बातों पर बड़ी सटीक टिप्पणी की है। उन्होंने भारतवासियों को बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या के प्रति सचेत भी किया है। इस जनसांख्यिक आक्रमण को रोकना ही होगा।

-पवन विश्वकर्मा
सुदामानगरगंज, सीहोर (म.प्र.)

करारी चोट

वोटर का कथन 'अजीब लोग हैं दागी सेव खरीदने में संकोच करते हैं पर दागी नेता को बेझिझक मंत्री बना डालते हैं', अच्छा लगा। राजनीतिज्ञों की गलत नीतियों पर यह करारी चोट बड़ी सटीक है। सम्पादकीय 'रूस की हिम्मत' भी भारत के लिए प्रेरणादायी है। आतंकवादियों के साथ भारत सरकार को ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए। तेजी से बढ़ती मुस्लिम आबादी चिन्ता का कारण है। इतिहास साक्षी है कि भारत के जिस हिस्से में हिन्दू घटा वही हिस्सा देश से कटकर अलग हो गया।

-राम अवतार मित्तल
खण्डार, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

पुरस्कृत पत्र

जनसंख्या पर लगाम इस्लामविरोधी?

विश्व में सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया में पिछले दशक के दौरान जनसंख्या वृद्धि की दर १५.६ प्रतिशत रही, जो भारत में मुस्लिम वृद्धिदर की आधी है। तुर्की तो इस दर को घटा कर १० प्रतिशत पर ले आया है। जनसंख्या-नियंत्रण के कठोर उपायों के बिना यह सम्भव नहीं था। पाकिस्तान, ईरान, ट्यूनीशिया, मिस्र और बंगलादेश जैसे मुस्लिम देशों में भी विभिन्न उपायों से जनसंख्या वृद्धि को रोकने के प्रयास चल रहे हैं। पर हिन्दुस्थान के इस्लामी विद्वान परिवार नियोजन के विरुद्ध लामबन्द हैं। उन्होंने इसे इस्लामविरोधी घोषित कर दिया है। तब तो उक्त देशों और उनके ७५ करोड़ मुसलमानों (जो दुनिया की कुल मुस्लिम आबादी का ६० प्रतिशत है) को भी इस्लाम विरोधी घोषित कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे परिवार नियोजन अपना रहे हैं।

इन सुधारवादी इस्लामी देशों के बिल्कुल विपरीत हिन्दुस्थानी मुसलमानों के रूढ़िवादी नेतृत्व को शायद पिछड़ापन ही रास आता है। इसीलिए वे इस फिजूल की धारणा से चिपके हुए हैं कि 'बच्चे अल्लाह की देन हैं।' पर अल्लाह ने इंसानों को बुद्धि-विवेक भी दिया है। यह विवेक बताता है कि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों तथा बच्चों की बेहतर परवरिश की जरूरतों के अनुरूप आबादी सीमित रखना समय की मांग है। ऐसा माना जाता है कि शिक्षित व्यक्ति अशिक्षितों के मुकाबले परिवार-नियोजन जल्दी अपनाते हैं। पर कट्टरपंथी मुल्लाओं की पकड़ में जकड़े भारतीय मुस्लिम समाज ने इस धारणा को भी झूठा साबित कर दिया है। भारत में हिन्दुओं और मुस्लिमों के बीच की साक्षरता दर में कोई विशेष अन्तर नहीं है। ६४ प्रतिशत हिन्दू और ५९ प्रतिशत मुसलमान शिक्षित हैं। पर मुस्लिम समाज हिन्दुओं के मुकाबले कहीं तेज गति से आबादी बढ़ा रहा है। महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और झारखण्ड में तो मुस्लिम समाज हिन्दुओं के मुकाबले अधिक शिक्षित है। उन राज्यों में उनका साक्षरता प्रतिशत क्रमशः ७८.१, ७३.५, ६८.०, ८२.५, ७१.३ और ५५.६ है, जबकि हिन्दुओं में यहां साक्षरता क्रमशः ७६.९, ६९.१, ६०.५, ६४.७, ६३.१ और ५४.६ है। फिर भी इन प्रदेशों में मुस्लिम वृद्धिदर हिन्दुओं की अपेक्षा दुगुनी है। इसलिए इस संसार, इस देश और खुद मुस्लिम समाज के ही हित में है कि वे परिवार नियोजन अपनाएं। सभी के हित में भी यही है कि सरकार परिवार नियोजन संबंधी कठोर कानून बनाए।

-अजय मित्तल
खंदक, मेरठ (उ.प्र.)

हर सप्ताह एक चुटीले, हृदयग्राही पत्र पर १०० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।सं.

विस्तार

लोकपाल के दायरे, का हो अब विस्तार
राष्ट्रपति जी कह रहे, अब तो करो विचार।
अब तो करो विचार, भाजपा भी चाहती है
मगर कांग्रेस के कारण गाड़ी अटकी है।
कह 'प्रशांत' कानून अगर यह बन जाएगा
इनकी करतूतों से पर्दा उठ जाएगा।।
-प्रशांत

भोलाराम ■ आलोक भार्गव

सूक्तिका

आज-कल

उनकी हर बात
आज-कल पर टल जाती है...
अव्यवस्था के माहौल में
जिन्दगी गुजर जाती है!!

-अमर पेन्टर 'मलंग'
गणेश चौक, कटनी (म.प्र.)

सरोकार

मेनका गांधी, सांसद, लोकसभा

नीलगाय से बचने का उपाय

●मेरे घर में चीटियां बहुत रहती हैं। मैं उनको बिना मारे घर में आना कैसे रोक सकती हूं?

❖ मीनाक्षी झा

१२१, मोतीबाग, नई दिल्ली

□आप पहले पता लगाएं कि चींटियां आ कहां से रही हैं। फिर उस जगह पर हल्दी, चाक (खड़िया), टेलकम पाउडर या पिसी मिर्च की एक लकीर खींच दें। अगर आपको लगे कि इन सबके इस्तेमाल से गन्दगी फैलती है तो चींटियों के बिल के सामने एक नींबू निचोड़ दें और उसका छिल्का वहीं रख दें। आपकी समस्या जरूर सुलझ जाएगी।

●अनेक राज्य सरकारें नीलगायों के पीछे हाथ धोकर पड़ी हैं। वहां के किसान शिकायत करते हैं कि नीलगाय उनकी फसल को खा जाती हैं। क्या उनको खेतों से दूर रखने का कोई उपाय है?

❖ शंकर लाल

सुपौल, दरभंगा (बिहार)

□पहले तो आपको बता दें कि नीलगाय कोई गाय नहीं है, बल्कि हिरण की एक प्रजाति है। उड़ीसा के किसानों ने एक बड़ा दिलचस्प तरीका निकाला है नीलगायों को खेतों से दूर रखने का। वे लोग नीलगाय के मल को इकट्ठा करते हैं, फिर उसमें नीम की पत्तियां डालकर उसका घोल बनाते हैं। इस घोल को और पतला करके ४-५ घंटे तक छोड़ दिया जाता है। इसके बाद इसी घोल का छिड़काव उन फसलों पर किया जाता है जिसको नीलगाय से खतरा हो। यह करने के बाद आप निश्चिंत हो सकते हैं, नीलगाय इस छिड़कावयुक्त फसल को बिल्कुल नहीं छुएगी। वैसे आपकी जानकारी के लिए बता दें कि खरगोश को छोड़कर कोई भी जानवर अपने मल को नहीं खाता है। नीलगाय भी नहीं खाती।

●मेरी बहन गांव में रहती है। वहां उसे ऐसे बहुत से जानवर दिखाई देते हैं, जिनके घाव में कीड़े पड़े हुए होते हैं। इस संबंध में वह क्या कर सकती है?

❖ **लोकेश गौर**

बैरागढ़, भोपाल (मध्य प्रदेश)

□जानवर के घाव पर अक्सर मक्खियां बैठती हैं जो घाव वाले हिस्से में अपने अंडे रखती हैं। इन्हीं अंडों से निकले बच्चे बड़े होकर जानवर का मांस खाने लगते हैं। आप ऐसे जानवरों के घाव पर गेंदे के पत्ते रखें। इनसे कीड़े मरते हैं। पर पहले आप इन पत्तों को निचोड़ें, फिर पत्तों के रस में एक साफ और महीन सूती कपड़ा डुबो दें, इसके बाद कपड़े से घाव को अच्छी तरह साफ करें। इसे दिन में दो बार दोहराएं। इससे घाव के कीड़े मर जाते हैं और घाव जल्दी भरता है। इन्हीं गुणों की वजह से गेंदे के पत्ते का इस्तेमाल कई तरह के मरहम और उबटन बनाने में किया जाता है। ये मरहम जली त्वचा का उपचार भी काफी तेजी से करते हैं। वैसे आप इस काम में शरीफे के पत्तों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। नतीजा उतना ही अच्छा होगा। ■

पशु कल्याण आंदोलन में भाग लेने के इच्छुक पाठक श्रीमती मेनका गांधी से १४, अशोक रोड, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर अथवा gandhim@parlis.nic.in पर सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीमती मेनका गांधी
'सरोकार' स्तम्भ
द्वारा, सम्पादक, पाञ्चजन्य
संस्कृति भवन, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, झण्डेवाला, नई दिल्ली-११००५५

इस स्तम्भ में हर पखवाड़े प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और शाकाहार की समर्पित प्रसारक श्रीमती मेनका गांधी शाकाहार, पशु-पक्षी प्रेम तथा प्रकृति से सम्बंधित पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देती हैं। अपना प्रश्न भेजते समय कृपया निम्नलिखित चौखाने का प्रयोग करें।

कर्नाटक की राजनीति में बदलाव के संकेत

बीदर करेगा कांग्रेस को दर-ब-दर?

बीदर में जनता दल (सेकुलर), कांग्रेस, भाजपा और बहुजन समाज पार्टी मैदान में हैं। कांग्रेस और जनता दल (सेकुलर) बिहार में तो एक-दूसरे के विरुद्ध मोर्चा बांधे खड़े हैं जबकि बंगलौर में दोनों गठबंधन सरकार चला रहे हैं। ऐसा कैसे हो गया? अगर जनता दल (सेकुलर) बीदर में एक बार फिर अच्छा प्रदर्शन करती है तो उससे देवेगौडा और उनकी पार्टी में अपने बूते कुछ करने का आत्मविश्वास तो जरूर भर जाएगा।

टी.वी.आर. शेनाय

हर युद्ध के बाद कुछ ऐसे वाक्यांश चर्चा में आते हैं जो आगे चलकर भाषा का हिस्सा बन जाते हैं। अगर मुझे ठीक-ठीक याद है तो १९९१ में खाड़ी युद्ध- आपरेशन डेजर्ट स्टोर्म- के समय एक शब्द चला था 'मित्रतापूर्ण गोलाबारी'। यह युद्ध के समय घटी एक दुर्घटना की ओर इशारा करता था जहां एक सहयोगी फौज ने चूक के कारण अपने ही एक अन्य सहयोगी देश की फौज पर गोले दाग दिए थे। लेकिन जैसा कि उस गोलाबारी के शिकार हुए सैनिकों और उनके परिवारों ने बड़े तीखे स्वरों में कहा था, मित्रतापूर्ण गोलाबारी उतने ही लोगों को मार देगी जितने दुश्मनी भरी गोलाबारी खत्म करेगी।

जब भी उलझन में पड़ा किसी पार्टी का प्रवक्ता 'मित्रतापूर्ण संघर्ष' के बारे में कुछ बोलता है तो मुझे उपरोक्त घटना याद आ जाती है। हमने सन् २००० के बिहार विधानसभा चुनावों में ऐसे कई संघर्ष देखे थे; भाजपा, समता पार्टी और जनता दल (एकीकृत)- जो १९९९ के आम चुनावों में अनुशासित ताकत के रूप में एकजुट थे- बंट गए थे और बुरी तरह परास्त हो गए थे। क्या २००४ में कहानी कुछ और रूप लेगी?

मेरा इशारा केवल महाराष्ट्र - जहां बागी उम्मीदवार पंजीकृत दलों के होश उड़ाए हुए हैं- की ओर ही नहीं है, पड़ोसी कर्नाटक की ओर भी है। मैं बीदर में संसदीय उपचुनाव की बात कर रहा हूं जहां जनता दल (सेकुलर), कांग्रेस, भाजपा और बहुजन समाज पार्टी भी मैदान में हैं। इनमें से बाद वाले दो दलों को समीकरण से बाहर रखते हैं, क्योंकि भाजपा कर्नाटक में हमेशा ही दमदार पार्टी के रूप में रही है और मायावती प्रदेश में अपनी जगह तलाश रही हैं। मुद्दे की बात तो यह है कि कांग्रेस और जनता दल (सेकुलर) बिहार में तो एक-दूसरे के विरुद्ध मोर्चा बांधे खड़े हैं जबकि बंगलौर में दोनों गठबंधन सरकार चला रहे हैं। ऐसा कैसे हो गया?

कांग्रेस और जनता दल (सेकुलर) के बीच गठजोड़ हमेशा ही सुविधा का जोड़ रहा है। इसी साल हुए (कर्नाटक) विधानसभा चुनाव के बाद ये दोनों दल साथ आए थे। उनके साथ आने का एकमात्र उद्देश्य- जो दोनों ही दलों ने खुलेआम स्वीकार किया था- भाजपा को बाहर रखना ही था (जो विधानसभा में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी)। यह गठबंधन अपनी शुरुआत में ही तमाम अपशकुनों में घिर गया था, जिसमें सभी तथाकथित सहयोगी विभागों के बंटवारे पर आपस में भिड़ गए थे। चार महीने तक वह तनाव बना रहा और आखिरकार पस्त होकर मुख्यमंत्री धरम सिंह अब भी २३ विभाग अपने पास रखे हुए हैं। (दैनिक प्रशासनिक कार्य पर स्वाभाविक रूप से इसका असर पड़ ही रहा है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति- एक व्यस्त मुख्यमंत्री की बात तो बहुत दूर की है- इतने अधिक विभागों की देखरेख नहीं कर सकता।)

इन्हीं सब कारणों से बीदर दिलचस्प बन पड़ा है। रामचंद्र वीरप्पा (जिन्होंने आम चुनाव में भाजपा के लिए यह सीट जीती थी) की मृत्यु से नाममात्र के सहयोगियों में जोर आजमाइश का दरवाजा खुला है। पिछले आम चुनाव में भाजपा को ३१२,८३८ मत मिले थे, कांग्रेस के नरसिंहराव हुल्ला सूर्यवंशी के खाते में २८९,२१७ मत आए थे और जनता दल (सेकुलर) के मोतीराम चौधरी ने १७३,२९१ मत प्राप्त किए थे। तब फिर वे (कांग्रेस और जनता दल (सेकुलर)) मिलकर चुनाव क्यों नहीं लड़ते, जबकि गणित भी यही बताता है कि भाजपा (जो यह सीट चार बार जीत चुकी है) को उखाड़ फेंकने के लिए यह काफी रहेगा?

ईमानदारी से कहूं तो जनता दल (सेकुलर) के दमदार प्रदर्शन को देखकर सभी चकित रह गए थे। उत्तरी कर्नाटक जनता दल (सेकुलर) के परम्परागत गढ़ से बहुत दूर है, इसे सबसे ज्यादा बल पुराने मैसूर (वुडयार का इलाका, जो कभी ब्रिटिश इण्डिया का रजवाड़ा था) से ही मिलती रही है। बीदर, जिस पर हैदराबाद के निजाम ने दावा ठोंका था, आंध्र प्रदेश की राजधानी से मात्र १३० किमी. ही दूर है, जबकि बंगलौर इससे पांच गुणा अधिक दूर है। अगर जनता दल (सेकुलर) बीदर में एक बार फिर अच्छा प्रदर्शन करती है तो उससे देवेगौडा और उनकी पार्टी में अपने बूते कुछ करने का आत्मविश्वास तो जरूर भर जाएगा।

१९७७ में, आपातकाल की समाप्ति पर हुए आम चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद दक्षिण भारत को कांग्रेस का अजेय दुर्ग कहा जाता था। आज प्रायद्वीपीय भारत पर एक नजर और डालें तो आप प्रायद्वीपीय भारत के राजनीतिक नक्शे में आए बदलावों को देखकर चकित रह जाएंगे। परिस्थितियों ने यहां हर प्रमुख प्रदेश में कांग्रेस को गठजोड़ के लिए मजबूर कर दिया है। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु। (तकनीकी रूप से आंध्र में इसके पास पर्याप्त संख्या है, लेकिन विजय तो तेलंगाना राष्ट्र समिति के साथ चुनाव पूर्व हुए समझौते के कारण ही मिली थी।)

इसके साथ ही, कांग्रेस के सहयोगी वे लोग हैं जिन पर सोनिया गांधी क्षणभर के लिए भी भरोसा नहीं कर सकतीं। शरद पवार दो बार कांग्रेस को छोड़ चुके हैं। तेलंगाना राष्ट्र समिति का गठन तेलुगु देशम से निकले एक बागी ने किया था। करुणानिधि राजग के पूर्व सदस्य हैं। केरल में पता नहीं कौन किसका समर्थन करता है! ऐसे में अगर देवगौडा पुराने अपमान का बदला चुकाने की ठान लें तो क्या होगा यानी १९९७ में जिस तरह का व्यवहार कांग्रेस ने उनके साथ किया था, वे भी बंगलौर में उसकी सरकार गिरा दें तो?

सन् २००५ के पूर्वार्द्ध में बिहार, झारखण्ड और हरियाणा में विधानसभा चुनाव होने हैं। क्या कर्नाटक में भी चुनाव होंगे? ■(१३.१०.०४)

संस्कृति सत्य

वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

रानी अहिल्याबाई

धैर्यवान भी, साहसी भी

बात महाराष्ट्र के चौड़ो ग्राम की है। यहां केशव मन्दिर में इस गांव की एक आठ वर्षीय बालिका तन्मय होकर शिवजी की आरती कर रही थी। आरती के समय मंदिर का घंटा बज रहा

था। घंटा-ध्वनि सुनकर उधर से गुजर रहे इन्दौर नरेश मल्हार राव अपने घोड़े से उतरकर मंदिर में आ गए। उन्होंने उस बालिका को सुध-बुध बिसारकर, भावविभोर होकर, तल्लीन मुद्रा में शिवजी की आरती उतारते देखा तो चकित रह गए, क्योंकि अपनी भक्तिमयी तन्यमता में बालिका को आस-पास आने-जाने वालों का भी कोई भान नहीं था। आरती समाप्त होने पर जब वह बालिका अपने घर जाने के लिए मन्दिर से निकली तो मल्हार राव भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल पड़े। वे उसके भक्ति भाव से बहुत प्रभावित थे। उसके घर जाने पर उन्हें पता चला कि वह बालिका गांव के पटेल माणको जी शिन्दे की पुत्री है। साधारण परिवार था, फिर भी राजा मल्हार राव ने उस बालिका से अपने पुत्र खाण्डेराव के विवाह का प्रस्ताव करने का निश्चय किया। जब उन्होंने अपना प्रस्ताव उस बालिका के पिता माणको जी के सामने रखा तो वे बहुत चकित हुए। शिन्दे ने संकोचपूर्वक उनके प्रस्ताव का स्वागत किया और फिर शीघ्र ही उनकी वह आठ वर्षीया पुत्री अहिल्याबाई मल्हार राव की पुत्रवधू बनकर इन्दौर के राजमहल में पहुंच गई। उसकी सेवा, निष्ठा, सदाचार और शिव भक्ति से राज परिवार प्रसन्न और आनंदित था। वह रानी बनकर भी नियमपूर्वक शिव अर्चना करती रही। अहिल्याबाई ने एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया। पर शीघ्र ही उसके पति का निधन हो गया। विकट स्थिति में भी वह प्रजा सेवा, राज्य व्यवस्था और शिव भक्ति को समर्पित रही। राजसी ठाठ-बाट त्यागकर श्वेताम्बरा बनी। सादा, सामान्य जीवन अपनाया। त्याग-तप का पथ अपनाया। कालान्तर में उसके पुत्र और पुत्रवधू का भी निधन हो गया। किन्तु अहिल्याबाई ये सब आपदाएं-बिछोह, दुःख और शोक को शांति एवं धैर्यपूर्वक झेलती रही, विचलित नहीं हुई। उसी समय पेशवा राघोबा उसे अकेली समझकर उसका राज्य हड़पने की कोशिश में लग गया। उसने इन्दौर राज्य के दीवान गंगाधर यशवन्त चन्द्रचूड़ को अपने पक्ष में मिलाकर इन्दौर पर आक्रमण कर दिया। पर अहिल्याबाई का धैर्य न डोला। उसने शत्रु को पत्र लिखा- 'श्रीमंत पेशवा! क्या मुझ जैसी स्त्री जब शोकमग्ना हो, तो आपको मेरे राज्य पर आक्रमण करना शोभा देता है? क्या यह धर्म-सम्मत है? क्या युद्ध में तमाम प्रजा की हत्या न होगी? उसका पाप किसके सर होगा? आप तनिक सोचिए कि पुरुष होकर एक स्त्री के राज्य पर आपने चढ़ाई की है, और यदि मेरी विजय हुई तो तब आप किसको मुंह दिखाएंगे? इसके विपरीत यदि आप ही विजयी हुए तो युद्ध में एक स्त्री को पराजित कर क्या आप अपनी वीरता का बखान करने योग्य रहेंगे? फिर भी आप नहीं मानेंगे तो मैं संग्राम करूंगी। मैं पीछे हटने वाली नही, न ही मुझे मृत्यु का भय है और न राज्य लोभ। उत्तर शीघ्र दें।' पेशवा ने भला कब ऐसे पत्र या प्रश्न की अपेक्षा की होगी। पत्र पढ़ा तो सोच में पड़ गया। उसका पौरुष उसे धिक्कार उठा। ऐसी किसी स्त्री से उसका कभी पाला नहीं पड़ा था। उसका अहंकार चूर-चूर हो गया और विवेक जागा। तब उसका मस्तक स्वतः ही उस स्त्री के समक्ष झुक गया। मोर्चाबंदी और घेरा हटाकर वह लौट गया। समझ गया कि रानी अहिल्याबाई के लिए राज्य करना भोग नहीं, योग है। एक तप और सेवा-अधिष्ठान है। ■

सिक्किम

गंगतोक में सरकार्यवाह श्री मोहनराव भागवत ने कहा-

हिंसा और भोगवाद नहीं, संयम से होता है आचरण शुद्ध

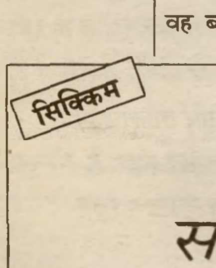

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री मोहनराव भागवत ने गत दिनों गंगतोक (सिक्किम) में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समारोह में उपस्थित स्वयंसेवकों व नागरिकों को सम्बोधित करते हुए श्री भागवत ने कहा कि संघ कार्य को समझना है तो उसको निकट से अनुभव करना जरूरी है। संघ को दूर रहकर समझा कठिन है। संघ के स्वरूप व कार्यों को जानने और समझने के लिए स्वयं इसके क्रिया-कलापों में भाग लेना चाहिए। उन्होंने बताया कि सिक्किम में संघ का कार्य अपेक्षाकृत नया है।

श्री भागवत ने कहा कि संघ मानव मात्र के हित के लिए कार्य करता है। यूं तो इस्लाम का अर्थ है 'शांति का मजहब', परन्तु सबसे ज्यादा रक्तपात इस्लाम का नाम लेकर जिहादी ही कर रहे हैं। ईसाई भी भोगवाद से न उबर पाने के कारण अपनी संख्या बढ़ाने के लिए मतांतरण का सहारा लेते हैं। इसके कारण समाज में अशांति उत्पन्न होती है। उन्होंने कहा कि संयम के अपने गुण के कारण भारत सर्वश्रेष्ठ आचरण वाला देश है। आज भारत में बंगलादेशी घुसपैठ तथा मतांतरण के कारण असंयमित जीवन बढ़ रहा है, यह चिन्ता का विषय है। समारोह के मुख्य अतिथि, सिक्किम विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सी.वी.सुब्बा ने संघ कार्य की प्रशंसा करते रा.स्व.संघ को उसे मानव मात्र का हितकारी संगठन बताया।

■ (हिन्दुस्थान समाचार)

पाञ्चजन्य
पचास वर्ष पहले

●वर्ष ९, अंक २३ ● मार्गशीर्ष शुक्ल ५, सं. २०१२ वि., १९ दिसम्बर, १९५५ ● मूल्य ३ आने

● सम्पादक : गिरीश चन्द्र मिश्र

● प्रकाशक - श्री राधेश्याम कपूर, राष्ट्रधर्म कार्यालय, सदर बाजार, लखनऊ

श्री कूपर वाशिंगटन की ओर

डलेस-कुन्हा वक्तव्य के पीछे श्री एलिन का हाथ ?

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

नई दिल्ली: अमरीकी राजदूत श्री शरमन कूपर की आकस्मिक वाशिंगटन यात्रा का राजधानी के राजनीतिक क्षेत्र में यह अर्थ लगाया जा रहा है कि डलेस-कुन्हा वक्तव्य के कारण भारत और अमरीका के बीच जो तनाव उत्पन्न हो गया है, उसको समाप्त करने के लिए वे सच्चे हृदय से प्रयत्नशील हैं। आशा की जाती है कि श्री कूपर वाशिंगटन में अमरीकी राष्ट्रपति श्री आइजनहावर से मिलेंगे और भारत में डलेस-कुन्हा वक्तव्य तथा श्री डलेस द्वारा उसके सम्बंध में दिए गए स्पष्टीकरण के कारण जो अमरीका-विरोधी वातावरण पैदा हो गया है, उससे उन्हें परिचित कराएंगे। जो लोग चाहते हैं कि अमरीका और भारत के बीच सद्भावनापूर्ण सम्बंध बने रहें उनका मत है कि राष्ट्रपति आइजनहावर और श्री कूपर के बीच प्रगाढ़ मैत्रीपूर्ण सम्बंध हैं तथा राष्ट्रपति के प्रभावी सहायक श्री जान एडमन्स पर भी उनका पर्याप्त प्रभाव है। आशा है कि श्री कूपर श्री डलेस के वक्तव्य का प्रभाव काफी अंशों में समाप्त कराने में सफल हो सकेंगे। इस प्रसंग में इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि श्री कूपर डलेस की असहमति होते हुए भी राष्ट्रपति आइजनहावर को इस बात के लिए राजी कर सकेंगे कि वे श्री कृष्णमेनन से भेंट करें। श्री कूपर के मित्रों को उनकी सद्वृत्ति पर इस कारण और भी विश्वास है, क्योंकि उनके कथनानुसार, उन्होंने डलेस-कुन्हा वक्तव्य पर आश्चर्य और खेद प्रकट करते हुए कहा था 'हे ईश्वर! इसके पश्चात् कोई अमरीकी भारत में मुंह दिखाने योग्य नही रहेगा।' कुछ सूत्रों का यह भी कथन है कि अगर श्री कूपर श्री आइजनहावर को अपने मत से सहमत न कर पाए तो वे भारत वापस नहीं आएंगे।

संयुक्त वक्तव्य

रूस नेता भारत की सीमा के पार जा चुके हैं। नेहरू-बुलगानिन ख्रुश्चेव संयुक्त वक्तव्य हमारे समक्ष है। इस संयुक्त वक्तव्य के प्रकाश में रूसी नेताओं की यात्रा के परिमाणों पर शान्तिपूर्वक विचार किया जा रहा है क्योंकि रूसी नेताओं के स्वागत समारोहों के नगाड़ों की गड़गड़ाहट काफी मात्रा में शान्त हो चुकी है।

भारत एक तटस्थ राष्ट्र है। उसने श्री टीटो का स्वागत किया', चाऊ एन-लाई का स्वागत किया और प्रसन्नता का विषय है संसार के एक महान राष्ट्र रूस के सर्वेसर्वाओं का भी स्वागत किया। किसी भी राष्ट्र को भारत में रूसी नेताओं के प्रति किए गए व्यवहार के सम्बंध में असंतुष्ट होने की आवश्यकता नही थी, क्योंकि भारत द्वारा कम्युनिज्म का आलिंगन नही, विश्व प्रेम का प्रदर्शन किया गया था। किन्तु पश्चिमी शक्तियों को रूसी नेताओं का भारत आना अच्छा नहीं लगा, उन्होंने कटु आलोचना की। प्रजातांत्रिक आलोचना के असभ्य होने के कारण अथवा भारत को कम्युनिस्ट गुट में खींचने के लिए रूसी नेताओं ने उक्त आलोचना के प्रति दूनी कटु प्रतिक्रिया प्रस्तुत की जिसका उत्तर चौगुनी प्रतिक्रिया के साथ श्री डलेस-कुन्हा वक्तव्य के रूप में प्रकट हुआ। जिसके संबंध में गत सप्ताह हम इसी स्तम्भ में विचार व्यक्त कर चुके हैं, किन्तु हम पुनः अपने विचारों को दोहराते हैं। न तो भारत की भूमि पर भारत के किसी मित्र राष्ट्र को रूसी नेताओं द्वारा चुनौती देनी चाहिए थी और न श्री डलेस द्वारा चिढ़कर स्वमित्र राष्ट्र भारत के प्रति इस प्रकार का ऊल-जुलूल वक्तव्य दिया जाना चाहिए था। (सम्पादकीय)

जब जलमग्न पंजाब की संघ के स्वयंसेवकों ने जान पर खेलकर रक्षा की

हाल में ही आई पंजाब, पेप्सू की जल प्रलय अभी तक लोक-स्मृति में ताजी है। भारी जल वृद्धि तथा नदियों की मर्यादा तोड़ स्थिति में हुई हानि की व्याप्ति इतनी बड़ी है कि इसका विस्मरण केवल क्षतिपूर्ति से ही सम्भव है। विपत्ति की भीषणता अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में मौत के खुले मुंह जैसी भयावनी होकर प्रगट हुई थी, जबकि अखण्ड जलवृद्धि ने मानव की सब माया को जलमग्न कर देने की क्रूर मनमानी मचा रखी थी। निःसंदेह मनुष्य समाज का संवेदनशील अंश ही अपने संगठित प्रयत्नों से स्वयं ही सुरक्षा एवं जनजीवन के दुःख-दर्द का निराकरण करता रहा है। इसी नैसर्गिक न्याय से यदि संघ के स्वयंसेवकों ने अपने समाजरूपी शरीर के हाथ-पांव बनकर उसकी सेवा-शुश्रूषा एवं सहायता की तो क्या आश्चर्य है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के सभी बड़े-छोटे स्थानों पर संघ के कार्यशील स्वयंसेवक विद्यमान होने से विपत्ति अवतरण के प्रथम दिन से ही उन्हें अपने कर्तव्य का निर्णय करने और उसी की पूर्ति के लिए जुट जाने में कुछ भी समय नहीं लगा।

...जो लौट के घर न आए!

अब भी न जाने कितने भारतीय सैनिक यातनाएं भोग रहे हैं पाकिस्तानी जेलों में

■ लक्ष्मीकांता चावला

समय-समय पर देश के विभिन्न भागों से, विशेषकर पंजाब से, यह आवाज उठती रहती है कि सन् १९७१ या उसके बाद के भारत-पाकिस्तान युद्धों में हिस्सा लेने वाले अनेक सैनिक लापता या शहीद नहीं, अपितु पाकिस्तान की जेलों में बन्द हैं। कभी-कभी भारत सरकार भी शान्ति प्रयासों-वार्ताओं के मध्य पाकिस्तान सरकार से अवश्य ही अपने सैनिकों एवं आम नागरिकों को वापस मांगती रही है, पर उसका जो उत्तर मिलता रहा, वह देश के सामने है।

पाकिस्तान की जेल से रिहा होने के बाद भारत पहुंचे दो बहादुर सैनिक आरिफ और जगसीर

कुछ सप्ताह पूर्व ही कारगिल युद्ध में भाग लेने वाले दो सैनिक आरिफ और जगसीर वापस आए हैं। लगभग पांच साल की गुमनामी के दौरान उनके परिवारों की जो हालत हो गई थी, उसे अब आधी दुनिया जानती है। 'युद्ध में बहादुरी दिखाने की बजाय उनका बेटा भगोड़ा हो गया', ऐसा सुनने का अपमान जिस परिवार को सहना पड़ता है, उसकी पीड़ा वही जानता है। आरिफ और जगसीर के परिवारों को यह दंश भी झेलना पड़ा। लेकिन शुक्र है, वे वापस आ गए।

और अब सन् १९७१ के युद्ध के बाद शहीद घोषित किए गए सीमा सुरक्षा बल के हवलदार सुरजीत सिंह के भी पाकिस्तान की जेल में बंद होने का समाचार मिला है। ३३ वर्ष कितने लम्बे होते हैं, इसका अहसास उन्हें नहीं होता जो सत्ता का सुखद आनन्द लेते हैं। बहुत लम्बा समय है ३३ वर्ष। जरा उस इनसान के ३३ वर्षों की कल्पना कीजिए जो अपनों से दूर रहकर, जिन्दा होकर भी मृत घोषित होने को मजबूर हुआ। केवल कुछ सौ मील दूर, पर इतना लाचार कि अपनों को यह सन्देश भी नहीं भिजवा सकता कि वह भी सांस ले रहा है। जो अपने देश तथा परिवार की यादों के सहारे जी रहा है, जिसके लिए जीवन अभिशाप, लेकिन शहादत वरदान होती। किन्तु जिनके आदेश से वह भारत मां के दुश्मनों के दांत खट्टे करने गया था, जो देश के शासक हैं, वे भी उसे भूल गए! कैमरों की चमक में केवल 'अमर जवान ज्योति' पर दो फूल चढ़ाकर उनके कर्तव्य की इतिश्री हो गई। पाकिस्तान की कोट लखपत जेल से छूटकर आए एक भारतीय ने यह जानकारी दी कि सन् १९७१ का शहीद घोषित सुरजीत सिंह जिन्दा है। जिन्दा शहीद! मेरा एक प्रश्न उनसे है जिन्होंने सन् १९७१ के युद्ध के बाद पाकिस्तान के लगभग एक लाख सैनिक वापस किए। आखिर तब क्यों नहीं वे पाकिस्तानी जेलों से अपने सैनिकों की रिहाई सुनिश्चित करवा सके?

शायद बहुत से वहीं जिन्दगी की अन्तिम सांस लेकर अपने वतन से और अपनों से बहुत दूर अन्धकार में खो चुके होंगे?

शिमला में भुट्टो का स्वागत करते हुए खून की कमाई कलम-स्याही से मिटा देने वाले उस समय के शासकों के उत्तराधिकारियों से आज देश यह उत्तर मांगता है कि पाकिस्तान की जेलों में बन्द हमारे वीर सैनिकों को विस्मृत करने का दण्ड उन्हें क्यों न दिया जाए?

क्या अब भी सरकार यह प्रयास करेगी कि उन सबको वापस लाया जाए जो भारत की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सीमाओं पर जूझते हुए शत्रु के हाथ पड़ गए? यह ठीक है कि सन् १९७१ के विजय अभियान के बाद इसके नाम पर अपना चुनावी मंच सजाने वाले इस लापरवाही के लिए ज्यादा दोषी हैं। लेकिन उसके बाद भी जिस-जिस नेता और दल ने देश की बागडोर संभाली, वे भी उतने ही दोषी हैं। इसके लिए यह देश अपने नेताओं और शासकों को कभी माफ नहीं कर सकता, इतिहास भी नहीं करेगा, करना भी नहीं चाहिए।

प्रश्न यह भी है कि क्या पाकिस्तान पर कोई अन्तरराष्ट्रीय कानून लागू नहीं होता? क्या कैदियों को अपने परिवारों को पत्र लिखने का भी कोई मानवीय अधिकार नहीं? क्या वहां रेडक्रास जैसी कोई सेवा संस्था नहीं? दुनियाभर के तथाकथित मानवाधिकारवादी, जो भारत में आतंकवादियों के अधिकारों की चिन्ता में भागे चले आते हैं, पाकिस्तानी जेलों का निरीक्षण करने क्यों नहीं जाते? क्या यह सच नहीं कि सुरजीत सिंह जैसे और भी बहुत से भारतीय सैनिक पाकिस्तानी जेलों में बन्दी होंगे? शायद बहुत से वहीं जिन्दगी की अन्तिम सांस लेकर अपने वतन से और अपनों से बहुत दूर अन्धकार में खो चुके होंगे? ■

कही अनकही

दीनानाथ मिश्र

कामरेड और स्वदेशी?

आज महात्मा गांधी होते तो कितना खुश होते। कम्युनिस्टों ने स्वदेशी भावना के लिए जिस तरह का संघर्ष किया है, उसे देखकर गांधीजी तो क्या, हर भारतीय को गौरव होगा। योजना आयोग में विदेशी विशेषज्ञों के सवाल पर मार्क्सवादियों के स्वदेशी प्रेम का विस्फोट हो गया। योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष और मैकेंजी जैसे अन्तरराष्ट्रीय निकायों के विशेषज्ञों को सलाहकार के रूप में आमंत्रित किया। प्रतिक्रिया में कम्युनिस्टों का ज्वालामुखी फूट पड़ा। यह ज्वालामुखी जब फूटता है तो जमकर फूटता है। वैसे भी ज्यादातर कम्युनिस्ट बेचारे 'बयानेरिया' से ग्रस्त रहते हैं। एक हजार बयान कंठस्थ करने के बाद ही उनको कार्ड होल्डर कम्युनिस्ट बनाया जाता है। और आज तो बात ही अलग है।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार कम्युनिस्टों के सहयोग के बिना एक दिन भी नहीं चल सकती, यह बयान ऊपर से लेकर नीचे तक ७१३ कम्युनिस्ट नेताओं ने दे रखा है। यह आंकड़ा ३१ सितम्बर तक का है। अक्तूबर का आंकड़ा इसमें शामिल नहीं है। हम कहेंगे तो मनमोहन सिंह सरकार खड़ी हो जाएगी, हम कहेंगे कि बाएं मुड़ो, तो बाएं मुड़ जाएगी। यह बयान पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य से लेकर गुरुदास दासगुप्ता तक ने कई बार दे डाला। सच्चाई भी यही है। उन्होंने योजना आयोग को कहा कि बाएं मुड़ो, मोंटेक सिंह अहलूवालिया बाएं मुड़ गए और योजना आयोग में कम्युनिस्ट अर्थशास्त्रियों की भरमार हो गई। मोंटेक सिंह बहुत घबराए कि अब क्या

करें? सो उन्होंने विदेशी विशेषज्ञ सलाहकारों से उसे प्रतिसंतुलित किया। ये विदेशी ज्यादातर भारतीय मूल के ही थे। मगर विदेशी संस्थानों के थे। इसकी प्रतिक्रिया में वामपंथी सलाहकारों ने त्यागपत्र दे दिया। प्रधानमंत्री विदेश यात्रा से लौटे तो तरीका निकाला गया। सभी सलाहकार समितियां भंग कर दी गईं। विदेशी सलाहकार तो गए ही, साथ-साथ मार्क्सवादियों की भी छुट्टी हो गई। बमुश्किल तमाम रोजगार हुए मार्क्सवादी फिर बेरोजगार हो गए।

जीवन भर मार्क्स, लेनिन और माओ की भजनमण्डली की भूमिका निभाने वाले कामरेडों को विदेशियों से कितनी नफरत है, यह जानकर कौन गद्गद् नहीं होगा? पहले कहा जाता था कि जब मास्को में बरसात होती थी तो कोलकाता के कामरेड छाता लेकर घर से निकलते थे। इनके नेता जब बीमार पड़ते थे तो मास्को ही इलाज कराने जाते थे। कोई और इलाज इनको रास नहीं आता था। अब तो प्रामाणिक के.जी.बी. दस्तावेजों से साबित हो गया है कि कामरेड और उनकी पार्टी मास्को के टुकड़ों पर ही पलती थी। पहले इससे वह इनकार करते थे। अब तो सारा खेल उजागर हो गया है। विदेशी पैसा इनको हमेशा पचता रहा है। इनको नफरत थी तो अमरीकी पैसों से। सो अब वह भी धीरे-धीरे दूर हो गई। अब तो खुल्लम-खुल्ला विश्व बैंक से पैसों के लिए पश्चिम बंगाल की सरकार हाथ पसारे रहती है। स्वदेशी मूल के विदेशी सलाहकार पर इन्होंने इतनी हाय-तौबा मचाई, मगर विदेशी मूल की सोनिया गांधी को वह प्रधानमंत्री बनाने को राजी थे। योजना आयोग में विदेशी मूल के सलाहकारों के सवाल पर भी इन्होंने 'सोनिया शरणम् गच्छामि' का मार्ग अपनाया। किसी ने ठीक ही कहा है-कामरेडस्य चरित्रम्, पुरुषस्य भाग्यम्, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

वाकई कामरेड होते बड़े दिलचस्प हैं। कई बार उनका मोहभंग भी हो जाता है। एक हैं अमल दत्ता। वह लोकसभा में मार्क्सवादी पार्टी के उपनेता थे। ज्योति बसु के बहुत ही करीबी रिश्तेदार हैं। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है, नाम है- 'लेनिन क्रांति, राज्य और आतंक'। पुस्तक अंग्रेजी में है। यह पुस्तक उन्होंने पिछले साल लिखी है। लेनिन अर्थात् दशकों तक रहे कम्युनिस्ट देवता। पुस्तक में लेखक ने पार्टी छोड़ने के बाद साम्यवाद का पर्दाफाश करते हुए लिखा-लेनिन कितने क्रूर थे। स्टालिन की क्रूरताओं का वर्णन भी पुस्तक में है। दसियों लाख लोगों के नरसंहार के लिए कैसे-कैसे तरीके इस्तेमाल किए गए। ऐसे-ऐसे हत्यारे नेताओं को देवता बनाकर पार्टी ने पेश किया। आज भी कोलकाता में एक लेनिनसरणी है। आज भी लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी अपने को स्टालिनवादी बताने में गर्व करते हैं। वही स्टालिन जिनकी क्रूर कथाएं अब बिलकुल प्रामाणिक तौर पर उजागर हो गई हैं। विदेशी देवताओं की यह पार्टी विदेशी सलाहकारों पर इतना हंगामा करे तो सच जानिए, मजा आ जाता है। एक दिन मेरे पास एक कवि टपक पड़े। उन्होंने एक कविता सुनाई। कामरेड बसु ने कहा-यह रात है, कामरेड येचुरी ने कहा-यह रात है, कामरेड सुरजीत ने कहा- यह रात है, यह सुबह-सुबह की बात है। ■

भोपाल में प्रकृति-२००४ में दिखेगी

प्रकृति के तालमेल से विकास की झलक

भोपाल में आगामी २९ से ३१ अक्तूबर तक देशभर के लगभग १५०० प्रकृति प्रेमियों और विशेषज्ञों का समागम होगा। प्रकृति भारती द्वारा आयोजित यह सम्मेलन और प्रदर्शनी, प्रकृति आधारित सतत् विकास पर केन्द्रित होगी। कार्यक्रम का उद्घाटन उप-राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत करेंगे। म.प्र. के राज्यपाल श्री बलराम जाखड़ भी उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहेंगे। समापन समारोह में म.प्र. के मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह भैया जी जोशी सम्मिलित होंगे। प्रख्यात स्वदेशी चिंतक श्री गोविंदाचार्य, भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. कुंवर जी भाई जाधव, राजस्थान गो सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री भंवर लाल कोठारी, विश्व आयुर्वेद परिषद् के संरक्षक श्री सूर्यनारायण राव, योजना आयोग के पूर्व सदस्य डा. दीनानाथ तिवारी, आरोग्य भारती के संयोजक डा. राघवेन्द्र कुलकर्णी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डा. छत्रपाल सिंह एवं स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री मुरलीधर राव भी सम्मेलन में उपस्थित रहेंगे।

उल्लेखनीय है प्रकृति भारती द्वारा इससे पूर्व दो राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। पंचगव्य एवं गोवंश आधारित अर्थ-व्यवस्था विषय पर प्रथम सम्मेलन और 'प्रकृति-२००३' का आयोजन दिल्ली में हुआ था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह-सेवा प्रमुख श्री ओमप्रकाश के अनुसार हमारी संस्कृति एवं परिवेश में प्रकृति के साथ जीवनयापन की परम्परा आनादिकाल से रही है। यहां प्रकृति के साथ तालमेल रखकर ही विकास का विचार हुआ है। मध्य प्रदेश गोपालन एवं पशुधन बोर्ड के अध्यक्ष और प्रकृति-२००४ के संयोजक श्री मेघराज जैन के अनुसार इस सम्मेलन में गोवंश संरक्षण एवं संवर्द्धन, पंचगव्य, औषधियां तथा अन्य उत्पाद, जैविक खाद एवं कीट नियंत्रण, विपणन, खपत एवं आपूर्ति, मृदा (भूमि) सुधार, जल-प्रबंधन, वन संपदा तथा औषधीय पौधों की खेती, पर्यावरण, पशु चालित कृषि यंत्र एवं ऊर्जा, ग्रामीण तकनीक एवं उद्योग, पशु आहार, जैविक सब्जी व फल उत्पादन समेत १२ विषयों पर विस्तार से चर्चा होगी।

■अनिल सौमित्र

गहरे पानी पैठ

वामपंथी बैखलाए हैं, पर अभी चुप रहेंगे

अपने सहयोगी कामरेड केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह द्वारा किए एक अक्षम्य 'अपराध' के कारण वाम शिक्षाविद् बौखलाए हुए हैं। मंत्री जी ने खुद को उज्जैन के वैदिक अध्ययन संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीनस्थ वैदिक अध्ययन की एक प्रमुख संस्था, का अध्यक्ष मनोनीत करवा लिया है। मंत्रालय ने संस्थान की अधिशासी समिति को भी पुनर्गठित किया है। हालांकि इस कार्यवाही का प्रत्यक्ष कारण तो यह सुनिश्चित करना है कि 'पुरानी सरकार द्वारा नामित व्यक्तियों को हटाकर वर्तमान सरकार के लोग शामिल हों,' जैसा कि यह पहले राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीनस्थ अन्य संस्थानों में किया गया था। लेकिन ऐसा करके अर्जुन सिंह ने मानो बैल को लाल झंडा दिखा दिया है। वामपंथी पहले भी वैदिक अध्ययन के अंतर्गत खगोलशास्त्र और अन्य कई विषयों के विरोधी रहे हैं। अतः अर्जुन सिंह के वर्तमान फैसले को वे 'धोखा' मानते हैं। बहरहाल, सार्वजनिक रूप से किसी भी वामपंथी ने इस पर भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है, क्योंकि उनमें से ज्यादातर आने वाले दिनों में इस मंत्रालय की किसी न किसी संस्था में नामांकन अथवा नियुक्ति की उम्मीद लगाए बैठे हैं। यही कारण है कि वे फिलहाल मंत्री जी की भवें तिरछी करना नहीं चाहते। और तब तक आपस की बाचीत में ही अपना गुस्सा निकालते दिखते हैं। मार्क्सवादी विचारधारा का एक और नमूना!

निर्णय कहां हुआ?

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मंत्री जयपाल रेड्डी भले ही डा. मनमोहन सिंह सरकार में वरिष्ठ मंत्रियों में से एक हों, पर खबर है कि उनके ही मंत्रालय के कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों से उनको बाहर रखा जाता है। इसका ताजा उदाहरण है प्रकाश झा द्वारा जयप्रकाश नारायण पर बनाई गयी फिल्म। इस फिल्म को जयप्रकाश नारायण (जे.पी.) के जन्मदिवस ११ अक्तूबर को दूरदर्शन पर दिखाया जाना था। लेकिन इसमें 'आपातकाल' के समय के कुछ दृश्यों का चित्रण था, इस वजह से अंतिम समय में कांग्रेस के प्रति निष्ठावान कुछ उत्साही बाबुओं ने इसका प्रसारण रुकवा दिया। उल्लेखनीय है कि इस सरकार में राजद अध्यक्ष और रेल मंत्री लालू यादव जैसे कई लोग हैं जिनका राजनीति में प्रवेश ही जे.पी. के कारण हुआ और जो उनकी विरासत पर अपना अधिकार जमाते हैं। लेकिन इनमें से एक ने भी इस घटनाक्रम पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। खुद जयपाल रेड्डी को भी एक दिन बाद अखबारों में यह खबर पढ़कर इस निर्णय की जानकारी हुई थी। परन्तु जब सूचना व प्रसारण सचिव नवीन चावला १०, जनपथ के करीबी हों, तब रेड्डी कर भी क्या सकते हैं। इसलिए सनद की खातिर उन्होंने एक बैठक बुलाकर चावला के साथ इस मामले पर विचार-विमर्श करके इतिश्री कर ली।

एक सिक्के के दो पहलू

केन्द्र सरकार को समर्थन देने वाले कम्युनिस्ट अब खुद ही असम में कांग्रेस और उल्फा के बीच सांठ-गांठ की कलई खोलने लगे हैं। पिछले दिनों राज्य माकपा सचिव हेमेन दास ने आरोप लगाया कि राज्य कांग्रेस ने उल्फा के साथ सूत्र जोड़े हुए हैं। दास का कहना था कि कांग्रेस ने १९९८ के लोकसभा और २००१ के राज्य विधानसभा चुनाव में उल्फा की मदद ली थी।

राज्य भाकपा सचिव प्रमोद गोगोई ने अपने कामरेड बंधु के बयानों का समर्थन किया। दरअसल असम के इन कम्युनिस्ट नेताओं के ये बयान तब आए जब पुलिस ने राज्य के जनजातीय मामलों के मंत्री भरत नरह के निजी सचिव को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था। उस पर उल्फा के साथ मेल-मिलाप रखने का गंभीर आरोप लगा है। राज्य के अन्य वरिष्ठ मंत्री भूमिधर बर्मन का नाम भी उल्फा के साथ नजदीकियों वाले नेता के रूप में चर्चा में उभरा है। हाल ही में उल्फा के नेता डी. गोहाई ने पुलिस हिरासत में स्वीकारा था कि उक्त मंत्री के उल्फा से संबंध रहे हैं। पुलिस ने एक कांग्रेसी कार्यकर्ता एम. हांडिक को भी पकड़ा था जिसके पास से मिले कागजात से मंत्री और उल्फा के बीच सूत्र होने का इशारा मिलता था। गोहाई और हांडिक १५ अगस्त को धेमाजी में हुए बम विस्फोट के सिलसिले में पकड़े गए थे। उस विस्फोट में १० बच्चों सहित १३ नागरिकों की मृत्यु हो गई थी। मंत्री नरह का चुनाव क्षेत्र धेमाजी के बिल्कुल निकट है। नरह ने यह तो स्वीकार किया कि हांडिक उनके दफ्तर आता रहा है, पर उन्होंने उल्फा से अपने जुड़े होने की बात से इनकार किया।

शराब की दुकानों को देंगे 'लाइसेंस'

.... और खुद को कहेंगे 'गरीबों के मसीहा'!

■ डा. सत्य प्रकाश लाल

लगभग तीन दशक से वामपंथी सरकार के अधीन पश्चिम बंगाल की आर्थिक स्थिति इतनी चरमरा गई है कि इससे बाहर निकलने का उसे कोई सही रास्ता नहीं दिख रहा है। इसलिए सरकार जैसे-तैसे बाजार से पैसा उगाहना चाहती है। इसका ज्वलन्त उदाहरण है शराब की १००० दुकानों को 'लाइसेंस' देने का निर्णय। पता चला है कि इसके क्रियान्वयन के लिए सम्बंधित अधिकारियों को आदेश भी दे दिए गए हैं। उम्मीद है कि आगामी दिसम्बर माह तक दुकानदारों को 'लाइसेंस' भी मिल जाएंगे। प.बंगाल के लोग आश्चर्यचकित होकर एक-दूसरे से सवाल कर रहे हैं कि अपने को 'गरीबों की हिमायती' कहने वाली वामपंथी सरकार गरीबों को ही मारने पर क्यों तुली है। उल्लेखनीय है कि प. बंगाल एक ऐसा राज्य है, जहां शराब पीकर मरने वालों की संख्या अन्य राज्यों की अपेक्षा ज्यादा ही रही है। पिछले दिनों विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर एक ऐसी ही घटना दमदम क्षेत्र में घटी थी। वहां जहरीली शराब पीने से १५ लोगों की मौत हो गई थी। लोगों का कहना है कि यह शराब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दुकान से ही खरीदी गई थी।

प. बंगाल एक ऐसा राज्य है, जहां शराब पीकर मरने वालों की संख्या अन्य राज्यों की अपेक्षा ज्यादा ही रही है। पिछले दिनों विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर दमदम में जहरीली शराब पीने से १५ लोगों की मौत हो गई थी।

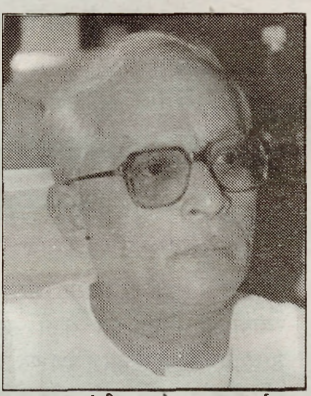

मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य

सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस समय प. बंगाल में ४१०० सरकारी शराब की दुकानें हैं और दिसम्बर तक यह संख्या ५१०० तक हो जाएगी। इन ४१०० दुकानों के अतिरिक्त देशी शराब की लगभग १०,००० गैर मान्यता प्राप्त दुकानें हैं। स्थानीय भाषा में इन्हें 'चुल्लू का ठेक' कहा जाता है। इन दुकानों में देशी शराब के साथ-साथ रसायनयुक्त कच्ची शराब भी मिलती है। चूंकि यह शराब देशी शराब से सस्ती होती है इसलिए निम्न आय वर्ग के श्रमिक इसे ही पीते हैं और फिर दमदम जैसी घटनाएं पूरे राज्य में होती रहती हैं। लोगों का कहना है कि ये दुकानें भी पुलिस प्रशासन को 'चढ़ावा' देकर मोटी कमाई कर रहे हैं। जनता को मात्र दिखाने के लिए कभी-कभी छापा मारकर कुछ लोगों को जेल भेजा जाता है, पर उन्हें जमानत भी एकाध दिन में ही मिल जाती है।

● पहले ४१ हजार दुकानें थीं, अब और १००० दुकानें बेचेंगी सरकारी 'लाइसेंस' से शराब

इस समय शराब की दुकानों से राज्य सरकार को ५०० करोड़ रुपए प्रतिवर्ष की आय होती है। और १००० दुकानों को लाइसेंस देने से यह आय ७०० करोड़ रुपए तक पहुंच जाएगी। सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि 'लाइसेंस' घनी आबादी वाले क्षेत्रों में स्थित दुकानों को दिए जाएंगे। शहरी क्षेत्रों में १२,००० और ग्रामीण क्षेत्रों में १८,००० से कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बनी दुकानों को लाइसेंस नहीं दिए जाएंगे। लाइसेंस लेने के लिए शहरी क्षेत्र के दुकानदारों को १.५ लाख और ग्रामीण क्षेत्र के दुकानदारों को ७५ हजार रुपए देने पड़ेंगे। यानी शुरुआत में ही राज्य सरकार को २०० करोड़ रुपए का लाभ होगा। राज्य को आर्थिक तंगी से उबारने के लिए यह राशि मददगार तो अवश्य होगी, किन्तु दमदम जैसी घटनाओं में और कितने गरीब मरेंगे, उसकी चिन्ता इस सरकार को ही नहीं है।■

वनवासी कल्याण आश्रम का स्वर्ण जयंती पूर्णाहुति समापन समारोह

वनवासियों ने एक स्वर से कहा-

हम धर्म रक्षक, हम संस्कृति रक्षक

गत १० अक्तूबर को नई दिल्ली में वनवासी कल्याण आश्रम के स्वर्ण जयंती पूर्णाहुति समारोह का समापन हुआ। ६ अक्तूबर को दिल्ली स्थित सेवाधाम में पांच दिवसीय पूर्णाहुति समारोह आरम्भ हुआ था। समापन कार्यक्रम में सार्वजनिक समारोह से पहले सजे-धजे वनवासियों ने शोभायात्रा निकाली। रामवाटिका से शुरू होकर अजमल खां रोड, सरस्वती मार्ग, गुरुद्वारा रोड, जोशी पथ और खजूर रोड होते हुए यह यात्रा वापस रामवाटिका पहुंची। इसमें २७ राज्यों की ३६१ जनजातियों के लगभग २५०० स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सार्वजनिक सभा को ज्योतिर्मठ पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी और रा.स्व.संघ के सरसंघचालक श्री कुप्.सी. सुदर्शन ने सम्बोधित किया। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री भुवन मोहन की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा के मुख्य अतिथि वनवासी कवि श्री बाबूलाल मुर्मू।

वनवासियों एवं नगरवासियों को एक साथ देखकर लगता है जैसे डा. हेडगेवार और श्री गुरुजी का स्वप्न साकार हुआ है।
-स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी

अपने आशीर्वचन में पूज्य शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती ने कहा, आज यहां वनवासियों एवं नगरवासियों को एक साथ देखकर लगता है जैसे डा. हेडगेवार और श्री गुरुजी का स्वप्न साकार हुआ है। निरन्तर संघ विचार परिवार के विभिन्न संगठन केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में हिन्दुत्व के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। अपने उद्बोधन में श्री कुप्.सी. सुदर्शन ने कहा, जिस वनवासी समाज को असभ्य, पिछड़ा और अनपढ़ समझा जाता है वह वास्तव में सम्पूर्ण भारतवर्ष के विकास की रीढ़ है। उनके विकास के बिना भारत का विकास नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ईसाई मिशनरियों के लालच एवं दबाव के बाद भी वनवासी समाज अपनी प्राचीन संस्कृति से जुड़ा हुआ है। श्री सुदर्शन ने सेकुलर समाचार पत्रों-विशेषकर अंग्रेजी समाचारपत्रों की आलोचना करते हुए कहा, अंग्रेजी के बड़े-बड़े अखबारों को न तो वनवासियों की चिन्ता है और न ही उनकी समस्याओं की।

वनवासियों के विकास के बिना भारत का विकास नहीं। -कुप्.सी.सुदर्शन

समारोह को सम्बोधित करते हुए वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम उरांव ने कहा अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला वनवासी समाज आज कई तरह की सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। इसके बावजूद ये वनवासी अपनी संस्कृति, अपने धर्म को सुरक्षित रखे हुए हैं।■

सम्पादक : तरुण विजय-दूरभाष: सम्पादकीय-२३५१४२४४ फैक्स- (०११)२३५५८६१३, अणु डाक-panch@nde.vsnl.net.in मुद्रक एवं प्रकाशक रघुबीर सिंह बिष्ट द्वारा भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड, संस्कृति भवन, देशबंधु गुप्ता मार्ग, झण्डेवाला, नई दिल्ली-५५ के लिए प्रकाशित तथा जे. कालिको प्रिन्टर्स, ए-१६, सेक्टर ७, नोएडा (उ.प्र.) से मुद्रित। व्यवस्था-२३५२९५९५, २३६१४८७६ प्रसार-२३५५८६१२ विज्ञापन-२३५१७११५

मंथन

देवेन्द्र स्वरूप

लोकतंत्र पर कम्युनिस्ट अधिनायकवाद की काली छाया

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के ८७ वर्षीय महामंत्री हरकिशन सिंह सुरजीत ने पार्टी के मुखपत्र 'पीपुल्स डेमोक्रेसी' के १० अक्तूबर के अंक में पहले पन्ने पर एक लम्बा लेख लिखकर केन्द्र की अल्पमत संप्रग सरकार पर आरोप लगाया कि चार महीने बीत जाने पर भी प्रशासन एवं स्वशासी शैक्षिक संस्थाओं के शीर्ष पदों पर पिछली सरकार द्वारा नियुक्त किये गए लोग बैठे हुए हैं, उन्हें अब तक नहीं हटाया गया। सुरजीत के नाम से प्रकाशित इस लेख में अनेक नाम दिए गए हैं, और उन सबको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति निष्ठावान घोषित कर दिया गया है। यह कम्युनिस्टों का मूल स्वभाव है। घृणा और द्वेष पर आधारित उनकी विचारधारा को जिंदा रहने के लिए हर समय एक शत्रु की आवश्यकता पड़ती है। और ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को जो उनका अपना नहीं होता, वे उसे शत्रु शिविर में मान लेते हैं। शत्रु बदलता रहा है, पर प्रशासन और बौद्धिक जगत को विभाजित दृष्टि से देखने की उनकी यह आदत बनी हुई है। कभी ब्रिटिश साम्राज्यवाद उनका शत्रु क्रमांक एक था तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमरीका बन गया। भारत की राजनीति में उन्होंने भाजपा के राजनीतिक उत्कर्ष से चिन्तित होकर संघ-परिवार को अपना शत्रु क्रमांक एक मान लिया है और अब उनको प्रत्येक झाड़ी में संघ का भूत दिखायी दे रहा है। सुरजीत जैसे वयोवृद्ध और महत्वपूर्ण नेता ने इस लेख को अपना नाम देते समय यह जानने की भी आवश्यकता नहीं समझी कि जिन पर वे संघ का ठप्पा लगा रहे हैं, कभी उनका संघ से संबंध रहा भी है या नहीं। डा. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी को कभी कांग्रेस सरकार ने ब्रिटेन में उच्चायुक्त बनाकर भेजा था। अनुपम खेर देश के जाने-माने रंगकर्मी हैं, उनका कभी राजनीति से कोई संबंध नहीं रहा। चित्रा मुद्गल स्वतंत्र लेखिका हैं। एम.बी.कामथ इस देश के वयोवृद्ध पत्रकार हैं, जो वर्षों तक टाइम्स आफ इंडिया के अमरीका और भारत में प्रतिनिधि रहे हैं। इन सब लोगों का यदि कोई अपराध कहा जा सकता है तो यह है कि ये राष्ट्रभक्त हैं, नैतिक मूल्यों में आस्था रखते हैं, अपने-अपने क्षेत्र में निर्भीकता से अपनी दृष्टि का प्रतिपादन करते हैं। इनके इन्हीं गुणों के आधार पर पिछली सरकार ने इनकी प्रतिभा का आदर करते हुए उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे थे। क्या देश की महान नृत्यांगना केवल इसीलिए संघ की हो गई क्योंकि राजग सरकार ने उन्हें नियुक्त किया? यदि इस संकुचित दृष्टि को अपनाया गया तो प्रत्येक प्रतिभाशाली स्वतंत्र नेता को किसी भी बड़े दायित्व पर नियुक्ति को स्वीकार करने के पहले सोचना पड़ेगा कि यदि उसने यह नियुक्ति स्वीकार की तो अगली सरकार उसे लांछित, अपमानित कर सकती है।

चापलूसी एवं लांछन

दलीय लोकतंत्र में सत्ता-परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। किन्तु क्या सत्ता-परिवर्तन का यह अर्थ होता है कि पिछली सरकार की सब नियुक्तियों को बर्खास्त कर अपने लोगों को नियुक्त किया जाए? और, अपने-पराये को जानने की कसौटी क्या है? महत्वाकांक्षी लोग ऊंचे पदों को पाने के लिए एक ओर सत्ताधीशों की चापलूसी का प्रदर्शन करते हैं, तो दूसरी ओर पहले से पदासीन तटस्थ एवं कर्त्तव्य-परायण व्यक्तियों पर तरह-तरह के ठप्पे व लांछन लगाते हैं। चापलूसी की इस प्रवृत्ति का ताजा उदाहरण है कि पटना के जिलाधिकारी डा. गौतम गोस्वामी और पुलिस अधीक्षक हसनैन खान ने एक संयुक्त विज्ञप्ति निकाल कर दुर्गा पूजा के पांडालों में व्यंग्यों के प्रदर्शन पर पूरी तरह रोक लगा दी। यह निर्णय लेने की इस वर्ष क्या मजबूरी आ पड़ी? यह सर्वविदित है कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान केन्द्रीय रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव अपने विचित्र हाव-भाव और कार्यशैली के कारण व्यंग्यकारों का प्रिय विषय बन गये हैं। घरों, चौराहों और पार्कों में जहां भी चार लोग इकट्ठा होते हैं, लालू जी का नाम स्मरण करके अपना मनोरंजन करते हैं। लालू जी को अब यह बहुत अखरने लगा है। अभी कुछ दिन पूर्व पटना के संजय गांधी वानस्पतिक पार्क में कुछ लोगों को अपने नाम पर अट्टहास करते सुनकर वे बहुत नाराज हो गये और उन्होंने सार्वजनिक पार्कों में हंसी पर रोक लगाने का हुक्म जारी कर दिया। जिसका 'प्रातःकालीन भ्रमण क्लब' ने कड़ा विरोध किया। लालू जी को लोगों के मनोरंजन पर तो आपत्ति है पर अपनी चापलूसी से प्रसन्नता होती है। उन्हें 'लालू चालीसा' या बिहार की पाठ्य-पुस्तकों में अपना स्तुतिगान स्वीकार है, किन्तु अपनी आलोचना नहीं। उनकी इस मानसिकता का लाभ उठाने के लिए सरकारी अधिकारियों में चापलूसी की होड़ लग गयी है। कुछ समय पूर्व एक उत्साही पुलिस अधिकारी ने पवन नामक व्यंग्यकार के एक व्यंग्य को हटवा दिया क्योंकि उसमें लालू यादव को दिखाया गया था। पटना के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक की यह संयुक्त विज्ञप्ति भी प्रशासन में व्याप्त उसी चापलूस मनोवृत्ति का परिचायक है।

यदि राजनीतिक नेता और दल अपने पुराने और नये कुकृत्यों को छिपाने के लिए सत्ता का दुरुपयोग करने लगें तो फिर सत्य इतिहास लेखन और निर्भीक अभिव्यक्ति की कोई जगह नहीं रह जाएगी। तब हमारा समूचा राष्ट्र जीवन केवल झूठ पर खड़ा रहेगा। सत्ता के दुरुपयोग का ही उदाहरण है कि पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिन्दर सिंह ने अपने बेटे रजिन्दर सिंह के विरुद्ध हवाला का आरोप हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित होने पर एक ओर तो अपनी निष्पक्ष न्यायप्रियता का दिखावा करने के लिए एक जांच आयोग बैठा दिया, किन्तु दूसरी ओर इस आयोग से हिन्दुस्तान टाइम्स को नोटिस भिजवा दिया कि आयोग की जांच पूरी होने तक वे इस कांड से सम्बन्धित कोई समाचार प्रकाशित न करें। सर्वोच्च न्यायालय के तीन वरिष्ठ अधिवक्ताओं- अरुण जेतली, राजीव धवन और प्रशांत भूषण ने इस आदेश को पूरी तरह संविधान की धारा १९ (१ ए) का उल्लंघन बताया है और मुख्यमंत्री के बेटे के अपराध पर पर्दा डालने की कोशिश कहा है।

सत्ता का दुरुपयोग

यह व्यक्ति के लिए सत्ता के दुरुपयोग का उदाहरण है तो बिहार में व्याप्त भ्रष्टाचार और माफिया संस्कृति का पर्दाफाश करने वाली प्रसिद्ध फिल्म 'गंगाजल' के निर्माता प्रकाश झा की लोकनायक जयप्रकाश के बारे में फिल्म के उन अंशों को हटाने का आदेश प्रसार भारती ने भेजा जो आपातकाल का काला अध्याय प्रस्तुत करते हैं। प्रसार भारती ने अपने पत्र में लिखा कि 'लोकनायक' नामक इस फिल्म को दूरदर्शन पर तभी दिखाया जा सकेगा जब उसमें से कुछ विवादों का कुछ संवादों को निकाल दिया जाय। ये संवाद हैं, तानाशाही का शिकार हुआ.... इंदिरा हटाओ.... संजय गांधी की साजिश थी.... जेल में क्यों मारा, बाहर मारे.... तानाशाही वाला राज नहीं चलेगा.... इंदिराजी ने जेपी के साथ ज्यादती की' आदि आदि। प्रसार भारती ने यह भी कहा कि ऐसे संवादों को हटाने के साथ-साथ आप अपनी फिल्म में आपातकाल लागू करने की जरुरत बताने वाले कुछ तर्क भी जोड़ दें। प्रकाश झा ने यह फिल्म संस्कृति मंत्रालय के अनुरोध पर तैयार की थी। क्या लोकनायक जयप्रकाश का कोई भी जीवन-वृत्त आपातकाल के अंधकार युग का वर्णन किए बिना सच्चा इतिहास हो सकता है? लेकिन वर्तमान सरकार झूठे इतिहास के माध्यम से लोकनायक की स्मृति को भुनाना चाहती है। प्रकाश झा ने ठीक ही कहा कि वे सरकार को खुश करने के लिए इतिहास को दबा या झुठला नहीं सकते। किन्तु इस घटना से स्पष्ट है कि वामपंथियों के दबाव में जी रही वर्तमान केन्द्र सरकार कैसा इतिहास लेखन चाहती है। पुराने कम्युनिस्ट देशों की यह परंपरा रही है कि वहां प्रत्येक नये अधिनायक के सत्तारूढ़ होने पर पाठ्य-पुस्तकों का पुनर्लेखन हुआ है, उसका अपना महिमामंडन करने के लिए। सोवियत संघ के विघटन के बाद अब वहां पुनः इतिहास का पुनर्लेखन हुआ है। जिस लेनिन को भगवान की गद्दी पर बैठा दिया गया था, अब उसके काले कारनामों का इतिहास सप्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है। पर भारतीय कम्युनिस्ट अभी भी लेनिन और स्तालिन की पूजा में लगे हैं। कुछ वर्ष पूर्व रूस में निर्मित लेनिन के अंतिम दिनों पर प्रकाश डालने वाली फिल्म 'तौरस' के कोलकाता में प्रदर्शन पर कम्युनिस्ट सरकार ने रोक लगा दी थी, क्योंकि उसमें लेनिन की अच्छी छवि नहीं उभरती थी। अभी हाल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व सांसद और कोलकाता उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता अमल दत्त ने कम्युनिस्ट पार्टी से मोह भंग होने के पश्चात् लेनिन के वास्तविक चरित्र को बंगाल में प्रकाशित करने का साहस दिखाया है।

कम्युनिस्टों के मित्र

कम्युनिस्ट पार्टियां केन्द्र में सत्ता परिवर्तन का अपने पुराने पापों पर पर्दा डालने और प्रशासन तथा बौद्धिक संस्थाओं व मीडिया पर अपना एकाधिकार स्थापित करने के लिए दुरुपयोग कर रही हैं। हमने तभी लिखा था कि 'तहलका' वीडियो कम्युनिस्टों व कांग्रेस में घुसे कम्युनिस्ट सहयोगियों का एक मिला-जुला षड्यंत्र था। उस वीडियो के निर्माण में जिस सैमुअल मैथ्यु की मुख्य भूमिका थी, वह तहलका का प्रदर्शन होते ही भागकर केरल की कम्युनिस्ट सरकार की सुरक्षा में छिप गया था। केन्द्रीय सरकार में बैठा उसका मित्र तब नौकरी से हटा दिया गया था। इन सब बातों की जांच फूकन आयोग कर रहा था। वह एक महीने में अपनी जांच रपट देने वाले थे। किन्तु अपने पापों का भंडाफोड़ हो जाने के भय से कम्युनिस्टों के दबाव में फूकन आयोग को बिना किसी पूर्व चेतावनी के भंग कर दिया गया। तहलका की नये सिरे से जांच सी.बी.आई. को सौंप दी गयी और उसे निर्देश दिया गया कि तहलका वीडियो के निर्माण के पीछे की शक्तियों को, उनके उद्देश्यों की जांच न की जाए।

अधिनायकवादी चरित्र

केन्द्र सरकार में मणिशंकर अय्यर, अर्जुन सिंह व जयपाल रेड्डी या तो प्रच्छन्न कम्युनिस्ट हैं या कम्युनिस्टों के मित्र। वे कम्युनिस्टों के इशारों पर नाच रहे हैं। सुरजीत ने अपने लेख में केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के मानद अध्यक्ष अनुपम खेर को रा.स्व.संघ का आदमी बताकर हटाने की मांग की। सरकार ने सुरजीत की बात मानकर खेर को उनके तीन वर्ष के कार्यकाल पूरा होने से पहले ही हटाकर उसी उस पद पर शर्मिला टैगोर की नियुक्ति की घोषणा कर दी। अनुपम खेर को उनके हटाने का कोई कारण नहीं बताया गया। उन्होंने इस आदेश को चुनौती देने का निर्णय सूचित किया तो शर्मिला टैगोर से पदभार संभालने का पत्र लिखवा लिया गया। इसे अधिनायकवाद नहीं तो क्या कहें? हमारी आपत्ति शर्मिला टैगोर के बारे में नहीं, सरकार की अधिनायकवादी कार्यशैली पर है। अनुपम खेर ने दिल्ली में एक पत्रकार वार्ता में इस अधिनायकवाद को चुनौती देने का साहस दिखाया है। उन्होंने हरकिशन सिंह सुरजीत को कानूनी नोटिस भी दिया है कि या तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ उनका रिश्ता प्रमाणित करें अथवा सार्वजनिक क्षमा मांगें।

> ***कम्युनिस्ट जानते हैं कि वे सरकार की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करने में असमर्थ हैं। इसलिए कम्युनिस्ट समय रहते मीडिया में अपनी पकड़ का लाभ उठाकर एक ओर तो आर्थिक प्रश्नों पर शोर मचाकर सस्ती लोकप्रियता अर्जित करना चाहते हैं। दूसरी ओर कांग्रेस सरकार पर दबाव बनाकर प्रशासन, शिक्षा और बौद्धिक संस्थानों पर कब्जा जमाना चाहते हैं।***

पर कम्युनिस्ट, सत्ता पर अपनी पकड़ जमाने के लिए उतावले हैं। वे इसे अपने जीवन का अंतिम अवसर मान रहे हैं। वे जानते हैं कि वे सरकार की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करने में असमर्थ हैं। ज्योति बसु ने स्पष्ट कहा है कि भाजपा को सत्ता में आने से रोकना उनका एकमात्र लक्ष्य है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे पूरी तरह कांग्रेस सरकार पर निर्भर हैं। वे मानते हैं कि जहां तक आर्थिक नीतियों और राष्ट्रीय सुरक्षा व अखंडता का संबंध है, कांग्रेस पार्टी कम्युनिस्टों की अपेक्षा भाजपा के अधिक निकट है। भाजपा की घोषणा है कि वह राष्ट्रहित में सरकार को मुद्दों के आधार पर सहयोग देगी, वह रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाएगी। इसलिए कम्युनिस्ट समय रहते मीडिया में अपनी पकड़ का लाभ उठाकर एक ओर तो आर्थिक प्रश्नों पर शोर मचाकर सस्ती लोकप्रियता अर्जित करना चाहते हैं। दूसरी ओर कांग्रेस सरकार पर दबाव बनाकर प्रशासन, शिक्षा और बौद्धिक संस्थानों पर कब्जा जमाना चाहते हैं। अब वे सरकार में सम्मिलित होने का मन बना रहे हैं। यह देश को अधिनायकवाद के मुंह में झोंकना होगा। यदि सत्ता के बाहर रहते हुए भी वे लोकतंत्र पर अधिनायकवाद थोपने की कोशिश कर सकते हैं तो उनके एकदलीय शासन में क्या होती होगी, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। उनकी कोशिश है कि भाजपा और कांग्रेस आपस में लड़ते रहें ताकि वे इस लड़ाई का लाभ उठा सकें। लोकतंत्र को जीवित रखना है तो सरकार और विपक्ष दोनों को बदले की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में सोचना होगा। ■ (१५-१०-२००४)

दिल्ली पोस्टल क्रमांक डी.एल. ११३१४/२००३-५ आर.एन.आई. पंजीकृत संख्या ३२५४३/७७ लाइसेंस क्रमांक यू.(सी.)-८७/२००३-५
सी.पी.एस.ओ., नई दिल्ली-११०००२ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति दिनांक १६-१८/१०/२००४

वनवासी कल्याण आश्रम स्वर्ण जयंती पूर्णाहुति समारोह सम्पन्न

छाया: पाञ्चजन्य/हेमराज गुप्ता

सार्वजनिक समारोह में (बाएं से) श्री प्रसन्न सप्रे, डा. मंगल सिंह, श्री जगदेव राम उरांव, श्री भुवन मोहन, जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद जी, श्री कुप्.सी. सुदर्शन, श्री बाबूलाल मुर्मू, श्री सत्यनारायण बंसल, श्री रूप सिंह भील एवं श्री शिव कुमार कौल

➪ बांसुरी की मधुर तान पर झूम उठी दिल्ली

➪ हमारे सीने में छिपी है आग- उत्तर पूर्व के वनवासी बालक

अरुणाचल विकास परिषद् का दल ➪

विवरण पृष्ठ १८ पर

➪ शोभायात्रा में ढोल की थाप पर झूमते वनवासी

नागालैंड के वनवासी बंधु अपनी पारंपरिक वेश-भूषा में ➪

बांहों में बांहें डाले झूमते-इठलाते मध्य भारत के वनवासी बंधु ➪

समर्थ हैं, वे

स्व. पंडित दीनदयाल उपाध्याय

उनकी भी क्षमताओं का सम्मान
पं. दीनदयाल उपाध्याय समर्थ योजना
मध्यप्रदेश

जिन्हें समाज कहता है निःशक्त, उनमें भी वही क्षमता, वही इच्छा, होती है जो एक आम व्यक्ति में। **स्व. पंडित दीनदयाल उपाध्याय** के जन्म दिन 25 सितंबर से प्रदेश में एक विशेष कार्ययोजना, पं. दीनदयाल समर्थ योजना लागू होगी।
विशेष क्षमता वाले इस वर्ग के विकास के लिए और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के काम, यह योजना अंजाम देगी।
मानव संसाधन विकास और पुनर्वास के लिए,
विशेष क्षमता वाले वर्ग के प्रशिक्षण, चिकित्सा सुविधाएं, पुनर्वास सुविधाएँ, स्वरोजगार, आरक्षण, हेल्पलाइन जैसे कार्यों को मजबूती दी जाएगी।
समाज को इस विशेष वर्ग के अधिकारों के प्रति जागृत किया जाएगा।
सामाजिक सुरक्षा, खास बजट, विशेष विद्यालय,
अनुदान, सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार के काम इस योजना में होंगे।

वे भी हमारे समाज का उतना ही हिस्सा हैं,
जितने हम।

जनसंपर्क/माध्यम/ 2004